एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ।।ओ३म्।। डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३
प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १३ ● अंक : १ ● २५ नवम्बर २०२३, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ४०

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

भारत सरकार द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्मान में जारी किये गये डाक टिकट की छायाप्रति

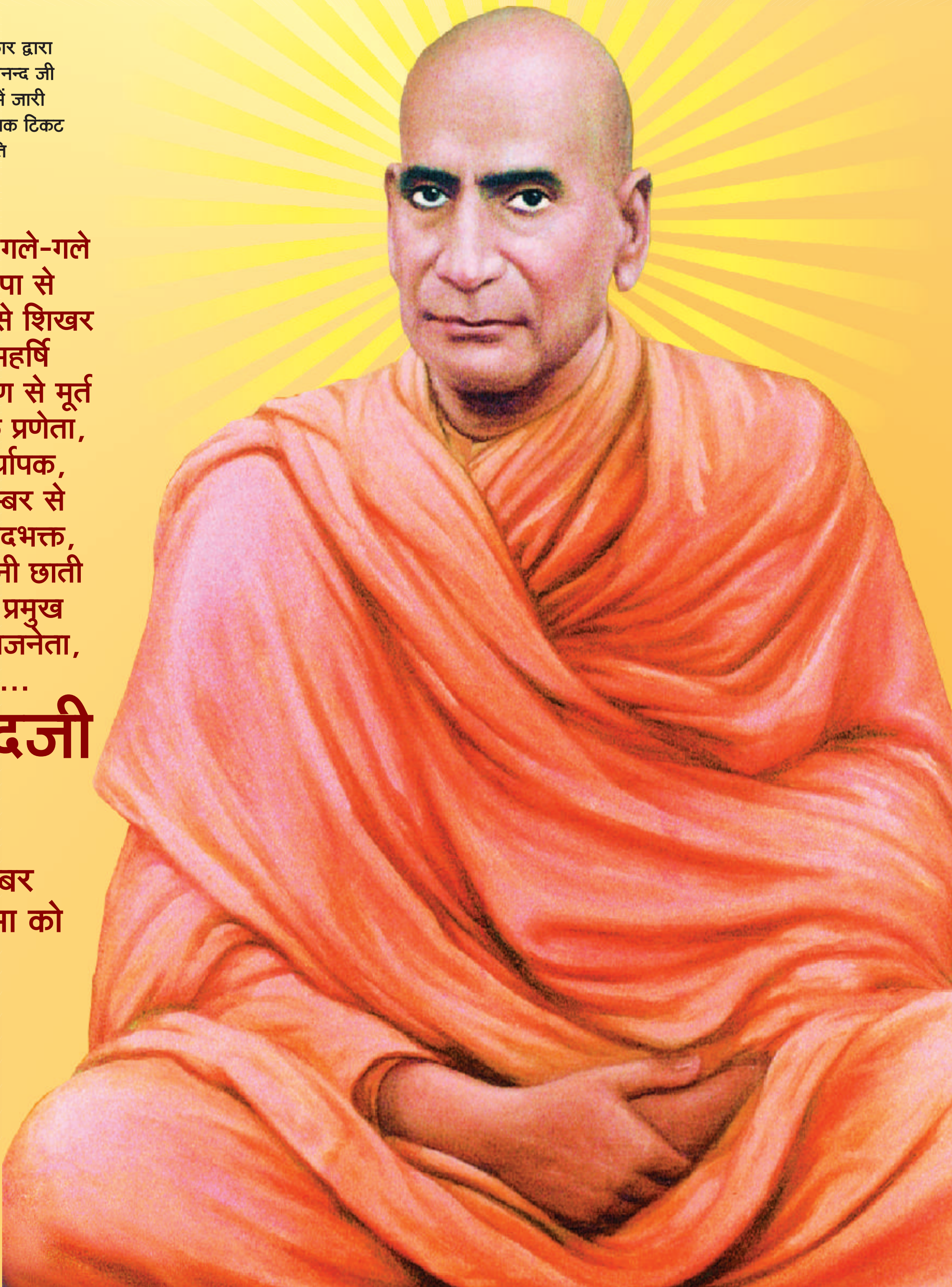

नास्तिक बन पतन के दल-दल में गले-गले धँसने के उपरान्त भी ईश्वर कृपा से आध्यात्मिक प्रगति पथ पर शून्य से शिखर तक पहुँचने वाले, अपने गुरु महर्षि दयानन्द जी के कार्यों को प्राण-प्रण से मूर्त रूप देने वाले, शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनर्स्थापक, दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से वेदमन्त्र गुंजायमान करने वाले वेदभक्त, अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती अड़ाकर देश की स्वतन्त्रता हेतु प्रमुख योगदान देने वाले शीर्ष कांग्रेस राजनेता, धर्म-धुरन्धर अमर बलिदानी...

स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती

बलिदान दिवस २३ दिसम्बर अवसर पर दिवंगत पवित्रात्मा को

शत-शत नमन

विस्तृत जीवन दर्शन सम्पादकीय लेख में...

एक अद्भुत विलक्षण व्यक्तित्व के धनी
श्रीमान् दीनदयाल जी गुप्त

८२ वें जन्मदिवस अवसर पर वैदिक संसार परिवार की ओर से हार्दिक-हार्दिक बधाई तथा अनन्त शुभकामनाएँ

महामहिम आचार्य देवव्रत जी राज्यपाल गुजरात राज्य के करकमलों द्वारा आपकी आत्मकथा का विमोचन किया गया

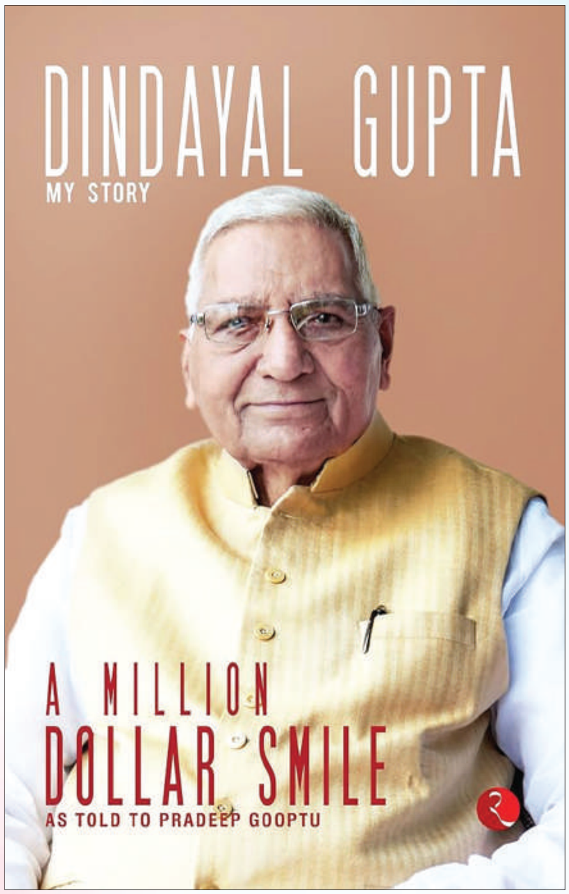

डॉलर इंडस्ट्रीज के मानद चेयरमैन श्री दीनदयालजी गुप्त को पश्चिम बंगाल होज्यरी एसोसिएशन 'हॉल ऑफ फेम' पुरस्कार से सम्मानित किया गया

एक ब्रेंड के शुभारम्भ अवसर पर डॉलर समूह

श्रद्धेय महाशयजी कोलकाता स्थित अपने कार्यालय में कार्यरत

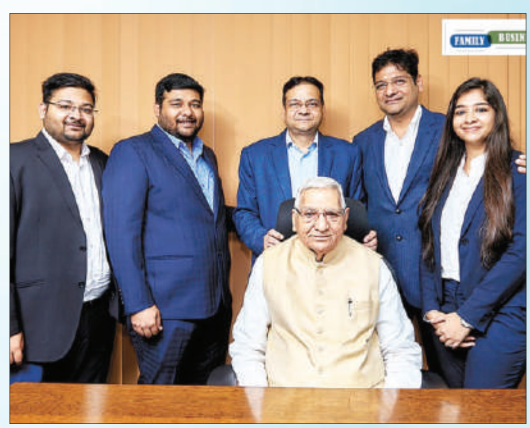

श्रीमान् दीनदयाल जी अपने पुत्रों और पौत्रों के साथ

विस्तृत जीवन दर्शन पृष्ठ-१० पर पढ़ें

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १३, अंक : १

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ नवम्बर, २०२३

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  ओमप्रकाश आर्य, आर्य समाज रावतभाटा (राज.) चलभाष : ९४६२३१३७९७
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
  बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग	५००/–
एक प्रति	५०/–
विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी)	११,०००/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक् से देय होगा।)

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
सम्पादकीय : त्याग, शौर्य, बलिदान, देशभक्ति के मूर्तरूप स्वामी श्रद्धानन्द	ओमप्रकाश आर्य	०५
महान् विभूती : ...शेर का शिकारी– यतीन्द्रनाथ मुखर्जी	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०७
जिस कोख से जन्म लिया	डॉ. लक्ष्मी निधि	१०
एक विलक्षण व्यक्तित्व... : दीनदयाल गुप्त	आचार्य राहुलदेव आर्य	१०
विरासत में आर्यत्व	रामनिवास 'गुणग्राहक'	१३
श्रीमद् भगवत् गीता में ज्ञान की महत्ता और ज्ञान प्राप्ति	शिवनारायण उपाध्याय	१५
सच्चे ईश्वर भक्त बनो	पं. नन्दलाल निर्भय	१६
ऋण है चुकाना	खुशहालचन्द्र आर्य	१६
भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता	डॉ. सत्यपालसिंह आईपीएस	१७
रिसोर्ट में विवाह : नई सामाजिक व्याधि	डॉ. कैलाश कर्मठ	२३
कैसे होगा रामराज का सपना साकार? हम जा रहें किस ओर?	आर्य मोहनलाल दशोरा	२४
आर्य समाज– विहंगम दृष्टिपात	सत्यप्रकाश आर्य	२५
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	२६
जातिवाद– साम्यवाद का शत्रु– चिन्तनीय विषय	पं. उम्मेदसिंह विशारद	२७
हम आर्य अब क्या करें	आचार्य ओमप्रकाश सामवेदी	२८
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	सुन्दरलाल चौधरी	२८
'कर्मयोगी परिवार' सूरत द्वारा निर्मित १८०वें सरस्वती धाम का लोकार्पण सम्पन्न	सुखदेव शर्मा	२९
सनातन धर्म की रक्षार्थ स्थापित सिक्ख पन्थ को ऐसा क्या है जो पृथक..	आचार्य सोमेन्द्रसिंह	३१
आज का मनुष्य	राधेश्याम गोयल	३२
प्रजातन्त्र या मूर्ख अथवा धूर्त तन्त्र?	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	३३
सनातन में हिन्दू आई.एन.डी.आई.ए. का दलदल	ले. नरसिंह सोलंकी	३४
जवानी को याद करेंगे	देशराज आर्य	३४
इस्लाम मुक्त भारत (ISLAM FREE INDIA - IFI)	राधाकिशन रावत	३५
वैदिक विज्ञान की दिशा में बढ़ते भारत के छोटे–छोटे कदम	राकेश श्रीराम	३६
माँ का आँचल	पुष्पा शर्मा	३६
राजनीति	सुन्दरलाल चौधरी	३७
वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, २०२३–२४	ओमप्रकाश आर्य	३७
आर्य जगत् की विविध सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	३८

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त ओंधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्य्यमरोचयः।
विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि।। (४४)

– सामवेद उ. ३.२.२२.२

शब्दार्थ– हे इन्द्र = परमेश्वर! **त्वम् अभिभूः असि** = आप सबको दबा सकने वाले हो, अर्थात् सबके ऊपर शासन करने वाले हो, **त्वम् सूर्यम् आरोचयः** = आप ही सूर्य को प्रकाश देते हो, **विश्वकर्मा** = सब जगतों के रचने वाले **विश्वदेवः** = सबके प्रकाशक देव और **महाँ असि** = सर्वव्यापी महादेव हो।

विनय : हे इन्द्र परमात्मन्! आप सब पर शासन करने वाले व कभी किसी से न दबने वाले सर्वश्रेष्ठ समस्त विश्व ब्रह्माण्ड में अपना साम्राज्य स्थापित किये हुए हैं। आप ही सूर्य में प्रकाश भरने वाले हैं, सूर्य किरणों को तेजस्वी करने वाले हैं। समस्त संसार की रचना करने वाले आप विश्वकर्मा परमात्मा सर्वव्यापक देवों के भी देव महादेव हैं। हे प्रभु! आपके अतिरिक्त अलावा इस विराट संसार की रचना करने वाला कोई भी नहीं है। आपके अतिरिक्त दूसरे सभी जीवात्मागण मिलकर भी पेड़ का एक पत्ता नहीं बना सकते एवं यह संसार अपने आप भी नहीं बन सकता है क्योंकि कोई भी व्यवस्थित कार्य व सुव्यवस्थित सुन्दर रचना बिना किसी रचनाकार के संभव नहीं है। तो इतना विशाल ब्रह्माण्ड व सुव्यवस्थित संसार की रचना एवं समस्त ग्रह, उपग्रहों का संचालन आपके बिना असम्भव ही है। हे प्रभु! आप सब ज्योतियों के भी ज्योति हैं, समस्त प्रकाशकों के भी प्रकाशक महान् देव हैं।

पद्यार्थ: *सर्वप्रकाशक, सबके शासक, महादेव, सविता महतारी।*
ज्योतिष्मान, जगत उजियारे, सूरज में चमके छवि थारी।।
आये हैं प्रभु शरण आपकी, हमको जगमग कर देना।
विमल वेद की ज्योति द्वारा, रग–रग निज से भर देना।। ■

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली**
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त दिसम्बर मास, २०२३ के कुछ राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय पर्व–दिवस

०१. विश्व एड्स जारूकता दिवस, सीमा सुरक्षा बल स्थापना दिवस। ०२.अन्तर्राष्ट्रीय दास प्रथा उन्मूलन दिवस, राष्ट्रीय प्रदूषण नियन्त्रण दिवस, भोपाल गैस त्रासदी दिवस, विश्व कम्प्यूटर सक्षरता दिवस। ०३. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व खुदीराम बोस जयन्ती, विश्व विकलांग दिवस। ०४. भारतीय नौसेना दिवस। ०५. महर्षि अरविन्द घोष पुण्यतिथि, आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्वयं सेवक दिवस, विश्व मृदा दिवस। ०६. डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्यतिथि, होमगार्ड स्थापना दिवस, नागरिक सुरक्षा दिवस। ०७. सशस्त्र सेना झण्डा दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन दिवस। ०८. **भाई परमानन्द पुण्यतिथि,** दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन चार्टर दिवस, राष्ट्रीय पनडुब्बी स्थापना दिवस। ०९. **आर्य आचार्य रामदेव पुण्यतिथि,** नरसंहार के अपराध में पीड़ितों के स्मृति और सम्मान का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस और इस अपराध की रोकथाम का अन्तर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस। १०. विश्व मानव अधिकार दिवस। ११. अन्तर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस, यूनिसेफ दिवस। १२. सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय तटस्थता दिवस, राष्ट्रीय स्वदेशी बलिदान दिवस। १३. गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस। १४. अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस। १५. सरदार वल्लभभाई पटेल पुण्यतिथि, अन्तर्राष्ट्रीय चाय दिवस। १६. विजय दिवस। १७. अमर बलिदानी राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी बलिदान दिवस, पेंशन भोगी दिवस। १८. अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी दिवस, अल्पसंख्यक अधिकार दिवस। १९. **पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशनसिंह बलिदान दिवस,** गोवा मुक्ति दिवस। २०. अन्तर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस। २१. महावीर प्रसाद द्विवेदी पुण्यतिथि। २२. श्रीनिवास रामानुजन जयन्ती (राष्ट्रीय गणित दिवस)। २३. **स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, चौधरी चरणसिंह जयन्ती** (किसान दिवस), **शान्तिधर्मी पत्र के जन्मदाता पं. चन्द्रभान आर्योपदेशक पुण्यतिथि।** २४. भारतीय उपभोक्ता दिवस। २५. पं. मदनमोहन मालवीय, भारत रत्न अटलबिहारी वाजपेयी एवं वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली जयन्ती, सुशासन दिवस। २६. वीर सरदार उधमसिंह जयन्ती, मुक्केबाजी दिवस। २७. महाराज खेतसिंह खंगार (राजपूत) जयन्ती, महामारी रोकथाम अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। २८. पं. सुमित्रानन्दन पन्त पुण्यतिथि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्थापना दिवस। २९. अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस। ३०. महर्षि रमन जयन्ती। विक्रम साराभाई पुण्यतिथि। ३१. ईस्ट इण्डिया कम्पनी आगमन काला दिवस, आंग्ल वर्ष अन्तिम दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान–वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

त्याग, शौर्य, बलिदान, देशभक्ति के मूर्त रूप स्वामी श्रद्धानन्द

सम्पादकीय

● ओमप्रकाश आर्य
आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

'अनुव्रतः पितुः पुत्रो' अथर्व. ३/३०/२ अर्थात् पुत्र पिता का अनुव्रती हो। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस वर्ष २०२३ के अवसर पर पुत्र की लेखनी से पिता के त्याग, शौर्य, बलिदान, देशभक्ति का संस्मरण समस्त देशवासियों के लिए एक महान् सन्देश है। पुत्र को अपने पिता के जीवन पर गर्व हो रहा है। उसकी लेखनी धन्य हो रही है। पिता की स्मृतियाँ पुत्र को गौरवान्वित कर रही हैं।

देशवासियों को यह दिवस प्रेरणा लेने का दिवस है। पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति और पिता स्वामी श्रद्धानन्द। अपने पिता की दिनचर्या का वर्णन करते हैं कि वे सुबह पाँच बजे उठकर बाहर चले जाते थे। वहीं नित्यकर्म से निवृत्त होते थे। दफ्तर का काम भी करते थे। केवल भोजन के समय अन्दर आते थे। लम्बा कद, हृष्ट–पुष्ट शरीर, लम्बी दाढ़ी, साफ–सुथरा पहनावा– आकर्षक व्यक्तित्व था। कचहरी से लौटते समय आर्य समाज मन्दिर में एक घंटा ठहरते थे। जालन्धर आर्य समाज के प्रधान रहे। पुत्र इन्द्र अपने पिता का संस्मरण बता रहे हैं कि वे **'सद्धर्म प्रचारक'** के सम्पादन के अतिरिक्त पंजाब भर की आर्य समाजों में घूमकर प्रचार करना, आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाना, उनके कार्यक्रम के प्रधान अंग थे। दौरे पर प्रायः अकेले जाते थे। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान होते हुए भी महीने में दो–तीन बार लाहौर जाना ही पड़ता था। इन्द्रजी पिता की स्मृति में लिखते हैं कि आर्य समाज के उत्सवों पर वे अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र व इन्द्र को साथ ले जाया करते थे। वह यात्रा बड़ी मनोरंजक होती थी। कितनी मनमोहक स्मृति है पिता स्वामी श्रद्धानन्द की– इन्द्र के शब्दों में– **''पिताजी का आधा समय समाज मन्दिर में व्यतीत होता था और कोठी का अतिथि–गृह आर्य समाज के उपदेशकों और अभ्यागतों से शायद ही कभी खाली रहता हो। उन अतिथियों में पं. लेखराम का पिताजी से सगे भाई जैसा सम्बन्ध था।''** पाठक अनुभव लगा सकते हैं कि मुंशीराम (श्रद्धानन्द) जी के अन्दर आर्यत्व का गुण हिलोरे ले रहा था।

जिसको ईश्वर पर अटूट विश्वास हो, जिसका अंतःकरण पवित्र हो, जिसे सत्य मार्ग प्रिय हो; ईश्वर उसकी मदद अवश्य करता है। इस विषय में इन्द्रजी के संस्मरण से एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ। पं. गोपीनाथ ने सद्धर्म प्रचारक के सम्पादक और प्रकाशक पर मानहानि का मुकदमा दायर किया था। मुकदमा लाहौर में था। उक्त विषय में इन्द्रजी के शब्द– **''मुंशीराम जी, कोई मसाला भी है या नहीं? जिरह में क्या पूछा जाएगा?'' ''भाई मसाला तो कुछ भी नहीं, एक ईश्वर का भरोसा है, कोई न कोई रास्ता निकलेगा ही। अदालत में पं. गोपीनाथजी को अपनी जीत का पूरा भरोसा था। मुंशीराम जी खाली हाथ पीछे किए हुए खड़े थे। इतने में उनके हाथ को किसी ने छुआ और कोई चीज पकड़ाई। हाथ पैलाया, किसी ने कागजों का पुलिन्दा थमा दिया। मुंशीराम ने उसे अखबार की फाइल समझा। उसे लेकर वे बाहर आए। देखा तो दंग रह गए। उसमें पं. गोपीनाथ जी की बदचलनियों का ढेरों प्रमाण था। उनमें उनके बारे में रहस्य भरे पड़े थे। वकील को दिये। वह उछल पड़ा। बंडल किसने दिया– पता नहीं। उन प्रमाणों से मुंशीराम निर्दोष साबित हुए।''** वास्तव में ईश्वर का हाथ बहुत लम्बा है। जिसको ईश्वर पर ऐसा दृढ़ विश्वास हो, भला वह क्यों कभी घबरा सकता है? हाँ, उसका अन्तःकरण पवित्र हो। सत्य मार्ग पर चल रहा हो। ईश्वर का सच्चा स्वरूप अपने पवित्र हृदय में अनुभव किया जा सकता है।

'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो। आर्य समाज एक मानव जाति को मानता है। उसकी दृष्टि में जन्मना जातिभेद नगण्य है। मुंशीराम ने (श्रद्धानन्द) इस वेदवाक्य को जीवन में उतार लिया था। समाज सुधार के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति लाई। उन दिनों रहतियों को अछूत समझा जाता था। मुंशीराम ने आर्य समाज में उन्हें शुद्ध किया। दो–तीन सौ की उपस्थिति में सभासदों ने उनके हाथ से हलुआ खाया, जल पिया। हिन्दू जाति के लिए यह एक नई चीज थी। सनातन धर्मियों ने जनता को खूब भड़काया, जिसके फलस्वरूप अनेक आर्य समाजी उनकी बिरादरी से अलग कर दिये गये। इस प्रकार मुंशीराम ने समाज में एक नए युग का सूत्रपात किया। छुआछूत मिटाने में आर्य समाज की अग्रणी भूमिका रही है। इसी प्रकार वे विधवा विवाह के समर्थक थे। जो कहते थे, उसे करते थे। डॉक्टर गुरुदत्त (स्वामी आत्मानन्द मुमुक्षु) जो एक आर्य युवक थे और श्रीमती सुमित्रा ईसाइयों से आई हुई एक सुशिक्षिता देवी थीं। वे विधवा थीं। मुंशीराम जी ने सुमित्रा का पिता बनकर अपनी ही कोठी पर गुरुदत्त से विवाह करा दिया। इसका उनके परिवार में कड़ा विरोध हुआ, किन्तु उन्होंने इसका कोई परवाह नहीं किया। उनके सम्बन्धियों ने भी उन पर विरोध का प्रहार किया, पर मुंशीराम अपने सत्यमार्ग पर डटे रहे, जरा भी विचलित नहीं हुए।

इन्द्र जी अपने पिता की स्मृति का उल्लेख करते हैं कि वे प्रायः आर्य समाज के काम से और कभी–कभी मुकदमों के प्रसंग में लाहौर जाया करते थे। एक दिन वे वहाँ से आकर आर्य समाज मन्दिर में ही उतर गए और घर पर सन्देश भेज दिया कि वे घर नहीं आएँगे। घर में तहलका मच गया। उनकी कोठी और आर्य समाज मन्दिर के बीच में मात्र सड़क का ही अन्तर था। उनकी ताईजी समाज मन्दिर में उनसे मिलने गईं तो उन्होंने उनसे अपनी प्रतिज्ञा बताई कि उन्होंने लाहौर में यह प्रतिज्ञा की है कि गुरुकुल बनाने के लिए जब तक ३० हजार रुपये इकट्ठा नहीं कर लेंगे, तब तक घर में पैर नहीं रखेंगे। घबराने की कोई बात नहीं है, आर्य समाज में ही ठहरा हूँ। यह उनका पहला सर्वमेधयज्ञ था जिसको उन्होंने पूरा करके दिखाया। ऐसे व्रतियों की परमात्मा मदद करता है। छह महीने में उन्होंने ३० हजार रु. से अधिक राशि एकत्र कर ली और गुरुकुल का सूत्रपात किया।

वे क्रान्तिकारी स्वभाव के थे। जो ठान लिया, उसे करके दिखाया। लोगों की, सम्बन्धियों की बिल्कुल परवाह नहीं की। पुत्री अमृत कला का विवाह जाति-पाति तोड़कर गुण-कर्म-स्वभावानुसार किया जिसका उन्हें बहुत विरोध सहना पड़ा। आप कल्पना नहीं कर सकते कि उन दिनों जाति से बाहर जाना कितना साहसिक कार्य था।

सन् १९०२ में गंगा के तट पर गुरुकुल का उद्घाटन हो चुका था। १९०६ में गुरुकुल का दूसरा दौर शुरू हुआ। इन्द्र और हरिश्चन्द्र ऊपर की श्रेणी में थे। दोनों को गुजरांवाला वैदिक पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया था, यह मुंशीरामजी की कथनी और करनी की एकरूपता को दर्शाती है। उपदेश पहले स्वयं पर लागू होना चाहिये। गुरुकुल की बात करने वाला पहले अपने ही बच्चों को गुरुकुल में भेजता है। हरिश्चन्द्र सातवीं कक्षा में और इन्द्र छठी कक्षा के छात्र थे। बाद में हरिद्वार के समीप गंगा के पार कांगड़ी नामक ग्राम दान में मिला था। उसी में पढ़ने के लिए दोनों को ले जाया गया। गुरुकुल के पहले छात्र स्वयं के घर से। तभी तो दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं और प्रभाव भी पड़ेगा। प्राकृतिक छटा के मध्य स्थित गुरुकुल को देखकर दोनों भाई बड़े मुदित हुए। सब कुछ प्रकृति में था। नैसर्गिक सौन्दर्य स्वर्ग का सा प्रतीत हुआ। घना जंगल, गंगा नदी, रेतीला भाग, गोल पत्थर, साफ मैदान, चाँदनी रात, सूर्योदय-सूर्यास्त दृश्य, घास की झोपड़ियाँ, गोशाला। बच्चों को खेलने-कूदने के लिए ऐसी ही स्थल चाहिये। गुजरांवाला वैदिक पाठशाला से आने पर दोनों भाइयों को स्वर्गिक वातावरण लगा। ऐसी मनोरम ७०० बीघा जमीन बिजनौर जिले के जमींदार मुंशी अमनसिंह ने दान में दी थी। प्यासे को पानी मिल गया था। मुंशीराम को ऐसे ही स्थान की तलाश थी। परमात्मा ने मनोरथ पूर्ण कर दिया। जहाँ चाह वहाँ राह। मनुष्य जिस चीज को सच्चे हृदय से चाहता है, प्रयत्न करने पर उसे वह अवश्य मिलती है।

तेहिमिलहिं पर जाकर सत्य सनेहू। सो तेहिमिलहिं न कछु सन्देहू।।

आर्यजन ही नहीं, अपितु मानवमात्र को प्रेरणा देने वाला मुंशीराम का सर्वमेधयज्ञ जीवन के लिए बहुत ही शिक्षाप्रद और युगों-युगों तक सन्देश देता रहेगा। ऐसा अनुपम त्याग पिता, पुत्र सबके लिए उपदेशपरक है। आज की पीढ़ी के लिए महान् शिक्षा को देने वाला है। हर परिवार इससे सीख ले। वर्तमान समय के लिए यह घटना बहुत प्रासंगिक है।

इन्द्र जी ने **'मेरे पिता'** पुस्तक में उस दिन का उल्लेख करते हुए लिखा है- **''प्रातःकाल ४:०० बजे दोनों भाइयों को बुलाया गया। असाधारण समय में बुलाए जाने का कारण समझ में नहीं आया। सेवक से पूछने पर पता चला कि वे रात भर सोए नहीं। पहले टहलते रहे और कुछ लिखते रहे। दोनों भाइयों के बंगले पर पहुँचने पर उन्हें कमरे में टहलते पाया। विचार मुद्रा में गम्भीर दोनों हाथ मिलाकर पीछे किये हुए। हमारे पहुँचने पर वे कुर्सी पर बैठ गए। गम्भीर मुद्रा से दराज में से फुलस्केप के आकार का एक लिखा हुआ कागज निकालकर हमारे सामने रखते हुए कहा कि इसे पढ़ लो और यदि तुम इससे सहमत हो तो इस बात पर हस्ताक्षर कर दो।''** उसमें जो कुछ लिखा था, उसका अभिप्राय निम्नवत् है :-

''मैंने अपनी शक्ति के अनुसार अपने जीवन में वैदिक धर्म की सेवा की है। ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य करके वैदिक धर्म के पुनरुद्धार और आर्य जाति के उत्थान के लिए गुरुकुल का संचालन करता रहा हूँ। मैंने गुरुकुल के लिए अपनी सब शक्ति लगा दी है, परन्तु अब मुझे अनुभव हो रहा है कि मेरा अब तक का प्रयत्न अधूरा था। मैंने अभी गुरुकुल के लिए सब कुछ नहीं दिया। जालन्धर में मेरा जो मकान है, वह पुश्तैनी नहीं है, मैंने अपनी कमाई से बनाया है, उसमें अभी तक मेरी ममता विद्यमान है। मैं उसे भी मिटा देना चाहता हूँ। इस कारण से मैं इस दानपत्र द्वारा वह मकान गुरुकुल कांगड़ी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित करता हूँ।'' उन्होंने कहा कि यदि इसमें कोई आपत्ति न हो तो वैसा लिखकर दोनों भाई नीचे अपने हस्ताक्षर कर दो। उस अर्पणनामे को पढ़कर दोनों भाइयों ने स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर कर दिये। यह उनकी अन्तिम सम्पत्ति थी। शेष प्रेस आदि सब वस्तुएँ पहले ही दे चुके थे। दोनों भाई बिना किसी झिझक के आश्रम की ओर चले गए।

दोनों भाइयों ने पिताजी के निर्णय को सर्वोपरि रखा। जैसे राम पिता की आज्ञा को नहीं टाल सके थे, उसी प्रकार हरिश्चन्द्र और इन्द्र भी पिता की आज्ञा-इच्छा का पूरा-पूरा पालन किये।

इस सर्वसमर्पण यज्ञ की घोषणा सार्वजनिक सभा में करनी शेष थी। गुरुकुल का उत्सव हो रहा था। उत्सव में उनके बहुत से सम्बन्धी भी आए हुए थे। बड़ी पुत्री वेद कुमारी भी वहीं थीं। ताईजी थीं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण, **'प्रकाश'** पत्रिका के सम्पादक महाशय कृष्णजी, भक्तराज लाला लब्भूराम नैयर और अनेक गणमान्य महानुभाव विराजमान थे। भरी सभा में उन्होंने कहा कि मेरी अन्तरात्मा ने आवाज दी है कि जो थोड़ी सी बची हुई सम्पत्ति है, वह अहंकार का कारण है। अपने उस मकान को गुरुकुल रूपी यज्ञ कुण्ड में उसकी आहुति देता हूँ। इस घोषणा से सबकी आँखों में आँसू आ गए। कुछ श्रोता तो इतने द्रवित हुए कि आवाज से रोने लगे। सबका हृदय इस त्याग की भावना से भर आया। सबने हार्दिक जयकारों और तालियों से उनका अभिनन्दन किया। सभा में एक अपूर्व भाव उमड़ पड़ा। इस त्याग ने लोगों के हृदय पर विजय प्राप्त कर लिया। आश्चर्य तो इस बात का है कि वहाँ उनके पुत्र-पुत्रियाँ, सगे-सम्बन्धी सभी मौजूद थे लेकिन किसी ने उनका विरोध नहीं किया। उस महान् त्यागात्मा से हम बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। अपना सब कुछ त्याग करके उस महाविभूति ने अप्रैल १९१७ में गुरुकुल के उत्सव पर श्रद्धा से संन्यास लेकर अपना नाम श्रद्धानन्द रखा।

२९ मार्च १९१९ को सायंकाल दिल्ली में एक विराट् सभा हुई। सभापति स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। ३० मार्च को रोलेट ऐक्ट के विरोध में प्रतिवाद स्वरूप हड़ताल की घोषणा की गई। सब बाजार बन्द थे। सब ओर हड़ताल का दृश्य दिखाई दिया। कुछ घबराए हुए लोग आए। उनसे मालूम हुआ कि पुलिस ने घण्टाघर पर एकत्र हुई जनता पर गोली चला दी है। उससे बहुत से व्यक्ति घायल हो गए हैं। इससे लोगों में हलचल मच गई। सेना चढ़ाई करती हुई दिखाई दी। सेना की टुकड़ी सभा के पास आकर रुक गई। उनके अफसर ने पूछा कि यह क्या हो रहा है? बोला- **''सभा हो रही है और मैं लोगों को शान्त रहने का उपदेश दे रहा हूँ।''** वह चुपचाप चला गया। शाम ५ बजे फिर फौज ने चारों ओर से घेर लिया। पुलिस ने नाकेबन्दी कर दी। **(शेष भाग पृष्ठ ३६ पर)**

शेर का शिकारी- 'यतीन्द्रनाथ मुखर्जी'

राज्य माँगकर नहीं, जीतकर ही पाये जाते हैं।
राज्य भोगते वे नर, जो अपना खून बहाते हैं।।
छीने जाते हैं राज्य, न बाजारों में वे बिकते हैं।
नहीं राष्ट्र में शक्ति अगर, तो राज्य नहीं टिकते हैं।।
उपदेशों से नहीं, शत्रु का शमन हुआ करता है।
तलवारों से अन्यायों का दमन हुआ करता है।।
अगर झुकता है कायरता से, कटता वह मस्तक है।
वक्ष फुलाकर चलने वालों को जीने का हक है।।

● डोंगरलाल पुरुषार्थी
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीतसिंह के साथ किशोरावस्था में एक घने जंगल में शेर से आमने-सामने जंग हुई। फलत: रणजीतसिंह ने अपनी कटार से शेर को यमराज का घर दिखाया। गरीबों के मसीहा जननायक टंट्या माना ने अपनी वीरता के बदोलत एक बार किशोरावस्था में मदहोश उत्पात करते पाड़े के साथ आम रास्ते पर से जंग लड़कर उसे आसमान दिखाया। दूसरी बार हिम्मत पटेल ने अपने षड्यन्त्र के अन्तर्गत अपने बाड़े में स्थित बड़े कमरे में पाड़े को छोड़ रखा था। अपने जाल के मुताबिक वीर टंट्या ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया, बाहर से हिम्मत पटेल ने दरवाजा बन्द कर दिया। पटेल मन ही मन बहुत खुश हो गया कि पाड़ा वीर टंट्या का काम तमाम कर देगा, किन्तु हुआ उल्टा ही टंट्या ने निहत्थे पाड़े से अपनी ताकत के बल पर संघर्ष कर पाड़े को मार डाला। रानी लक्ष्मीबाई की वीर सखी झलकारी बाई ने एक बार जंगल में अपने पशुओं को चराने के दौरान एक चीते ने बालिका (झलकारी) पर हमला किया। अपने बचाव में पशुओं को हाँकने वाली लाठी से ऐसा प्रहार किया जो कि चीते की नाक पर चोट लगने से वह अचेत हो गया। तत्पश्चात् वह चीते पर वार पर वार करती ही रही, जब तक चीता मर न गया। ऐसे ही यतीन्द्रनाथ मुखर्जी ने युवावस्था में एक बाघ (शेर) से जीवन-मृत्यु रूपी संघर्ष करके आखिरकार यतीन्द्र ने बाघ को मार डाला। ऐसे ही शौर्य के कारण यतीन्द्रनाथ का नाम बाघा यतीन्द्रनाथ मुखर्जी पड़ा। बाघा यतीन्द्रनाथ मुखर्जी में अद्भुत शारीरिक बल, साहस और पराक्रम तो था ही तथा ये अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। इनके मन में कोमलता, मानवता के गुणों के साथ ये देशप्रेमी और क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अरविन्द योगी, स्वामी विवेकानन्द, जगदीशचन्द्र बसु, बहिन निवेदिता आदि महान् व्यक्ति यतीन्द्रनाथ के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे। इनके शौर्य और देशभक्ति से फिरंगी सरकार तक आतंकित थी। यतीन्द्रनाथ और चन्द्रशेखर आजाद में कई बातों में समानता थी। शारीरिक तथा मानसिक शक्ति, देशप्रेम, मानव प्रेम और वीरता में ये दोनों एक-दूसरे के प्रतिरूप थे।

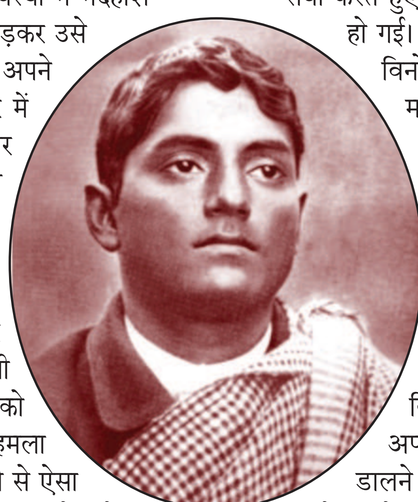

यतीन्द्रनाथ मुखर्जी

यतीन्द्रनाथ मुखर्जी का जन्म ८ दिसम्बर १८७९ को काया ग्राम जिला नादिया (पश्चिम बंगाल) में हुआ था। यतीन्द्र इनके पिता उमेशचन्द्र मुखर्जी एक प्रतिभावान विद्वान् थे। ये सरकारी नौकरी करते थे। यतीन्द्र जब पाँच वर्ष के थे, इनके पिताजी स्वर्ग सिधार गए थे। यतीन्द्र की माता का नाम शरत शशि देवी था। ये बड़ी रूपवती और उच्च कोटि की कवयित्री थी। इन्हें समाजसेवा में बड़ी रुचि थी। यतीन्द्र बहुत दिनों तक अपनी विदुषी माँ का प्यार भी न पा सके। प्लेग की बीमारी में मरीजों की सेवा करते हुए स्वयं रोगी हो गई और प्लेग से सन् १८९९ में मृत्यु हो गई। यतीन्द्र की पढ़ाई-लिखाई में इनकी बड़ी बहन श्रीमती विनोद बाला का बड़ा योगदान था। इस बहन से यतीन्द्र को माँ का प्यार मिला था। यतीन्द्र केवल इंटरमीडिएट तक ही शिक्षा प्राप्त कर सके। तत्पश्चात् इन्होंने शार्टहैंड और टाइपिंग का कोर्स पूरा किया और बंगाल सेक्रेटीरिएट में स्टेनोग्राफर के पद पर नियुक्त हो गए। इस पद के वातावरण में स्वभावत: गुलामी का वातावरण था। इन्हीं दिनों यतीन्द्रनाथ एक क्रान्तिकारी संगठन में शामिल हो गए। इनके हृदय में छिपा बैठा क्रान्तिकारी गुण अब जाग गया था। जो यतीन्द्र जैसी विभूतियाँ विशेष कार्य के लिए जन्म लेती हैं। इसलिए अपने क्रान्तिकारी स्वरूप को छिपाने, उस पर आवरण डालने के लिए वे सरकारी नौकरी करते रहे। बहन विनोदबाला के कहने पर यतीन्द्र ने अप्रैल १९०० में इन्दुबाला देवी से विवाह कर लिया। यतीन्द्र की तीन सन्तानें थीं। दो पुत्र तेजन, वीरन तथा एक पुत्री आशालता।

एक बार यतीन्द्र रेल से यात्रा कर रहे थे। उस डिब्बे में चार फौज के गोरे भी यात्रा कर रहे थे। उनसे किसी बात पर यतीन्द्र का झगड़ा हो गया। यतीन्द्र ने अकेले ही उन चारों की अच्छी तरह धुलाई कर दी। परिणामत: यतीन्द्र के खिलाफ मुकदमा चला, मगर उसे वापस लेना पड़ा। क्योंकि अदालत को यह विश्वास दिलाना कठिन था कि चार फौजी लोगों को यतीन्द्र ने अकेले ही पीटा। इस लड़ाई के कारण यतीन्द्र को नौकरी से हटा दिया गया। नौकरी से निकाल दिए जाने पर यतीन्द्र ने ठेकेदारी का काम शुरू किया। इससे जो आय होती उसे यतीन्द्र क्रान्तिकारी कार्यों में खर्च करते। यतीन्द्र ने गुप्त समितियों का गठन किया तथा अपने प्रभाव से सैकड़ों उत्साही नवयुवकों को देश की आजादी के कार्यों में लगाया। अपने दल में ये **'यतीन दा'** के नाम से लोकप्रिय हो गए। यतीन्द्र के नेतृत्व में क्रान्तिकारी कार्यों में भाग लेकर फाँसी पाने वाले ये नाम हैं- (१) चारूचन्द्र बोस- इन्होंने सी.आई.डी. इंस्पेक्टर आशुतोष विश्वास का

वध किया, जो १९ मार्च १९०९ को फाँसी पाई। (२) वीरेन्द्रनाथ दत्त- इन्होंने रामसुल आलम गुप्तचर विभाग के इंस्पेक्टर को मारा। परिणामत: २१ फरवरी १९१० को फाँसी मिली। (३) चित्तप्रिय रायचौधरी- इन्होंने सुरेशचन्द्र नाम के गुप्तचर अधिकारी को मारा, जो कि ये ९ दिसम्बर १९१५ को पुलिस की गोली से शहीद हो गए। (४) भोलानाथ चटर्जी- हथियार प्राप्त करने के लिए यतीन्द्र ने विदेश भेजा था। लौटने पर हथियार सहित पकड़े गए। फलत: जनवरी १९१६ को इनको फाँसी हुई।

यतीन्द्र ने हरिद्वार के सन्त भोलानाथ गिरि को अपना गुरु बनाया। जो कि गिरिजी बड़े विद्वान् और देशभक्त थे। गुरु का प्रभाव यतीन्द्र के जीवन पर बहुत गहरा पड़ा था। यतीन्द्र गीता के प्रेमी बन गए। गीता से इन्होंने आत्मा की अमरता का पाठ सीखा और एक क्रान्तिकारी होने के नाते देश-द्रोहियों के प्रति अपने कर्तव्य का निर्धारण किया। गृहस्थ होकर भी ये गृहस्थ जीवन में लिप्त नहीं हुए। यह इनकी सबसे श्रेष्ठ और कठिन साधना थी। सन् १९१५ का विश्व युद्ध छिड़ जाने के समय बंगाल में सी.आई.डी पुलिस ने अपना जाल बिछा रखा था क्योंकि क्रान्तिकारी विश्वयुद्ध को भारत में क्रान्ति के लिए शुभ अवसर समझते थे। क्रान्तिकारी इस क्रान्ति के लिए हथियार जुटाने और युद्ध के प्रभावों में बाधा पहुँचाने में लगे थे। पुलिस वाले अपने प्रयासों को सफल और क्रान्तिकारियों के प्रयासों को विफल बनाने में लगे थे। सितम्बर १९१५ में 'मेवरिक' नामक एक जर्मन जहाज युद्ध की सामग्री लेकर बालासौर (उड़ीसा) के कैप्टीपोदा तट पर निर्जन स्थान पर आने वाला था। हथियार आदि उतारने की जिम्मेदारी यतीन्द्र की थी। अत: ये लोग इसके लिए मार्च १९१५ में ही बालासौर जा पहुँचे थे। यतीन्द्र यहाँ साधु बनकर रह रहे थे। इन्होंने मालडीह मौजा में एक आश्रम बना लिया था। मालडीह ग्राम जो आश्रम से कुछ फासले पर था, नीरेन्द्रनाथ दासगुप्त और ज्योतिषचन्द्र पाल किसान बनकर रह रहे थे। कुछ अन्य साथियों ने बालासौर में साइकिलों और घड़ियों की **'यूनिवर्सल इम्पोरियम'** नाम से एक दुकान खोल ली थी। इन लोगों के कारण बालासौर जैसा एकान्त एवं शान्त क्षेत्र गतिविधियों का केन्द्र बन गया था। वहाँ नित्य नए चेहरे दिखाई देने लगे। पुलिस तक इसकी सूचना पहुँची तो पुलिस को बंगाली नवयुवकों पर कुछ शक हुआ। बालासौर की पुलिस ने जब कलकत्ता की पुलिस को सूचित किया कि अपरिचित बंगाली नौजवान बालासौर के क्षेत्र में कुछ समय से रहने लगे हैं। जिसकी गतिविधियों पर शक हो रहा है। कलकत्ता की पुलिस को, जो यतीन्द्र की खोज में पहले ही से थी, एक सूत्र हाथ में आ गया।

कलकत्ता के कई उच्च अधिकारी बालासौर आए और स्थानीय पुलिस से विचार-विनिमय किया। स्थानीय पुलिस की सहायता से इन अधिकारियों ने पाँच सितम्बर १९१५ के दिन **'यूनिवर्सल इम्पोरियम'** की तलाशी ली और दो नवयुवकों को गिरफ्तार कर लिया। वहीं फर्श पर पड़ा एक कागज पुलिस को मिला। उसमें कैप्टीपौदा ग्राम का नाम लिखा हुआ था। सूत्र के आधार पर पुलिस दल हाथियों पर सवार होकर छ: सितम्बर को शाम को कैप्टीपौदा गाँव पहुँचा। हाथियों पर पुलिस दल को आते देखकर गाँव में हलचल मच गई। साधु यतीन्द्र के एक भक्त ने यतीन्द्र को पुलिस के आगमन की सूचना दे दी। इस पर यतीन्द्र ने अपना आश्रम रात में खाली कर दिया।

साधु यतीन्द्र, मनोरंजन सेन और चित्तप्रिय तीनों अपने दो साथियों को लेने मालडीह ग्राम पहुँचे। वहाँ का सभी सामान नष्ट कर अब पाँचों साथी बालासौर रेलवे स्टेशन के लिए चल पड़े। ८ सितम्बर १९१५ को जब पुलिस ने मालडीह वाले घर की तलाशी ली तो उसे वहाँ कुछ न मिला। मगर पुलिस को अब इस बात का पूरा यकीन हो गया कि साधु यतीन्द्र के सिवा और कोई नहीं हो सकता और चेले उसके क्रान्तिकारी साथी हैं। पुलिस ने अब सारे इलाके की नाकाबन्दी कर ली। जगह-जगह स्टेशन की ओर जाने वाले मार्गों पर पुलिस खड़ी कर दी गई। पुलिस ने चारों तरफ जनता के बीच यह खबर फैला दी कि कुछ खतरनाक बंगाली डाकू बालासौर क्षेत्र में घुस आए हैं, जो कोई इन्हें पकड़वाने में पुलिस की मदद करेगा, उसे अच्छा इनाम दिया जाएगा।

इस पकड़ा-पकड़ी में यतीन्द्र के साथियों ने ग्रामीणों पर गोली चला दी, जिससे एक व्यक्ति मारा गया। यतीन्द्र और उसके साथी एक खेत में विश्राम कर रहे थे। उसी समय पुलिस ने उन्हें घेर लिया और आत्म समर्पण के लिए कहा। यतीन्द्र और साथियों के लिए हथियार डालना नामुमकिन था। अत: दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। एक साथी चित्तप्रिय शहीद हो गया, ज्योतिषपाल घायल हो गया। यतीन्द्र भी घायल होने पर गिरफ्तार कर लिया गया। दूसरे दिन १० सितम्बर १९१५ को बाघा यतीन्द्रनाथ मुखर्जी की अस्पताल में मृत्यु हो गई। ज्योतिषपाल, नीरेन्द्रदास गुप्त, मनोरंजन सेन पर बगावत का मुकदमा चला, अदालत ने इन्हें अपराधी माना। नीरेन्द्र और मनोरंजन को फाँसी और ज्योतिषपाल को चौदह वर्ष के लिए काला पानी भेजा गया। अन्तत:-

गीता का उपदेश यही है, मारो या कि मरो तुम।
युद्ध सिन्धु के तीरे बैठकर, आहें नहीं भरो तुम।।
बिना बहाये खून, मान का शोध नहीं होता है।
बिना बहाये खून, विजय का बोध नहीं होता है। ■

जिस कोख से जन्म लिया है

जिस कोख से जन्म लिया,
तुम उस पर लात चलाते,
अपने बेटे को पगले तुम,
कैसी राह दिखाते।
बेटे को जो सिखा रहे हो,
वह कल ही तुम्हें सिखाएगा,
बाप बनोगे तो तुम पर वह,
कल ही लात चलाएगा।

तुम भी बाप बनोगे सोचो,
तुम भी बेटे वाला होगा,
उसका भी तुम ख्याल करो,
तेरे साथ भी क्या–क्या होगा।
खेतों में जो बीज बोओगे,
वही फसल घर में लाओगे,
पेड़ लगाओगे बबूल का,
आम कहाँ से तुम पाओगे।
माँ–बाप को पीड़ा देकर,
चाहोगे तुम राज करोगे,
कैसे खुशी मिलेगी तुमको,
जब ईश्वर को नाराज करोगे। ■

● डॉ. लक्ष्मी निधि
'निधि विहार', १७२, न्यू बारादारी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर–१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

उदारमना, सहयोगी, दानी महानुभावों से विनम्र अनुरोध...

वैदिक संसार : वेद मन्तव्य व महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन विशेषांक

सत्य सनातन वैदिक धर्म-संस्कृति निष्ठ महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि ईश्वर कृपा एवं आप समस्त सहयोगी महानुभावों के सहयोग, साथ तथा सम्बल से **'वैदिक संसार'** पत्रिका अपने जीवन काल के सफलतापूर्वक १२ वर्ष पूर्ण कर १३ वें वर्ष में प्रवेश कर गई है।

जैसा कि आप सभी महानुभावों को विदित ही है कि आगामी वर्ष २०२४ वेदों की महत्ता के पुनर्स्थापक **'महर्षि दयानन्द सरस्वती'** के जन्म के २०० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इसके साथ ही महर्षि जी द्वारा स्थापित **'आर्य समाज'** के भी वर्ष २०२५ में १५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम शिष्य शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनर्स्थापक, राष्ट्र स्वतन्त्रता के प्रमुख राजनेता **'स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती'** के बलिदान के भी २०२६ में १०० वर्ष पूर्ण होंगे।

इस कारण यह वर्ष २०२४-२५ और २०२६ वेदों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वेदों के प्रचार-प्रसार के निमित्त स्थापित संगठन आर्य समाज के प्रति निष्ठावान् एवं समर्पित बन्धुओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता तथा सनातन धर्म की रक्षार्थ महर्षि दयानन्दजी के दिए गए योगदान को दृष्टिगत रखकर भारत सरकार भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्विजन्मशताब्दी वर्ष को **'ज्ञान ज्योति पर्व'** के रूप में विश्व स्तर पर उच्च स्तरीय समिति भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में गठित कर मना रही है। इस कारण से भारत के प्रत्येक नागरिक के साथ-साथ ईश्वर में अटूट आस्था और मानवता में विश्वास रखने वाले समूचे संसार के व्यक्तियों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष का प्रत्येक दिवस एक पर्व के अनुरूप है।

इस पुनीत पावन बेला में 'वैदिक संसार' महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति को समर्पित श्रद्धांजलि स्वरुप वेद प्रचारकों, प्रशिक्षकों को जनसामान्य को वैदिक सिद्धान्त/मन्तव्य सिखाने-बताने-समझाने व महर्षि के जीवन दर्शन से अवगत करवाने की दृष्टि से बहुउपयोगी **'वेद मन्तव्य व महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन विशेषांक'** प्रकाशित करने जा रहा है।

यह विशेषांक वृहदाकार (लगभग ११×१७ इंच) का होकर इस अंक के सम्पूर्ण पृष्ठ (लगभग १२०) रंगीन होंगे। जिसमें वैदिक मन्तव्य के ५१ चित्र तथा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त घटित प्रमुख घटनाक्रमों के कल्पनाधारित संक्षिप्त विवरण के साथ ५२ चित्र होंगे।

इस विशेषांक में विज्ञापन, शुभकामना सन्देश आदि के द्वारा इस विलक्षण, अद्भुत, संग्रहणीय विशेषांक का लागत व्यय जुटाने के साथ इसे सुसज्जित किया जावेगा और इसे व्यक्तिगत स्तर पर भी उपयोगी व आकर्षक बनाया जावेगा। अत: आप सभी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि आप अपने-अपने आर्य समाजों, संस्थानों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों तथा व्यक्तिगत शुभकामना सन्देश, विज्ञापन आदि तथा दान स्वरूप मुक्त हस्त से सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें। **विशेषांक पृष्ठ की कुछ नमूना प्रति चित्र पृष्ठ २०-२१ पर देखें।**

निर्धारित सहयोग राशि

पूर्ण रंगीन पृष्ठ : ₹ २५०००
१/२ (आधा) पृष्ठ : ₹ १३०००
१/४ (चौथाई) पृष्ठ : ₹ ७०००
अन्य सहयोग स्वेच्छानुसार
एक प्रति : ₹ ११००

(व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु उदारमना बन्धु अग्रिम आदेश प्रदान कर एक से अधिक जितनी चाहें अपनी इच्छानुसार प्रतियाँ प्रकाशित करवाकर अपने इष्ट मित्रों-परिवार जनों को उपहार स्वरूप भेंट कर महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी को अविस्मरणीय बनाकर इस विलक्षण, संग्रहणीय अंक को और अधिक बहुउपयोगी बना सकते हैं।)

● **सुखदेव शर्मा**
(प्रकाशक : वैदिक संसार)
चलभाष : ९४२५०६९४९१

एक विलक्षण व्यक्तित्व : श्रीयुत् दीनदयालजी गुप्त

(रंगीन पृष्ठ क्रमांक २ भी देखें)

● आचार्य राहुलदेव आर्य
धर्माचार्य : पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)
चलभाष : ९६८१८४९४१९

एक विलक्षण व्यक्ति ही अद्‌भुत कार्य कर सकता है। मानो उनका जन्म किसी असाधारण उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ हो। किन्तु यह विलक्षणता भी कोई थाली में परोसकर नहीं मिलती। यह अर्जित करनी पड़ती है। प्रत्येक जीवात्मा का प्रारब्ध बलवान हो यह कोई आवश्यक नहीं है। वरना इस संसार में पुरुषार्थ की कोई कीमत नहीं होती। ऐसे ही किसी की सम्पन्नता को देखकर केवल यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि प्रारब्ध बलवान था, इसलिए मिल गया होगा। यह खुद पर भी प्रश्न चिह्न लगाने जैसा है। लाखों में एक सूरमा ऐसा होता है जो अपना रास्ता खुद बनाता है, या अपना जीवन स्वयं गढ़ता है। जो कठिनाइयों को गले लगाता है। परिश्रम से भागता नहीं है। असफलताओं से घबराता नहीं है। अपितु कठोर परिश्रम के द्वारा हर बाधा विघ्नों को पार करता है। 'कर्म' को अपने जीवन का मूल मन्त्र मानकर निरन्तर 'कर्म' करते चले जाना ही उनका ध्येय बन जाता है। पं बंगाल में आर्यों के सर्वोच्च नेता, प्रसिद्ध समाज सेवी, दानवीर, आर्यरत्न श्रद्धेय श्रीयुत् दीनदयाल गुप्त जी ऐसे ही मार्ग के पथिक है।

श्रद्धेय दीनदयालजी गुप्त

जहाँ साफ सुथरा जीवन, सादगी पूर्ण वेशभूषा, स्वसंस्कृति, सभ्यता के प्रति अगाध श्रद्धा और समर्पण का भाव समुद्र के समान हिलोरे मारता है। जैसे समुद्र उफनती नदियों की बाढ़ और जल प्रलय को भी आत्मसात कर लेता है और विशालता और स्थिरता का परिचय देता है। ऐसे ही विशाल चरित्र और उन्नत विचारों के धनी है आदरणीय प्रधान जी। इनकी उदारता समुद्र के समान उन्नत है। उनका गुणगान केवल इसलिए नहीं है कि वे भौतिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न है, क्योंकि रुपये देने से तो संसार भी स्तुति करता है, किन्तु आध्यात्मिक समाज में लोग रुपये से पहले व्यवहार, वाणी, चरित्र, वेशभूषा, भावना और शुभ कर्म देखते हैं। केवल रुपये से सबकुछ मिलता तो यह कितना आसान हो जाता, पर ऐसा नहीं है। समाज तो आपके कर्म देखता है, आचरण देखता है और आचरण तो बिना तपस्या के नहीं बनता। ईश्वरोपासना, यज्ञ, नियमित स्वाध्याय, सत्संग, विद्वानों का सान्निध्य, ध्यान, जप, दान आदि के द्वारा ही उत्तम आचरण बन पाता है और आत्मा बलवान बनती है। तभी व्यक्ति सम्पन्नता के शिखर पर रहकर भी पतित नहीं होता, विचलित नहीं होता। उसकी तपस्या और कर्तव्यनिष्ठा उसे स्थिर रखने में उसका सहयोग करती है। ऐसी ही उन्नत अवस्था में प्रधान जी का जीवन सुशोभित होकर अन्यों को प्रेरित करता है।

आदरणीय प्रधान जी का जन्म हरियाणा प्रान्त के भिवानी जिला अन्तर्गत मानहेरु नामक गाँव में स्व श्री बालूरामजी गुप्त स्व. श्रीमती सरस्वती देवी की ९ सन्तानों में दूसरी सन्तान के रूप में हुआ। गाँव का यह परिवार गाँव के अनुरूप ठीक ही था। गाँव में खेती थी। गाय भैंस होने से दूध-दही की कमी नहीं थी। इस प्रकार गाँव की मिट्टी से देशी परम्परा से आपका पालन-पोषण हुआ। परिवार में स्कूल जाने की कोई परम्परा नहीं थी। आपको सर्वप्रथम स्कूल जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस बात पर घर में खुशी का माहौल था। कहते है ना कि पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं। परिवार से प्रथम सन्तान का स्कूल जाने का मतलब ही यही था कि ये सौभाग्योदय के लक्षण थे। आप बचपन से ही बड़े निडर थे। किसी काम में घबराते न थे। बाल्यकाल से ही पिताजी के साथ खेतों में परिश्रम का कार्य किया है। पिताजी की आज्ञाओं का पालन आपके लिए सर्वोपरि रहा। स्कूल में पढ़ाई करते हुए आप बहुत तेज थे सभी मास्टरो के प्रिय हो गये थे। उनमें से तो एक मास्टर जी जो हिन्दी पढ़ाते थे। जिनका नाम श्री सूरत सिंह जी है। उनके बारे में आप आज तक कहते हैं कि वे अब तक बहुत चुस्त एवं दुरुस्त हैं। वे ९४ वर्ष के हो गए हैं। आप उनको अपना मार्गदर्शक मानते हैं। इस प्रकार आठवीं तक की पढ़ाई गाँव में पूरी होने के बाद बगल वाले गाँव कितलाना के हाईस्कूल में प्रवेश कराया गया। आपकी पढ़ाई में बहुत रुचि थी। आपने सदैव शिक्षकों का बहुत सम्मान किया। उनकी डाँट और ताड़ना को अमृत और उपयोगी माना। इसका परिणाम यह हुआ कि सारे विषयों में आपकी योग्यता सुदृढ़ होती चली गई। आपके पिताजी बड़े साहसी, मेहनती और निर्भीक थे। उनसे आपको परिश्रमी, निर्भीक एवं निडर रहने की प्रेरणा मिली। पिताजी की यही शिक्षाएँ आपके जीवन को सुदृढ़ बनाने में मील का पत्थर साबित हुई। सन् १९५९ में आपने दादरी से मेट्रिक की परीक्षा पास की। मेट्रिक परीक्षा पास करने वाले आप घर के प्रथम सदस्य थे और वह भी प्रथम श्रेणी में पास करने से घर वाले बहुत प्रसन्न थे।

मेट्रिक के बाद कॉलेज की पढ़ाई भिवानी कॉलेज से ही हो सकती थी, क्योंकि पास में तो वही कॉलेज था। परन्तु पिताजी ने आगे की पढ़ाई के लिये असमर्थता जताई। जिससे आप बहुत निराश हुए। उनको लगता था जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक पढ़ाई हो चुकी है। अब आपको काम पे लगना चाहिए। जिससे घर की स्थिति ठीक से चल सके, क्योंकि नौ भाई बहनों का दायित्व भी सामान्य न था। किन्तु हिसाब-किताब कर सके उसके लिए जरूरी एकाउन्टेसी की पढ़ाई कर ली थी। फिर सबसे पहले महाराष्ट्र के अकोला में पहली नौकरी ढूँढ ली और एक मुनीम के रूप में प्रबंधक का कार्य किया। वहाँ पर कुछ दिन कार्य करने के बाद आप मध्यप्रदेश के मेहर पहुँचे। वहाँ जीवन की बहुत सारी कठिनाई एवं विपत्तियों को झेला और सीखा। अनेक प्रकार की उठा-पटक देखी। पर सदैव ईमानदारी का दामन थामे रहे। कभी गलत को स्वीकार नहीं किया। पिताजी की बहुत सी शिक्षाओं के कारण जीवन में कई स्थानों पर अडिग रह सके किन्तु किसी

कारणवश वहाँ से भी काम छोड़कर घर वापस आ गए। इसी बीच घर में आपके विवाह की तैयारी चल रही थी। माता-पिता ने कन्या देखना या ढूँढ़ना शुरू कर दिया था। मानहेरु की ही कोई कन्या चाँग में ब्याही थी उसकी वजह से ही वहाँ का गोयल परिवार अपका ससुराल हो गया। आपके ससुर श्री प्रेमचन्द जी गोयल थे। जो मध्यप्रदेश के कोरबा में काम करते थे। परिवार वाले जिस तरह की कन्या ढूँढ़ रहे थे। उसी के अनुरूप एक घरेलू, संस्कारी एवं सुशील कन्या जिनका नाम श्रीमती चन्द्रकला जी है, पत्नी के रूप में आपके जीवन में आई। १० जून १९६२ को आपका विवाह हुआ। विवाह के कुछ महीने गाँव में व्यतीत करने के बाद आपके मित्र श्री सत्यनारायण जी गुप्त जिनके साथ आपने एकाउन्टेसी की पढ़ाई की थी उन्होंने आपको पत्र लिखकर कलकत्ता आने के लिए कहा।

कलकत्ता आने को आपने एक बहुत बड़े अवसर के रूप में देखा। स्वाभाविक रूप से बच्चों को दूर भेजने में माता-पिता कतराते हैं। किन्तु आपके उत्साह और हौंसले को देखकर पिताजी भेजने को तैयार हुए और आपसे यही बात कही जिसे आप कई प्रसंगों पर बता चुके हैं - **'बेटा मुझे पता है कि तुम जो करोगे उसमें सफल हो जाओगे किन्तु याद रहे पैसा सब कुछ नहीं है। इसलिए हमेशा ईमानदारी के पथ पर चलना। चाहे जो हो जाए उस राह से कभी न भटकना।'** पिताजी की यही पूँजी लेकर आप कलकत्ता पहुँचे और महात्मा गाँधी रोड़ में १६१/१ बाँगड बिल्डिंग में परसराम राधेमोहन के यहाँ अकाउटेंट का कार्य किया। चीन युद्ध के कारण इस गद्दी में काम मन्दा हो गया था। इसलिए कुछ दिन अन्यत्र भी कार्य किया। फिर एक दिन निश्चय किया कि नौकरी करने से तो मैं एक सीमित दायरे में रह जाऊँगा। व्यापार में असीमित संभावनाएँ हैं, साथ ही जोखिम भी है पर लाभ भी है। फिर सत्यनारायण जी गुप्त के साथ मिलकर होज्यरी में कार्य शुरू किया। वहाँ पर बहुत सा कार्य सिखा किन्तु जीवन का सबसे बड़ा पाठ भी सिखा कि साझा व्यापार में सबकुछ लिखापढ़ी के साथ ही काम करना चाहिए और एक कड़वे अनुभव के साथ वहाँ से भी निकल गये, क्योंकि यहाँ पर आपके साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ था। पर आपने हार नहीं मानी। हर ठोकर कुछ न कुछ सिखाती ही है। अब तक होज्यरी में बहुत कुछ अनुभव हो गया था। **'कर्मशील काम को और काम कर्मशील को ढूँढ ही लेते हैं।'** फिर श्रीकृष्ण होज्यरी जो श्री रामकुमार गुप्त जी की थी उनके साथ पाँच साल तक कार्य किया। वहाँ से कुछ सन्तोषजनक लाभ हुआ। फिर यहाँ कान्ट्रेक्ट पूरा होने पर **'जस्टिस'** और **'ऑनर'** नाम से अपनी एक नई होज्यरी का काम शुरू किया। किन्तु वह भी किसी के नाम से रजिस्टर्ड होने से काम बना नहीं।

फिर एक बार ऐसे ही मध्यप्रदेश के रायगढ़ में (वर्तमान छत्तीसगढ़) गये हुए थे। वहाँ पर एक व्यापारी ने बहुत ही आधुनिक नाम सुझाया और कहा कि **'डॉलर'** नाम बहुत ही उपयुक्त रहेगा। आपको जमाने के अनुसार भी बहुत अच्छा लगा। इस प्रकार **'डॉलर'** ब्राँड का जन्म हुआ। इसके साथ ही मानों सफलता की ओर बढ़ने का प्रथम चरण था या कहे भाग्योदय का प्रथम सोपान था। बंगाल, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्यप्रदेश के छोटे शहरों में आपका उत्पाद बहुत पसन्द किया गया। और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। किन्तु विपत्तियाँ पुरुषार्थियों को कहाँ छोड़ती है? क्योंकि उस समय में कलकत्ता में आये दिन नक्सलियों के हमले हिंसा और बन्दी के कारण काम करना इतना आसान न था। परन्तु धैर्यवानों की असली परीक्षा तो विपत्तियों में ही होती है, **'क्योंकि धारा के प्रतिकूल ही नाविक की परीक्षा होती है।'** आप इन सभी के बीच अनेक समस्याओं का सामना करते हुए भी उत्थान और पतन दोनों स्थितियों में मजबूती के साथ मैदान में डटे रहे।

नब्बे के दशक में व्यापार को तब अधिक गति मिली। जब तमिलनाडु के तिरुपुर में कार्य आरम्भ किया। क्योंकि तिरुपुर होज्यरी के लिये अति प्रसिद्ध था एवं होज्यरी फील्ड का पैतालीस प्रतिशत कार्य यहीं से होता था। अत: यहाँ से कार्य करने का निश्चय किया। ईश्वर कृपा एवं पुत्रों के अथक प्रयास से यहाँ पर भी धीरे-धीरे सफलता मिली। आज यहाँ पर आपकी फैक्ट्री स्थित है। इस प्रकार **'डॉलर'** उद्योग आज अपने कई उत्पादनों के साथ देश का बढ़ता हुआ उद्योग है, जो अपने प्रतियोगियों से अच्छा कर रहा है, और देश से बाहर भी कई देशों में निर्यात कर रहा है, साथ ही सफलता का पर्याय बन चुका है। इस प्रकार भौतिक क्षेत्र में आपकी यह यात्रा बहुत ही तपस्या, परिश्रम, मेहनत, पुरुषार्थ और अनुशासन के साथ शिखर पर अधिष्ठित हुई है जो कि प्रशंसनीय है।

किन्तु भौतिकता से आध्यात्मिक यात्रा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। मनुष्य की मनुष्यता मानवीय गुणों को अपनाने में है। जीवन में भौतिक उन्नति तो बहुत कुछ हो सकती है, किन्तु सब कुछ नहीं हो सकती। ईश्वर विश्वास, मानवीय संवेदना, दया, करुणा, अहिंसा, सत्य, सेवा, क्षमा, निष्काम कर्म, दान, धर्म और मोक्ष तो अध्यात्म में ही है। इसी से मनुष्य जीवन, पूर्ण होता है। अत: आपके जीवन का यह महत्वपूर्ण पक्ष भी है जो आपके जीवन को वैशिष्ट्य प्रदान करता है। घर में पूज्या माता जी से आपको पूजा पाठ के संस्कार प्राप्त हुए थे। सन् १९६७ में जब आप श्री रामकुमार गुप्त के साथ साझेदारी में व्यापार कर रहे थे। तब उनकी संगति से आपका सर्वप्रथम परिचय 'आर्यसमाज' जैसी श्रेष्ठ संस्था से हुआ। उस समय 'आर्यसमाज बड़ा बाजार' की एक शाखा महात्मा गांधी रोड चितपुर क्रासिंग के पास स्थित मियां कटरा नामक बिल्डिंग की छत पर सत्संग के रुप में लगती थी। वहाँ पर श्री रामकुमार गुप्त के साथ आप निरन्तर आने-जाने लगे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं गतिविधियों जैसे सन्ध्या, यज्ञादि अनुष्ठानो को आपने अपने विचारों के बहुत अनुकूल पाया। फिर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित **'सत्यार्थ प्रकाश'** को पढ़कर आपका विश्वास और दृढ़ होता चला गया और आप आर्यसमाज के विधिवत् सदस्य बन गये। सन् १९७० में आर्यसमाज बड़ा बाजार के कार्यकारिणी के सदस्य बने। तभी से प्रारम्भ हुई यह आध्यात्मिक यात्रा आज आपके व्रतानुष्ठान, सेवाभाव, दान और समर्पण के कारण, आपकी यश:कीर्ति पताका को दिग्दिगन्त में फहरा रही है।

'मनुष्य का सही जन्म तो तब होता है जब वह जन्म लेने के उद्देश्य को समझने लगता है।' आर्यसमाज से जुड़कर यह उद्देश्य तो पूर्ण होना ही था। किन्तु आर्यसमाज के अन्य गतिविधियों जैसे राष्ट्रप्रेम, गौ रक्षा, छुआछूत, हिन्दी प्रेम, स्वदेशी वेशभूषा, आचार-विचार, यज्ञ, योग, आयुर्वेद, व्यक्तित्व निर्माण आदि मानवीय गुणों से जीवन में एक विशेष बदलाव आया। दान, दया, करुणा, परोपकार ईमानदारी कर्तव्यनिष्ठा जैसे अनेक गुण जो पहले से ही विद्यमान थे, उनको एक नई गति और उमंग मिल गई। फिर निरन्तर समाज में आने-जाने से, स्वाध्याय करने से, आर्य विद्वानों के सान्निध्य से, जीवन में परिवर्तन होने लगा। अनेक दिनों से जो सैद्धान्तिक उलझने थी वे सुलझने लगी। आपकी रुचि, कर्तव्य भावना और दृढ़

इच्छाशक्ति के कारण लोगों में आपकी स्वीकार्यता बढ़ी। नेतृत्व के गुण जो बचपन से ही थे, आर्यसमाज में आकर उसका और विकास हुआ और आप आर्यसमाज में विभिन्न जिम्मेदारियाँ सम्भालने लगे। आर्यसमाज से जुडने का लाभ आपके व्यक्तित्व और व्यापार पर भी पडा। आज आप दोनों क्षेत्रों में अच्छी उन्नत स्थिति में हैं कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भौतिक क्षेत्र की उन्नतावस्था में भी आपने दुर्गुणों को निकट आने न दिया। आप दुर्व्यसनों, अनैतिक क्रियाकलापों, आडम्बर और दिखावा से कोसों दूर हैं। आत्मचिन्तन और आत्मोत्थान के कार्यों में आप प्रयत्नशील रहते हैं। ईश्वर भक्ति अर्थात् सन्ध्या एवं ध्यान से आपको विशेष लगाव है। यज्ञ में आपकी अपार निष्ठा है। सम्पर्क आने वाले सभी लोगों को एक ईश्वर की उपासना एवं यज्ञ के लिये सदैव प्रेरित करते रहते हैं। आप बहुत स्वाध्यायशील हैं। नियमित रूप से आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय करते हैं। शंका होने पर विद्वानों से समाधान करते हैं। वेद विद्या के प्रचार-प्रसार में सर्वात्मना समर्पित है। दर्शन शास्त्र जैसे गम्भीर विषयों को पढ़ने और समझने की प्रगाढ़ रुचि रखते हैं। सामान्यत: सिद्धान्तों की पकड़ भी बहुत अच्छी है। प्रधान जी बहुत बड़े सत्संग प्रेमी है। व्यापार की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होने के बावजूद आपने कभी सत्संग का निरादर नहीं किया। जब कलकत्ता में होते हैं तब अधिकतर आर्यसमाज बड़ा बाजार के साप्ताहिक सत्संग में आते ही हैं। देश भर में बड़े कार्यक्रमों में आयु के इस ऊर्ध्व पड़ाव के साथ भी भागदौड़ करते रहते हैं। हर कोई आपको बुलाने के लिये उत्सुक रहता है। आप वर्तमान समय में भारत भर की आर्यसमाज की सभी बड़ी संस्थाओं में मानद उपाधि और पद के साथ सुशोभित हैं। यह हमारे आर्य समाज बड़ा बाजार के लिए बहुत ही गर्व की बात है कि हमारे समाज के प्राण स्वरूप हमारे संरक्षक श्रद्धेय प्रधान जी का यश सर्वत्र है।

गुरुकुलों के प्रति प्रधान जी का विशेष अनुराग है। बंगाल में आर्ष गुरुकुलों के पुन: उद्धार एवं संचालन में आपकी अग्रणी भूमिका रही है। सर्वप्रथम कोलाघाट में आर्ष गुरुकुल प्रारम्भ करवाया। अब तो अनेकों गुरुकुलों का संचालन कर रहे हैं। न केवल बंगाल अपितु पूरे भारत वर्ष में अनेकों गुरुकुलों के पिता, पालक और पोषक बनकर नियमित रुप से मासिक खर्चा देकर बहुत बड़ा कार्य कर रहें हैं। गुरुकुलों, आर्य संस्थाओं के पुन: निर्माण, यज्ञशाला, छात्रावास, विद्यालय, कमरों भवन निर्माण आदि बड़े व्ययसाध्य कार्यों में आप भामाशाह की तरह सेवाभाव से दान देकर महान् कार्य कर रहें हैं। यह किसी भी व्यक्तिगत जीवन की बहुत बडी उपलब्धि होती है। आपका गौ प्रेम भी असाधारण है। बंगाल में अनेक वर्षों से गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये आप प्रयासरत हैं। आपके प्रयास से ही यहाँ हाईकोर्ट में गौ हत्या के प्रतिबन्ध पर विजय प्राप्त हुई थी। किन्तु सरकार की उपेक्षा के कारण अनधिकार रुप से यह कार्य यहाँ पर चल रहा है। ओडिशा बंगाल झारखण्ड, बिहार आदि के बार्डर से अनेक बार गौ तस्करी होती हुई गायों को बचाया है। इसी को ध्यान में रखकर आपने खडगपुर के पास **'अखिल भारत गौ रक्षा संस्थान'** के नाम से एक बहुत बड़ी गौशाला बनाई है और साथ में **'गौकरुणानिधि'** नाम से गुरुकुल भी स्थापित किया है। जो संयुक्त रुप से बहुत अच्छे से चल रहें हैं। ऐसे ही सम्पूर्ण भारत वर्ष में हरियाणा से लेकर अन्य प्रान्तों की बहुत सी गौशालाओं से जुड़े हुए हैं। गुरुकुलों में गौ दान करते रहते हैं। आपके जीवन की अनेक विशेषताओं में हिन्दी प्रेम भी उल्लेखनीय है। आपका मानना है कि हमें मातृभाषा को नहीं छोड़ना चाहिए। आप पश्चिमी अन्धानुकरण के सामाजिक प्रवाह में भी प्राचीन भारतीयता के परमोपासक हैं। आपकी सोच बहुत ही दूरदर्शी है। लोगों को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित करते हैं। वेशभूषा का भी जीवन में बहुत ध्यान रखा है। भारतीय वेशभूषा के प्रबल आग्रही हैं। धोती-कुर्ता यही आपकी पहचान है। जीवन के बड़े से बड़े अनुष्ठानों, व्यापार की बड़ी ऊंचाई में पहुँचने के बाद भी आपने अपनी संस्कृति मान्यताओं आचार विचार से समझौता नहीं किया। इस विषय पर अनेक घटनाएं एवं संस्मरण है। जो मैंने अपनी आँखों से कई बार देखे और सुने भी हैं। आप हरियाणा के ठेट देशी एवं किसान के परिवार से आने वाले भूमिपुत्र हैं। बोलने में बिल्कुल स्पष्ट और अन्दाज भी थेट देशी है। किसी को बड़ा कठोर भी लग सकता है किन्तु अन्दर से दयालु हैं। सदैव लोगों की सहायता में तत्पर रहते हैं। व्यक्तिगत लोगों की विद्वानों, कर्मचारियों और दीन, दु:खीजनों की सहायता करते रहते हैं। बीमारी में सुख-दुख में सदैव खड़े रहते है। अपने से फोन करके पूछते है। संसार में विरले लोग होते है जो अपने नाम को सार्थक करते हैं निश्चित रुप से आपने अपने नाम को चरितार्थ किया है। जैसा नाम वैसा गुण।

आर्यसमाज बड़ा बाजार में आप पीछले पचास वर्षों से जुड़े हुए हैं, सभी पदों पर सुशोभित हुए हैं। प्रधान पद का दायित्व लम्बे समय तक निर्विरोध निभाया है। अभी आप आर्यसमाज बड़ा बाजार के संरक्षक हैं और मैं समाज का धर्माचार्य होने के नाते पीछले तेरह चौदह वर्षों से आपसे जुड़ा हुआ हूँ। बड़ी समीपता से आपके जीवन को देखा और परखा है। आपके गुणों और यशस्वी जीवन से प्रभावित होकर ही इस वर्ष आपके जन्मदिवस पर कुछ लिखने का प्रयास किया है। आपके विशाल व्यक्तित्व पर तो और भी बहुत विस्तृत लिखा जा सकता था किन्तु मैंने एक अंश मात्र का ही उल्लेख यहाँ पर किया है। मैंने सामाजिक जीवन के अतिरिक्त प्रारम्भ काल की बातों को विशेष रुप से इसलिए लिखा है क्योंकि मेहनत के दिन बहुत ही खास होते हैं। जो बाद में दिखाई तो नहीं पड़ते पर नीव की तरह छुपे हुए होते हैं। संघर्ष और निर्माण के दिनों को कभी नहीं भुलाया जाना चाहिए।

प्रधान जी का जीवन स्फटिक मणि की तरह उज्वल और अनुकरणीय है। अनेक अवसरों पर हमने आपके अन्दर राष्ट्रप्रेम की वह लौ देखी है जो अन्यों को प्रकाशित करने के लिये जलती रहती है। आपके अन्दर एक पीड़ा है, कि **कैसे हमारा देश पूर्ववत् वेद के अनुसार अपना आचार-विचार, व्यवहार, चरित्र, शिक्षा और संस्कृति में समृद्ध हो।** कैसे हमारा समाज उन्नत हो। परिवारों में लोग जागृत हों। आज का युवा अपनी संस्कृति को समझे और उस पर गर्व करें। आप अपने माध्यम से हर संभव प्रयास करते रहते हैं। ८० वर्ष से अधिक अवस्था में भी आप लगे हुए हैं। निरन्तर भागदौड़ कर रहे हैं। इस प्रकार हमने यह अनुभव किया है कि आप जैसा व्यक्तित्व हजारों में ही कोई एक आता है या बनता है। आप आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के मिशन को सर्वात्मना समर्पित हैं। आप आर्यसमाज के **'रत्न'** कहलाने योग्य हैं। परमात्मा आपको शताधिक आयु प्रदान करें, आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें। यही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

आपके लिये यही कहना चाहूँगा-

नाभिषेको न संस्कारो सिंहस्य क्रियते वने।
विक्रमार्जित सत्वस्य स्ययमेव मृगेन्द्रता।। ■

विरासत में आर्यत्व

● रामनिवास 'गुणग्राहक'
साधु आश्रम, भरतपुर (राज.)
चलभाष : ८७६४२४४१४२

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के तप:पूर्ण जीवन की ज्योति का पावन-प्रखर प्रकाश मानव जीवन के विविध पक्षों को आलोकित करता हुआ इस धरा धाम पर कुछ ऐसा फैला हुआ है कि जो उनके विद्या-अवदान से साक्षात् परिचय नहीं भी रखते, उनके जीवन का प्रगति पथ भी जाने-अनजाने में ऋषि के उपकारों से प्राप्त प्रकाशकणों की अमूर्त आभा का आभारी प्रतीत होता है। महर्षि महिमा को समर्पित अपनी एक ३०० पंक्तियों की वृहद् काव्य रचना में ऋषि के उपकारों की व्यापकता- समग्रता को समेटते हुए मैंने दो पंक्तियाँ लिखी हैं-

''व्यक्ति से लेकर विश्व स्तर और जन्म से लेकर मरने तक।
हर उलझन ऋषि ने सुलझाई, घर करने से भव तरने तक।।''

यद्यपि हम इस लेख में महर्षि- महिमा लिखने के लिए मन बनाकर नहीं बैठे, लेकिन इतना अवश्य बलपूर्वक कहना चाहते हैं कि महर्षि दयानन्द के तप-त्याग और जीवन-बलिदान से लेकर उनकी परोपकार-वृत्ति और लोकहित की भावना को हृदय में स्थान दिए बिना हम वेद के ज्ञान-विज्ञान और वैदिक मर्यादाओं का व्यावहारिक सुख-लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। सुधी आर्यो के ज्ञान-ध्यान में यह बात डालकर आर्य समाज के विस्तार और प्रभाव को व्यापक और चिरस्थायी बनाने के लिए एक अत्यन्त उपयोगी और व्यावहारिक विषय पर चर्चा करना चाहते हैं। लेखक लिखते हैं, पाठक पढ़ते हैं, वक्ता प्रवचन-व्याख्यान करते हैं, श्रोता सुनते हैं। मानव जीवन को सफल, सुखद एवं सानन्द बनाने के लिए जो कुछ होना चाहिए वह सब हो रहा है,फिर भी पता नहीं क्यों हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में मानवीय सद्गुणों,सद्भावों एवं सद्व्यवहार की सुगन्धि नहीं मिलती। लगता है हमनें लिखना-पढ़ना व कहना-सुनना सब कुछ लोक दिखावा मान रखा है। **हमने बिल्कुल भुला दिया है कि लिखना-पढ़ना व कहना-सुनना हमारे जीवन को सही दिशा देने, दोष-दुर्गुण छोड़ने व सद्गुण-सदाचार, सद्भाव-सद्व्यवहार आदि जीवन मूल्यों को स्वीकारने के लिए ही होता है।** लेखक हो या पाठक, वक्ता हो या श्रोता हम सबको अपने इस मानवीय कर्तव्य को सदैव स्मृति पटल पर ताजा और सजीव रखना चाहिए कि हम ऐसा जीवन-निर्माण के लिए ही कर रहे हैं। अगर हमारे लिखने-पढ़ने व कहने-सुनने से ऐसा नहीं हो रहा तो समझो कि अपने व दूसरों के समय का अपव्यय कर रहे हैं। हमारे लेखकों व वक्ताओं का यह कर्तव्य है कि वे वैदिक साहित्य के अपने व्यापक स्वाध्याय से प्राप्त जीवन-सिद्धान्तों को अपने व्यवहार का अंग बनाकर उससे प्राप्त आन्तरिक आनन्द की अनुभूतियों को सबके सुखी होने की भव्य भावना से प्रेरित होकर ही कुछ लिखें व बोलें। पाठकों व श्रोताओं के लिए यह हितकर होगा कि वे मन और मस्तिष्क के सब द्वार खोलकर सजग व निष्पक्ष होकर पढ़ी व सुनी बातों पर विचार करते हुए जीवन से जुड़ी उत्तम शिक्षाओं को मन-मस्तिष्क में रचा-बसा लें, अपने स्वभाव का ऐसा अंग बना लें कि उससे हमारा लोक-व्यवहार निरन्तर निर्दोष-निर्मल होता रहे। जब तक हम इस दिशा में इस ढंग से विचार और व्यवहार करना नहीं सीखेंगे, तब तक लिखने-पढ़ने, बोलने-सुनने का लोक दिखावा होता रहेगा तथा हमारा और हमारी आने वाली पीढ़ियों का जीवन यूँ ही क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति करने और क्षणिक सुख देने वाली सुविधाओं को जोड़ने-जुटाने में नष्ट-भ्रष्ट होता रहेगा। **एक बात डंके की चोट कहना चाहता हूँ, वह यह कि मानव जाति का जब कभी और जहाँ कहीं उद्धार व कल्याण होगा वह लिखने-पढ़ने और सत्योपदेश करने-सुनने सम्बन्धी बताए गए कर्तव्यों का सनिष्ठ पालन करने से ही होगा, दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है।**

अब हम अपने मूल विषय पर आते हैं। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार से लेकर इसके प्रभाव और विस्तार की बाधाओं पर गहन विचार करने वाले एक बात को लेकर सहमत है कि आर्य समाज की वैदिक विचारधारा पारिवारिक स्तर पर पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित नहीं रह पाती। एक आर्य समाजी चाहे वह विद्वान् हो या पदाधिकारी वह अपने पुत्र-पौत्रों आदि सन्तति को वैदिक संस्कारों व पंच यज्ञादि आर्य कर्तव्यों के पालन में प्रवृत्त नहीं रख पाता। कुछ परिवार ऐसे हैं, लेकिन उनकी गिनती व गुणवत्ता सन्तोषजनक नहीं है। ऐसा क्यों नहीं हो पाता, इसके कई अप्रिय कारण गिनाए जा सकते हैं। उन पर चर्चा न करके हमारे परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी ऐसा हो सके, इस पर विचार करना सुखद व सुपरिणाम देने वाला होगा। मेरी बहुत प्रबल इच्छा वर्षों से बनी हुई है कि हम आर्यो के जीवन में आर्यत्व की यह प्रखर ज्वाला सन्तति शृंखला में सतत् जलती रहे ताकि परम्परागत ढंग से हमारे प्रिय पुत्र-पौत्र आदि वैदिक पथ के पथिक बनकर युग परिवर्तन की नींव के पत्थर बन सकें। अपने गहन चिन्तन-मनन एवं वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन के साथ-साथ कई मान्य मनीषी वैदिक विद्वानों से विचार-विमर्श करके मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वंशानुगत रीति-नीति से आर्यत्व को जीवित रखे बिना, वैदिक संस्कारों व जीवन मूल्यों को पुष्पित-पल्लवित किए बिना हम महर्षि के जीवन दर्शन के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाएँगे। अगर हमारी सन्तति को गर्भ से लेकर गोद और गृह में संस्कारों का सम्पोषण व्यावहारिक रूप से नहीं मिलेगा, शैशव से बाल्यावस्था में होते हुए किशोरवय से युवावस्था की यात्रा करने वाले मन-मस्तिष्क को सैद्धांतिक सम्बल प्राप्त न होगा तो वह आगे चलकर जीवन के विषैले-कंटीले झंझावातों में अडिग रहकर वैदिक धर्म का पालन न कर सकेगा, **'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्'** के अभियान में कोई सार्थक भूमिका निभा सकेगा ऐसी आशा करना भी उनकी क्षमता से बहुत अधिक माँगने जैसा ही है। हमें ऐसी पीढ़ी के निर्माण का दृढ़ संकल्प लेना ही होगा, जिसे हमने अपने तप:पूर्ण जीवन से तैयार किया हो। संकीर्ण स्वार्थों और सुविधाजन्य सुखों को ही जीवन की उपलब्धि समझने वाले शाश्वत् सिद्धान्तों के लिए कभी संघर्ष नहीं कर सकते। क्षुद्र स्वार्थों व क्षणिक सुखों के मोहजाल से ऊपर उठकर वैदिक आदर्शों व शाश्वत् सिद्धान्तों को जीवन-मरण का प्रश्न बनाकर संघर्ष करने वाली कोई पीढ़ी इस देश और दुनिया को नहीं मिलेगी तो वैदिक धर्म-संस्कार और शाश्वत् सिद्धान्तों की सुरक्षा-संवृद्धि क्यों कर हो सकेगी? इन मूलभूत तत्वों को हृदयंगम करके हमें ऐसी पीढ़ी के

निर्माण का उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लेना ही होगा। प्रारम्भ में समस्याएँ बड़ी और विकट दिखती हैं, लेकिन संकल्पित जीवन के सामने बड़ी से बड़ी समस्या अपना आकार-प्रकार बदलने लग जाती है। हम बचपन से सुनते-सुनाते आए हैं-

'लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
हिम्मत रखने वालों की कभी हार नहीं होती!!'

तो चलिए लहरों से डरना छोड़ें और हिम्मत को हथियार बनाकर, युग-परिवर्तन का संकल्प लेकर विचार करते हैं कि इसका प्रारम्भ कहाँ से करें- कैसे करें? नर-निर्माण के प्रारम्भ का प्रश्न महर्षि दयानन्द कृत **'संस्कार विधि'** से सरलता से हल हो जाता है। ऋषिवर संस्कार विधि का शुभारम्भ गर्भाधान संस्कार से करते हैं। ऋषि लिखते हैं- **'जो अपने कुल की उत्तमता, उत्तम सन्तान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धि-बल-पराक्रम, विज्ञान और श्रीमान् करना चाहें, वे सोलहवें वर्ष से पूर्व कन्या और पच्चीसवें वर्ष से पूर्व पुत्र का विवाह कभी न करें।'** इतना लिखकर महर्षि बहुत ही हृदयस्पर्शी भाषा में लिखते हैं- **'यही सब सुधारों का सुधार, सब सौभाग्यों का सौभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला कर्म है कि इस अवस्था में ब्रह्मचर्य रखके अपने सन्तानों को विद्या और सुशिक्षा ग्रहण करावें कि जिससे उत्तम सन्तान हो।''** सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास के अन्त में भी महर्षि के शब्द पठनीय व चिन्तनीय होने के साथ करणीय भी हैं- **'जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोपत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते?... परन्तु गृहाश्रम में तभी सुख होता है कि जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों। इसलिए गृहाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और पूर्वोक्त स्वयंवर विवाह है।'** चौथे समुल्लास में ही अन्यत्र ऋषि लिखते हैं- **'ब्रह्मचर्य (पूर्वक) विद्या के ग्रहणपूर्वक विवाह के सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।'** बिगाड़ की भी एक झाँकी ऋषिवर तीसरे समुल्लास में दिखाते हुए लिखते हैं- **'जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् हो तो नित्यप्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे, फिर सुख कहाँ?'**

महर्षि- वचनों के पश्चात् परमेश्वर की पवित्र वेदवाणी से कुछ प्रेरक वचन देना सुधी पाठकों के विश्वास व उत्साह को परिपुष्ट करने वाला होगा। **'जैसी विद्या,गुण, कर्म और स्वभाव वाले पुरुष हों, उनकी स्त्री भी वैसी ही होनी ठीक है। जैसा तुल्य रूप, विद्या, गुण, कर्म और स्वभाव वालों को सुख का सम्भव होता है वैसा अन्यों को कभी नहीं हो सकता।'** (ऋ. १.२२.११) **'सत्पुरुषों को योग्य है कि उत्तम, विदुषी स्त्री के साथ विवाह करें, जिससे अच्छे सन्तान हों और ऐश्वर्य नित्य बढ़ा करें। क्योंकि स्त्री सम्बन्ध से उत्पन्न हुए दु:ख के तुल्य इस संसार में कुछ भी बड़ा कष्ट नहीं है। इससे पुरुष सुलक्षणा स्त्री की परीक्षा करके पाणिग्रहण करें और स्त्री को भी योग्य है कि अतीव हृदय के प्रिय प्रशंसित रूप, गुण वाले पुरुष ही का पाणिग्रहण करें।'** (ऋ.१.११४.१९)

सुधी आर्यजन ऋग्वेद के मंत्र- **'ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता... विदथे सुवीराः।।'** (२.२४.१६) के ऋषिकृत भावार्थ को तनिक श्रद्धा-विश्वास के साथ शान्त मन से पढ़ें, विचारें। **'सब मनुष्यों को उचित है कि सुन्दर नियम से वेद के अर्थों को जान, पूर्ण युवावस्था में स्वयंवर विवाह कर, धर्म से सन्तानों की उत्पत्ति और रक्षा कर यथावत् ब्रह्मचर्य के साथ सुन्दर शिक्षा दें और विद्वान् करके सुख बढ़ावें।'** **'वे ही कन्याएँ सुख को प्राप्त होती हैं जो अपने से दुगने विद्या और शरीर बल वाले अपने सदृश प्रेमी पति की उत्तम प्रकार परीक्षा करके स्वीकार करती है। वैसे ही जो पुरुष प्रेम पात्र स्त्रियों को ग्रहण करते हैं, वे ही परस्पर प्रीतिपूर्वक अनुकूल व्यवहार से वीर्य स्थापन और आकर्षण विद्या को जान गर्भ को धारण, उसका उत्तम प्रकार पालन, सब संस्कारों को करके बड़े भाग्य वाले पुत्रों को उत्पन्न कर अतुल आनन्द और विजय को प्राप्त होते हैं, इससे विपरीत व्यवहार से नहीं।'** (ऋ. ३.५७.३) ऐसे बहुत प्रमाण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जो कि युवक-युवति के ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या प्राप्त कर समान गुण, कर्म स्वभाव वालों के साथ परस्पर की प्रसन्नतापूर्वक विवाह करने-कराने को ही सुखदायक मानते हैं। महर्षि यही नहीं ठहरते वे वर-वधू की परीक्षा के मापदण्ड और मुख्य बिन्दुओं को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- **'दोनों का तुल्यशील, समान बुद्धि, समान आचार, समान रूप आदि गुण, अहिंसकता, सत्य, मधुर भाषण, कृतज्ञता, दयालुता, निर्लोभता, देश का सुधार, विद्या ग्रहण, सत्योपदेश करने में निर्भयता, उत्साह (आदि सद्गुण) अहंकार, मत्सर, ईर्ष्या, काम-क्रोध, कपट, द्यूत, चोरी, मद्यमांसाहार आदि दोषों का त्याग, गृह कार्यों में अति चतुरता हो।'**

इस विषय पर इतना लिख देना ही सज्जनों के विश्वास- व्यवहार को वैदिक धर्म के प्रति समर्पित बनाए रखने के लिए पर्याप्त है। वैदिक धर्म के पुनरोदय का बीजारोपण है। हमारे पुत्र-पुत्रियों को वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान बनाकर वैसे ही गुण, कर्म, स्वभाव वाले वर-वधू का परस्पर विवाह कराकर उनके संस्कारित सन्तानों को ऋषि के स्वप्न को साकार करने में लगा देना। सीधे-सरल शब्दों में कहें तो हमें स्वसन्तान को वैदिक धर्मानुरागी बनाकर ऐसी ही गुण, कर्म, स्वभाव वालों के साथ उनका प्राणिग्रहण कराकर उनसे उत्पन्न सन्तति को अपनी देख-रेख में ऐसी प्रतिभा सम्पन्न,बल-बुद्धि विद्या की दृष्टि से इतना समर्थ बनाना होगा कि वह तीसरी पीढ़ी सच्चे अर्थों में व्यवहार के धरातल पर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार और विस्तार कर सके। सम्भवत: कुछ लोगों को यह अच्छा न लगे, लेकिन **कड़वा सच यह है कि हम आर्य कहलाने वाले मूलतः पौराणिक पाखण्ड व अन्धविश्वासों की गोदी में पले-पढ़े हैं। आगे चलकर भले ही हमें सौभाग्य से वैदिक धर्म के विचार-सिद्धान्त मिल गए हों। उनके संसर्ग में आकर हम अधकचरे आर्य समाजी ही बन सके हैं, आर्योचित गुण, कर्म, स्वभाव आज भी हमारे जीवन में केवल दिखावे तक ही हैं।** मनोविज्ञान कहता है कि बचपन में अबोध और अर्धबोध मन-मस्तिष्क पर पारिवारिक व सामाजिक परिवेश के जैसे संस्कार पड़ जाते हैं, वे पचपन तक पीछा नहीं छोड़ते। यही कारण है कि आज भी हमारे आर्य कहलाने वाले बन्धु पुत्र-पुत्रियों के वैवाहिक सम्बन्धों के लिए पुराणपन्थी जातिवादी परम्परा के अनुसार जाति-गोत्र का बखेड़ा छोड़कर वेद वर्णित और महर्षि मनु से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त ऋषि–मुनियों द्वारा समर्थित वर-वधू के गुण, कर्म, स्वभाव की समानता पर तनिक भी ध्यान नहीं देते। **(क्रमशः आगामी अंक में)**

श्रीमद् भगवत् गीता में ज्ञान की महत्ता और ज्ञान प्राप्ति

● **शिवनारायण उपाध्याय**
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४–२५०१७८५

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए लिखा है, ज्ञान से अधिक मूल्यवान् कोई भी दूसरी वस्तु नहीं है। सभी वैदिक विद्वानों का भी यह मत है कि ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। मुक्ति के विषय में लिखते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में मुक्ति के साधनों में प्रथम स्थान विवेक को ही दिया है। दूसरे सभी अन्य आचार्यों का भी यही मत है। श्रीमद् भगवत् गीता भी इसी मत का समर्थन करती हुई जान पड़ती है। इस लेख में हम गीता के आधार पर ही ज्ञान की महत्ता एवं ज्ञान की प्राप्ति पर विचार करेंगे।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मानि विन्दति।। गीता ४.३८।।

अर्थ- **(इह)** इस संसार में **(ज्ञानेन)** ज्ञान के **(सदृशम्)** समान **(पवित्रम्)** पवित्र करने वाला **(हि)** निश्चय से कोई दूसरा **(न)** नहीं **(विद्यते)** दिखाई देता है। **(योग संसिद्धः)** जिसका योग भली-भाँति सिद्ध हो गया है (वह कर्मयोगी) **(तत्)** उस तत्व ज्ञान को **(कालेन)** अवश्य ही **(स्वयम्)** स्वयं **(आत्मानि)** अपनी आत्मा में, अपने आप में **(विन्दति)** पा लेता है।

भावार्थ- इस पृथ्वी लोक में मानव जीवन के कल्याण के लिए ज्ञान के समान पवित्र करने वाला दूसरा कोई भी साधन उपलब्ध नहीं है। बिना योग के पूर्ण ज्ञान कभी भी प्राप्त नहीं होता है। जिस योगी को योग भली प्रकार से सिद्ध हो जाता है वह तत्व ज्ञान को भी प्राप्त कर लेता है।

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञान यज्ञः परन्तप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्तमे।। गीता ४.३३।।

अर्थ- **(परन्तपः पार्थ)** हे तपस्वी अर्जुन! **(द्रव्यमयात्)** द्रव्यमय **(यज्ञात्)** यज्ञ से **(ज्ञान यज्ञः)** ज्ञानयज्ञ **(श्रेयान्)** श्रेष्ठ है। **(सर्वम्)** सम्पूर्ण **(कर्म)** कर्म (और) **(अखिलम्)** पदार्थ **(ज्ञाने)** ज्ञान **(तत्व ज्ञान)** में **(परिसमाप्तमे)** समाप्त हो जाते हैं, लीन हो जाते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए जिज्ञासु मनुष्य क्या करे? इस पर श्रीमद् भगवत् गीता का कथन है-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परि प्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।। गीता ४.३४।।

अर्थ- **(तत्)** उस तत्व ज्ञान को **(विद्धि)** (तत्वदर्शी ज्ञानी महापुरुष के पास जाकर) समझ **(प्रणिपातेन)** उनको साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करने से **(सेवया)** उनकी सेवा करने से और **(परिप्रश्नेन)** सरलतापूर्वक् प्रश्न करने से **(ते)** वे **(तत्वदर्शिनः)** तत्वदर्शी **(अनुभवी)** **(ज्ञानिनः)** ज्ञानी महापुरुष **(ज्ञानम्)** (तुझे उस) तत्व ज्ञान का **(उपदेक्ष्यन्ति)** उपदेश देंगे।

भावार्थ- ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी श्रेष्ठ शास्त्रज्ञ ज्ञानी पुरुष की शरण में जाकर उनका सम्मान करके, उसकी सेवा करके उनसे सरलतापूर्वक प्रश्न करना चाहिए। तब वे ज्ञानी महापुरुष तत्व ज्ञान का उपदेश देंगे।

तत्व ज्ञान का फल क्या होगा इस पर कहा गया है-

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेव वास्यसि पाण्डव।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि।। गीता ४.३५।।

अर्थ- **(यत्)** जिस (तत्व ज्ञान) का **(ज्ञात्वा)** अनुभव करने के बाद **(तू)** (पुनः) फिर **(एवम्)** इस प्रकार **(मोहम्)** मोह को **(न)** नहीं **(यास्यसि)** प्राप्त होगा। **(पाण्डव)** हे अर्जुन! **(येन)** जिस (तत्व ज्ञान) से **(भूतानि)** (तू) सम्पूर्ण प्राणियों को **(अशेषेण)** निःशेष भाव से (पहले) **(आत्मनि)** अपने में (और) **(अथो)** उसके बाद **(मयि)** मुझ ईश्वर में **(द्रक्ष्यसि)** देखेगा।

भावार्थ- तत्व ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को मोह नहीं होता है। तत्व ज्ञान से मनुष्य सम्पूर्ण प्राणियों को निःशेषभाव से पहले अपने में और फिर परमात्मा में देखता है।

(श्लोक में कृष्ण ने अपने को परमात्मा कहा है वह वेदानुकूल नहीं है।)

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।। गीता ४.३७।।

अर्थ- **(अर्जुन)** हे अर्जुन! **(यथा)** जैसे **(समिद्धः)** प्रज्वलित **(अग्निः)** अग्नि **(एधांसि)** ईंधन को **(भस्म सात्)** सर्वथा भस्म **(कुरुतो)** कर देती है **(तथा)** ऐसे ही **(ज्ञानाग्निः)** ज्ञान रूपी अग्नि **(सर्व कर्माणि)** सम्पूर्ण कर्मों को **(भस्मसात्)** सर्वथा भस्म **(कुरुते)** कर देती है।

भावार्थ- इस लोक में कहा गया है कि जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि ईंधन को जला देती है वैसे ही ज्ञानाग्नि सम्पूर्ण निकृष्ट कर्मों को सर्वथा भस्म कर देती है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए शास्त्रों और उपदेशक में श्रद्धा भी होना आवश्यक है। गीता में इस विषय में कहा गया है-

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिचिरेणाधिगच्छाति।। गीता ४.३९।।

अर्थ- **(संयतेन्द्रियः)** जो जितेन्द्रिय (तथा) **(तत्परः)** साधन परायण है (ऐसा) **(श्रद्धावान्)** श्रद्धावान् पुरुष **(ज्ञानम्)** ज्ञान को **(लभते)** प्राप्त होता है (और) **(ज्ञानम्)** ज्ञान को **(लब्ध्वा)** प्राप्त करके (वह) **(अचिरेण)** तुरन्त **(पराम्)** परम **(शान्तिम्)** शान्ति को **(आधि गच्छति)** प्राप्त हो जाता है।

भावार्थ- जितेन्द्रिय, साधन परायण और श्रद्धावान् पुरुष ज्ञान प्राप्त करने में सफल हो जाता है। ज्ञान को प्राप्त करके वह तुरन्त शान्ति को भी पा लेता है। ज्ञान प्राप्ति में कैसा व्यक्ति असफल रहता है इस पर कहा गया है-

अज्ञश्चा श्रद्धाधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।। गीता ४.४०।।

अर्थ- **(अज्ञः)** विवेकहीन **(च)** और **(अश्रद् दधानः)** श्रद्धाहीन **(संशयात्मा)** संशयात्मा मनुष्य के लिए **(न)** न तो **(अयम्)** यह **(लोकः)** लोक (हितकारक) **(अस्ति)** है **(न)** और नहीं **(परः)** परलोक (हितकारक) है **(च)** और **(न)** न **(सुखम्)** सुख ही है।

भावार्थ- विवेकहीन और अश्रद्धालु संशयात्मा मनुष्य के लिए लोक–परलोक दोनों ही हितकारक नहीं है। वह सुखी जीवन भी नहीं पा सकता है। **इतिशम्।** ■

आर्य समाज राजोदा, जिला देवास (म.प्र.) के तत्वावधान में

संगीतमयी रामकथा (वाल्मीकि रामायण आधारित)

दिनांक : १५ से १९ जनवरी २०२४

स्थान : ग्राम राजोदा, जिला देवास

वैदिक प्रवक्ता : **सुश्री अंजलि आर्या,** करनाल (हरियाणा)

चतुर्वेद शतकम यज्ञ

यज्ञ ब्रह्मा : **आचार्य विश्वामित्र आर्य**

सम्पर्क : **प्रधान हरिसिंह ठाकुर** (९४२५०४८११९)

ऋण है चुकाना

तुमको है करना, यह काम परम् हितकारी का।
ऋण है चुकाना, उस योगी ब्रह्मचारी का।।
गऊ माता करे पुकार, उसके गले पर चल रही कटार।
लाखों नित्य दी जाती मार, इनको बचाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...१
ईश्वर का सच्चा ज्ञान जो, वेदों में विद्यमान जो।
भूल गया जहान् जो, फिर से उसे फैलाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...२
भ्रूण हत्या की क्रन्दन आवाज, आती है चारों ओर से आज।
अत्याचार भारी करे समाज, इनको बचाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...३
मदिरा पिशाचिनी का ठना राज, मन्त्रीगण ही पहनाते ताज।
आर्यों का यह प्रथम काज, इसे मार भगाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...४
आज नेता बन रहे हैं हैवान, केवल कुर्सी का उनको ध्यान।
बिगाड़ दिया सब खान-पान, फिर से क्रान्ति लाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...५
सरकार में त्यागी, तपस्वी लोग हों, न किसी में रिश्वत का रोग हो।
बदमाशों का राजनीति में न प्रयोग हो, ऐसा स्वच्छ प्रशासन लाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...६
धर्म निरपेक्षता का बना विधान, देश को बना दिया श्मशान।
लूटा जा रहा हमारा स्वाभिमान, धर्म सापेक्ष देश बनाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...७
जब वैदिक धर्म का प्रचार होगा, सभी मानव से मानव का प्यार होगा।
तभी सर्वत्र सुख का संचार होगा, 'खुशहाल' बन खुशी मनाना...
यह काम परम् हितकारी का, ऋण है चुकाना...८

● **खुशहालचन्द्र आर्य**
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

सच्चे ईश्वर भक्त बनो

जगदीश्वर के गुण गाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।
ईश्वर है निर्लेप निरंजन, निराकार वह दाता।
वह सर्वज्ञ सर्वव्यापक है, जग का है निर्माता।।
उसको समझो, समझाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।१।।
अजर–अमर सर्वशक्तिमान है, है सर्वान्तर्यामी।
माता–पिता गुरु है सच्चा, दुनिया का है स्वामी।।
तुम उसे प्रेम से ध्याओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।२।।
सूरज, चाँद, सितारे, पृथ्वी, प्रभु ने अजब बनाए।
भाँति–भाँति के पशु–पक्षी हैं, सबके मन को भाए।।
तुम उसे नहीं बिसराओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।३।।
बिन आँखों के देख रहा है, सबका भाग्य विधाता।
बिन हाथों के जग को रचता, ऐसा है निर्माता।।
तुम शरण उसी की आओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।४।।
मात गर्भ में बालक को वह, दाल भोजन देता।
बदले में भगवान किसी से, कौड़ी एक न लेता।।
उस प्रभु के दर्शन पाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।५।।
कर्मों के अनुसार सभी को, फल देता न्यायकारी।
उससे कोई न बच पाता, धनी, वीर, बलधारी।।
तुम वैदिक धर्म निभाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।६।।
राम–कृष्ण, विक्रम जैसे, सब चले गए बलधारी।
बाली रावण कुम्भकर्ण से, रहे न अत्याचारी।।
तुम ज्यादा मत बौराओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।७।।
शुभ कर्मों से दिया प्रभु ने, हमको मानव चोला।
वेद, शास्त्र दर्शाते हैं, यह चोला है अनमोला।।
तुम कुछ तो लाभ उठाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।८।।
कुटुम्ब कबीला, महल हवेली, काम नहीं आएँगे।
बेटा, पोते, पत्नी, भाई, साथ नहीं जाएँगे।।
जागो, तुम धर्म कमाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।९।।
दुर्गुण त्यागो सद्‌गुण धारो, चाहो अगर भलाई।
'नन्दलाल' निर्भय अपनाओ, वैदिक पथ सुखदाई।।
वृथा मत समय गँवाओ रे, दुनिया के नर–नारी।
जीवन को सफल बनाओ रे, दुनिया के नर–नारी।।१०।।

● **पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य**
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता

● **डॉ. सत्यपाल सिंह** *आई.पी.एस.*
सांसद : बागपत संसदीय क्षेत्र
पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं
पूर्व पुलिस कमिश्नर– पुणे, मुम्बई व नागपुर

भारतीय संस्कृति के प्राचीन प्रवाह का उद्‌गम अपौरुषेय वेदज्ञान से आरम्भ हुआ। लाखों–करोड़ों वर्ष पहले जब प्रथम मानवों का जन्म इस धरती पर हुआ, उन्हें जीवन साधन, आपसी व्यवहार तथा प्रगति पथ सिखाने के लिए जिस ज्ञान–सरणी को, जीवन को सुसंस्कारित करने के लिए जिस संविधान को दिया गया उसका नाम **'संस्कृति'** पड़ा। वह संस्कृति केवल मात्र भारत के लिए न थी– वह तो विश्व जनीन मानव संस्कृति थी। पर क्योंकि इस संस्कृति को भारतीय मनीषियों ने, ऋषि–मुनियों ने आगे बढ़ाया, प्रचारित व प्रसारित किया, इसलिए इस संस्कृति का नाम ही **'भारतीय सरस्वती'** अथवा **'भारतीय संस्कृति'** पड़ गया। भारत का अर्थ ही है जहाँ प्रकाश (ज्ञान) व्याप्त हो (भा = प्रकाश, रत = व्याप्त), जहाँ ज्ञान की पूजा होती हो।

पर यह भारतीय संस्कृति जिसे वैदिक संस्कृति ही कहा जा सकता है– हजारों वर्ष पहले तक सारे विश्व में फैली थी। जहाँ संस्कृति थी, वहीं सभ्यता थी– अन्यथा विश्व के विभिन्न भागों में हजारों ही नहीं– कुछ सैकड़ों वर्ष पूर्व तक लोग जंगली जीवन यापन कर रहे थे। जिन्हें इस विश्व व्याप्त वैदिक संस्कृति के सुदूर इतिहास को जानने की उत्सुकता है– तो उन्हें ई. पोकोक लिखित **'इंडिया इन ग्रीस'** (१८५१), लुईस जैकालियट लिखित **'ला बाइबल इन्स ल इण्डे'** अर्थात् **'बाइबल इन इण्डिया'** (१८७६), हरबिलास शारदा की **'हिन्दू सुपीरयरटी'** (१९०६), क्यूमोन्ट फ्रेंज लिखित **'दी ओरिएंटल रिलीजन्स इन रोमन पैगानिज्म'** (१९११), भगवद्दत्त लिखित **'भारत का इतिहास'** (१९४०), पी.एन. ओक लिखित **'वर्ल्ड वैदिक हैरिटेज'** (१९८४), रविप्रकाश आर्य की **'इण्डिया : द सिविलाइजर ऑफ दी वर्ल्ड'** (२००५) आदि पक्षपात रहित प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थ तथा वेदव्यास लिखित **'महाभारत'** (इस युद्ध में दुनिया के अनेक देशों के राजा तथा उनकी सेनाओं ने भाग लिया था), आदि पुस्तकों का अध्ययन करना उपयुक्त होगा।

यह भारतीय संस्कृति प्रथम थी, विश्ववारा थी **(सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा:)**। दुनिया के सभी मनुष्यों को एक ही ईश्वर की सन्तान मानती थी। **'माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्यां'** अथर्ववेद १२.१.१२– अर्थात् भूमि हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हैं। **'भवति विश्वं एक नीडम्'** (ऋग्वेद) सारा विश्व एक नीड़ (घोंसले) की तरह (न कि आज का ग्लोबल विलेज) बन जाये। दुनिया के सभी प्राणियों को (न केवल मनुष्यों को ही) मित्र की दृष्टि से देखने का उपदेश करती है। **(मित्रस्य मा चक्षुसा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् वत्सं जातमिवाघ्न्या।** अथर्व ३.३०.१) इस भारतीय संस्कृति ने ही विश्व में सबसे पहले आम भाषा में नारा दिया था **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अर्थात् सारी दुनिया एक परिवार है। ऐसा घोष विश्व के अन्दर और किसी सभ्यता अथवा संस्कृति ने न किया।

इस भारतीय संस्कृति ने कभी भी मानव–मानव में जाति, मत, सम्प्रदाय (धर्म), लिंग, रंग, क्षेत्र, अथवा देश के नाम पर कोई भेदभाव न किया। इसने तो दुनिया के सभी मनुष्यों को एक ही जाति (मानव) का नाम दिया और घोषणा की कि जाति की पहचान तो समान प्रसव है (**समान प्रसवात्मिका जातिः**। योग दर्शन)। जब दुनिया के सभी मनुष्य एक ही तरह उत्पन्न होते हैं तो उनकी जाति अलग–अलग कैसे हो सकती है?

भारतीय संस्कृति एक आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक संस्कृति है। इसके अनुसार इस सुन्दर, व्यवस्थित, नियमित, उद्देश्यपूर्ण व परिपूर्ण सृष्टि के मूल में एक सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान व स्वयंभू सत्ता है– जिसे ईश्वर आदि नामों से अभिहित किया गया है। ईश्वर **'सत् चित् आनन्द'** की तलाश में है। यह ईश्वर एक ही है, पर गुण–कर्म–सम्बन्धों के आधार पर अलग–अलग अनन्त नामों– यथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, गणेश, रुद्र आदि से जाना जाता है। वेदों ने स्पष्ट ही कहा है–

य एको अस्ति। –ऋग्वेद ८.१.२७

वह एक ही है तथा–

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निर्माहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमे माहरिश्वानमाहुः।।

–ऋग्वेद १.१४६.४६

अर्थात् इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि आदि एक ही परमेश्वर के नाम हैं क्योंकि विद्वान् ऋषि लोग उस एक को ही विभिन्न नामों से सम्बोधित करते हैं। भारतीय संस्कृति ने राष्ट्रीय एकता व विश्व शान्ति के लिए एक ही 'देव; एक ही ईश्वर– अर्थात् एकेश्वरवाद को माना। इस संस्कृति ने यह भी माना कि वेद व वैदिक भाषा ज्ञान की आदि स्रोत है। अत: वैदिक भाषा से निकली 'संस्कृत' भाषा को देवभाषा कहा और उसे सारे देश में सम्मान का स्थान दिया। **जिस राष्ट्र में एक देव, एक सी पूजा पद्धति तथा एक भाषा होगी वहाँ राष्ट्रीय एकता का बिगुल बजता ही रहेगा।** देश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब तक संस्कृत भाषा को देश के सभी विद्यालयों में पढ़ाया जाता रहा, तब तक सारा देश एक अखण्ड राष्ट्र की तरह गौरवान्वित रहा।

भारतीय संस्कृति ने इस विश्व को परमेश्वर का साकार रूप (**पुरुष एवेदं सर्वम्** –यजुर्वेद ३१.२) माना। यह विश्व सत्य है, पूर्ण है (**पूर्णमदः पूर्णमिदं**), तथा यह विश्व **'सत् चित् आनन्द'** है। जीव ईश्वर का अमृत पुत्र है। मानव शरीर देव मन्दिर या सात ऋषियों का आश्रम है। यह शरीर तो ८ चक्रों व ९ द्वारों वाली अयोध्या है। वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य को अपने कर्तव्य–कर्मों से, उत्तम शासन व्यवस्था द्वारा तथा आपसी प्रेम–भाव–मित्रता व एकता से इस धरती को स्वर्ग बनाना है। भारतीय संस्कृति की घोषणा थी कि **'समुद्र पर्यन्तायाः पृथिव्याः एकराट्'** अर्थात्

समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का एक ही शासक है।

अगर भगवान बुद्ध जैसे महापुरुषों ने इस दुनिया को **'सर्वंक्षर्णिकं, सर्वं दुखमयं व सर्वं अनीश्वरं विश्वं'** अर्थात् यह सारा विश्व तो क्षरिक है, सारा जग दुःखमय व अनीश्वर है कहा, तो आचार्य शंकर ने कहा– **'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या'**– केवल ब्रह्म ही सत्य है, नित्य है और यह जगत् तो माया है, मिथ्या है, झूठ है। ऐसे विचारों का वैदिक संस्कृति ने कभी भी अनुमोदन न किया। इस संस्कृति ने विश्व को **'सर्वं आनन्दमयं'** कहा अर्थात् यह विश्व तो एक आनन्ददायक रंगमंच (प्लेटफॉर्म) है– अगर इसे सब मिलकर स्वर्ग बनाने का संकल्प लेकर काम में लग जायें। यह मानव शरीर एक दुर्लभ रत्न है न कि मल–मूत्र का पिंजरा। अगर यह दुनिया दुःख देने वाली है, बन्धन का कारण है, स्त्रियाँ पापिन तथा नरक का द्वार हैं तो इसको अच्छा बनाने का, सुधारने का, सामुदायिक काम करने का, राज्य शासन लाने का, चलाने का कोई अर्थ ही नहीं। इस निराशावाद का, इस त्यागवाद का, इस दुनिया से भाग जाने के तथाकथित अध्यात्म विचारों का भारतीय मनीषियों ने कभी भी समर्थन नहीं किया।

इसलिए भारतीय संस्कृति वह नहीं है जिसका इतिहास २–३ हजार या ५ हजार वर्ष पुराना हो। यह संस्कृति बौद्ध, जैन व सेमेटिक मतों पर आधारित भी नहीं है। यहाँ तत्व व मिथ्या का समन्वय भी नहीं हो सकता।

भारतीय संस्कृति ने एक सुन्दर, सुदृढ़ व स्वर्ग समान राष्ट्र निर्माण करने का उपदेश दिया। अथर्ववेद (१९.४१.१) का ऋषि कहता है–

भद्रमिच्छन्तः ऋषयः स्वर्विदः तपो दीक्षामुपसे दुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उप सं नमन्तु।।

अर्थात् ''सब मनुष्यों की कल्याण की भावना से तत्वदर्शी ऋषियों ने दीक्षा (संकल्प) लेकर गम्भीर परिश्रम करके 'राष्ट्र' का निर्माण किया। उस राष्ट्र से सामूहिक बल व ओज प्रकट हुए। इसलिए सभी मनुष्य इस राष्ट्र (देव) के सामने नतमस्तक हो।'' सभी नागरिक राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तत्पर रहे तथा राष्ट्रशक्ति कभी भी कमजोर न होने दें। अपना राष्ट्र एक राष्ट्रपुरुष की भाँति एकता के सूत्र में बँधा हो ताकि शत्रु उसकी तरफ आँखें उठाकर भी देखने का साहस न कर सकें। इसलिए संस्कृति ने **'संगठन सूत्र'** का उद्घोष किया :

सगंच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
समानो मन्त्रः समिति समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मंत्रोऽभिमन्त्रये वा समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

–ऋग्वेद १०.१९१.२–४

राष्ट्र में एकता तभी तक स्थायी होगी जब तक इसके सभी निवासी एकसाथ मिलकर चलने का, एकसाथ मिलकर बोलने का, सबके मन विचार, चित्त तथा हृदय अविरोधी अर्थात् एक से रखने का संकल्प लेंगे। सब मिलकर समस्याओं का हल निकालेंगे, सब मिलकर प्रगति पथ को प्रशस्त करेंगे तथा सभी मिलकर, अगर आवश्यकता पड़ी तो, राष्ट्र सम्मान के लिए, राष्ट्र रक्षा के लिए अपनी आहुति देने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्वों का, भारतीय संस्कृति ने अच्छा निरूपण किया और इन एकता के शत्रुओं का कैसे सफलतापूर्वक, सतत् रूप से मुकाबला किया जाए, इसको भी स्पष्टतया देशवासियों के सामने रखा। राष्ट्र समाज के ४ ही मुख्य शत्रु हैं– अज्ञान, अन्याय, अभाव व आलस्य।

जिस राष्ट्र में ज्ञान–विज्ञान–तकनीकी नहीं, वह चाहे अन्दर से कितना भी सुरक्षित, कितना भी समृद्ध, धनी व कितना ही आलस्य प्रमाद रहित हो, वह सुखी व स्वर्ग सम नहीं हो सकता। बाहर का कोई भी शत्रु जिसके पास अच्छा ज्ञान है, आधुनिक शस्त्र–अस्त्र बनाने की विज्ञान– तकनीक है, वह देश पर आक्रमण करके राष्ट्रवासियों को परास्त करके सब धन–वैभव लूटकर ले जा सकता है। दूसरे, जिस राष्ट्र में ज्ञान नहीं, उसकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कैसे होगा? कौन राष्ट्र के बच्चों को, युवक–युवतियों को अच्छे संस्कार देगा? कौन उन्हें शारीरिक–मानसिक रोगों से लड़ने की कला सिखाएगा? जहाँ समृद्धि है पर ज्ञान का अभाव है, संस्कारों का महत्व नहीं, वहाँ भोग विलास में लोग पड़कर अपने वर्तमान व भविष्य दोनों को बिगाड़ लेते हैं। वहाँ सृजनता समाप्त हो जाती है। इसलिए भारतीय संस्कृति ने उद्घोष किया **'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'** गीता–४.३८ अर्थात् ज्ञान जैसी दूसरी और कोई पवित्र वस्तु नहीं है। तथा अज्ञान सभी दुःखों का मूल है। इसलिए अज्ञान रूपी अन्धेरे से युद्ध करने के लिए बुद्धिजीवी 'ब्राह्मण' की आवश्यकता है।

राष्ट्र समाज का दूसरा मुख्य शत्रु 'अन्याय' है। जिस राष्ट्र में बुद्धि है, ज्ञान–विज्ञान है, समृद्धि है, पर कोई भी कमजोर को सताकर, लूटकर चला जाता है। कानून–नियमों को तोड़ने वालों को, बुरे कर्म करने वालों को, पापियों को दण्ड देने वाला शासन नहीं है, अथवा भ्रष्ट व कमजोर है तो नागरिक कैसे सुखी–प्रसन्न रह सकते हैं? इसलिए भारतीय संस्कृति ने कहा– समाज में, राष्ट्र में एकता चाहते हो तो समाज का, विशेषकर कमजोर वर्गों का रक्षण करने का तथा गलत काम करने वालों को, कानून–व्यवस्था को भंग करने वालों को, अन्यायियों को, बिना किसी भय व पक्षपात के दण्ड देने का विधान हो, एक मजबूत व्यवस्था हो। जहाँ अन्याय है, अन्याय की भावना है, वहाँ आतंकवाद भी आ सकता है। अतः कानून का शासन हो तथा राष्ट्र में शासन करने वाले अच्छे प्रशिक्षित, समझदार, ईमानदार, शक्तिशाली रक्षक क्षत्रिय वर्ग हो। **'शस्त्रेण रक्षिते देशे शास्त्र चर्चा प्रवर्तते'**– अर्थात् जहाँ शस्त्र नहीं, वहाँ शास्त्र नहीं। जहाँ सच्चे पहरेदार नहीं, वहाँ अच्छे इल्मदार नहीं। इसके लिए ही भारतीय संस्कृति के सभी देवी–देवता शस्त्रधारी हैं। वेद ने स्पष्ट आदेश दिया है–

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।। –यजु. २०.२५

अर्थात् जहाँ शस्त्र व शास्त्र, बुद्धिजीवी व बहादुर लोग दोनों साथ–साथ चलते हों, रहते हों, ऐसे राज्य में ही देवता बसते हैं अर्थात् धरती पर स्वर्ग का निर्माण होता है। ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

सनातन वैदिक धर्म के संरक्षण हेतु समर्पित 'वैदिक संसार' पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

श्री मोहनलालजी भाट
वेद ज्ञान पिपासु
लस्सानी दोयम, अजमेर

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

स्मृति शेष
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सा.आ.प्र. सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री रामफलसिंहजी आर्य
वैदिक प्रवक्ता
भिवानी (हरियाणा)

श्री शिवनारायणजी उपाध्याय
वेद मर्मज्ञ
कोटा (राजस्थान)

आ. सत्यसिन्धु जी आर्य
प्राचार्य : आर्ष गुरुकुल
नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मप्र)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

आचार्य वाचोनिधिजी आर्य
जीवन प्रभात
गान्धीधाम, गुजरात

श्री दीनदयालजी गुप्ता
प्रधान : आर्य प्र.सभा बंगाल
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री रमेशमुनि वानप्रस्थी
वेद सैनिक
कोलकाता (प.बंगाल)

श्री आनन्ददेव जी आर्य
आर्यत्व के प्रतिमान
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री जयदेव जी आर्य
उद्योगपति एवं दानवीर
राजकोट (गुजरात)

न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी
पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान
जयपुर (राज.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री- आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राज.)

श्री रमेशचन्द्रजी भाट
वैदिक ज्ञान पिपासु
अजमेर (राज.)

कर्नल चन्द्रशेखरजी शर्मा
वेद ज्ञान पिपासु
उदयपुर (राज.)

स्मृति शेष
श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
आगरा (उ.प्र.)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री समाधान जी पाटिल
वैदिक धर्मनिष्ठ युवा
जलगाँव (महाराष्ट्र)

श्री रामभजनजी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री नरेश जी दम्मीवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सीतारामजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री लक्ष्मीनारायणजी पाटीदार (आर्य) संभाग प्रभारी, उज्जैन
विक्रम नगर (मौलाना), म.प्र.

श्री शंकलालजी लदरेचा
वरिष्ठ समाजसेवी
बीकानेर (राज.)

श्री बालकृष्णजी गुप्त
संयुक्त कलेक्टर (से.नि.)
ग्वालियर (म.प्र.)

श्री अशोक कुमारजी गुप्ता
वैदिक ज्ञान पिपासु
शिवपुरी (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वैदिक भामाशाह
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री ब्रह्मदत्तजी शर्मा
वैदिक धर्म प्रेमी
रोहतक (हरियाणा)

श्री रामचन्द्रजी कारपेन्टर
से.नि. शिक्षक
ब्यावरा (म.प्र.)

श्री शीतलकुमारजी पटेल
वेद भक्त युवा
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री मोहनलालजी दशोरा
वैदिक साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

आर्य समाज चिचोली, जिला बैतूल के प्रधान अशोक जी, मन्त्री संजीव जी, कोषाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण जी साथियों के साथ वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का भावभीना अभिनन्दन करते हुए।

श्री श्रीराम कुमार आर्य
पूर्व जिला शिक्षा पदाधिकारी
सरसोल खुर्द, शिवहर (बिहार)

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

श्रीमती सुमित्राजी - श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
योग प्रशिक्षिका उदारमना धर्मनिष्ठ
नरोड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)

वयोवृद्ध स्वामी कल्पानन्दजी सरस्वती
उज्जैन (म.प्र.)

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर वैदिक संसार द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले विशेषांक के कुछ पृष्ठों की झलक

विशेषांक सहयोगार्थ विनम्र अनुरोध पृष्ठ ९ पर अवश्य पढ़ें

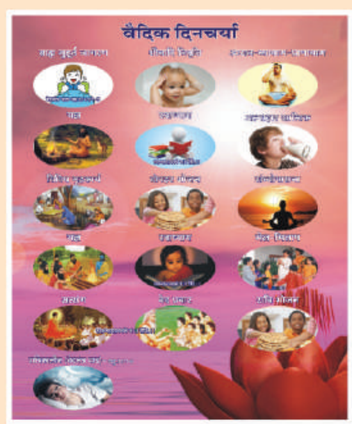

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर वैदिक संसार द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले विशेषांक के कुछ पृष्ठों की झलक

विशेषांक सहयोगार्थ विनम्र अनुरोध पृष्ठ ९ पर अवश्य पढ़ें

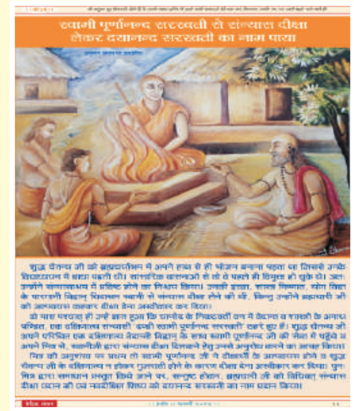

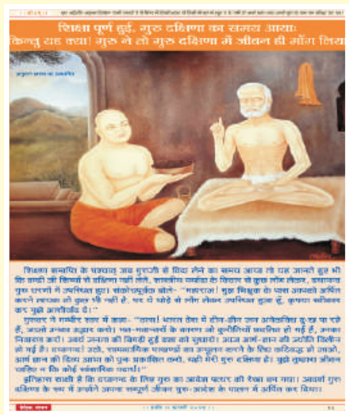

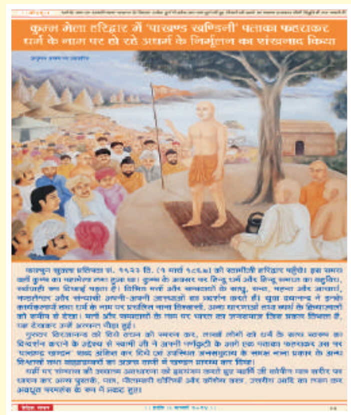

महर्षि दयानन्द जी की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर श्रद्धानन्द आर्य समाज चिचोली, जिला बैतूल (म.प्र.) का ११५ वाँ वेद प्रचार महोत्सव सम्पन्न

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३३ पर

मंचस्थ यज्ञ ब्रह्मा सुश्री अंजलि आर्या, स्वामी शान्तानन्दजी सरस्वती, जयकरण जी शास्त्री, आचार्य सत्यप्रिय जी, बृजेश जी व गुरुकुल जमानी के ब्रह्मचारी

संस्था प्रधान अशोक कुमार जी आर्य सपत्नीक श्रद्धालु परिजनों के साथ यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते हुए

चिचोली के सेवाभावी, कर्मठ पूर्व प्रधान सुरेश जी मालवीय अपनी माताजी, परिजनों के साथ यज्ञ पश्चात् उपदेशामृत करते हुए

यज्ञ पूर्णाहुति अवसर पर चिचोली वासी आर्यों की यज्ञनिष्ठा का विहंगम दृश्य

यज्ञ ब्रह्मा सुश्री अंजलि आर्या व स्वामी शान्तानन्द जी यजमानों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

स्वामी शान्तानन्द जी व सुश्री अंजलि आर्या के साथ अशोक जी, संजीव जी, सुरेश जी, राजकुमार जी, सन्तोष जी व अन्य गणमान्यजन

आर्य समाज चिचोली के पूर्व प्रधानों का भावभीना अभिनन्दन वर्तमान कार्यकारिणी द्वारा

चिचोली के तहसीलदार महोदय श्री प्रदीप जी तिवारी का भावभीना अभिनन्दन प्रधान अशोक जी करते हुए

वरिष्ठ उद्योगपति, कलार समाज जिला बैतूल के अध्यक्ष श्री प्रेमशंकर जी मालवीय का भावभीना अभिनन्दन आर्य समाज, चिचोली की ओर से

स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त पर आर्य समाज परिसर पर आर्य समाज, चिचोली व आर्यवीर दल, चिचोली के तत्वावधान में ध्वजारोहण के समय लिया गया चित्र

रिसोर्ट में विवाह : नई सामाजिक व्याधि

● डॉ. कैलाश 'कर्मठ' जखराना वाले
१८७, रवीन्द्र सरणी, कोलकाता (प. बंगाल)
चलभाष : ९३३०६४५१८१

कुछ समय पहले तक शहर के अंदर मैरिज हॉल में शादियाँ होने की परंपरा चली परंतु वह दौर भी अब समाप्ति की ओर है। अब शहर से दूर महंगे रिसोर्ट में शादियाँ होने लगी हैं। शादी के २ दिन पूर्व से ही ये रिसोर्ट बुक करा लिया जाते हैं और शादी वाला परिवार वहाँ शिफ्ट हो जाता है। आगंतुक और मेहमान सीधे वहीं आते हैं और यहीं से विदा हो जाते हैं। जिसके पास चार पहिया वाहन है वही जा पाएगा, दोपहिया वाहन वाले नहीं जा पाएंगे। बुलाने वाला भी यही स्टेटस चाहता है। और वह निमंत्रण भी उसी श्रेणी के अनुसार देता है। दो–तीन तरह की श्रेणियाँ आजकल रखी जाने लगी हैं, किसको सिर्फ लेडीज संगीत में बुलाना है। किसको सिर्फ रिसेप्शन में बुलाना है। किसको कॉकटेल पार्टी में बुलाना है। और किस वीआईपी परिवार को इन सभी कार्यक्रमों में बुलाना है।

इस आमंत्रण में अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है। सिर्फ मतलब के व्यक्तियों को या परिवारों को आमंत्रित किया जाता है। महिला संगीत में पूरे परिवार को नाच–गाना सिखाने के लिए महंगे कोरियोग्राफर १०–१५ दिन ट्रेनिंग देते हैं। मेहंदी लगाने के लिए आर्टिस्ट बुलाए जाने लगे हैं। मेहंदी में सभी को हरी ड्रेस पहनना अनिवार्य है जो नहीं पहनता है उसे हीन भावना से देखा जाता है, लोअर केटेगरी का मानते हैं। फिर हल्दी की रस्म आती है। इसमें भी सभी को पीला कुर्ता–पाजामा पहनना अति आवश्यक है। इसमें भी वही समस्या है जो नहीं पहनता है उसकी इज्जत कम होती है। इसके बाद वर निकासी होती है। इसमें अक्सर देखा जाता है जो पंडित को दक्षिणा देने में १ घंटे डिस्कशन करते हैं वह बारात प्रोसेशन में ५ से १० हजार नाच–गाने पर उड़ा देते हैं।

इसके बाद रिसेप्शन स्टार्ट होता है। स्टेज पर वरमाला होती है पहले लड़की और लड़के वाले मिलकर हंसी मजाक करके वरमाला करवाते थे, आजकल स्टेज पर धुएँ की धूनी छोड़ देते हैं। दूल्हा–दुल्हन को अकेले छोड़ दिया जाता है। बाकी सब को दूर भगा दिया जाता है। और फिल्मी स्टाइल में स्लो मोशन में वह एक–दूसरे को वरमाला पहनाते हैं। साथ ही नकली आतिशबाजी भी होती है। स्टेज के पास एक स्क्रीन लगा रहता है उसमें प्री–वेडिंग सूट की वीडियो चलती रहती है। जिसमें यह बताया जाता है की शादी से पहले ही लड़की–लड़के से मिल चुकी है और कितने अंग प्रदर्शन वाले कपड़े पहन कर कहीं चट्टान पर, कहीं बगीचे में, कहीं कुएं पर, कहीं बावड़ी में, कहीं श्मशान में, कहीं नकली फूलों के बीच अपने परिवार की इज्जत को नीलाम कर के आ गई है।

प्रत्येक परिवार अलग–अलग कमरे में ठहरते हैं, जिसके कारण दूरदराज से आए बरसों बाद रिश्तेदारों से मिलने की उत्सुकता कहीं खत्म सी हो गई है। क्योंकि सब अमीर हो गए हैं, पैसे वाले हो गए हैं। मेल–मिलाप और आपसी स्नेह खत्म हो चुका है। रस्म अदायगी पर मोबाइलों से बुलाये जाने पर कमरों से बाहर निकलते हैं। सब अपने को एक दूसरे से रईस समझते हैं और यही अमीरीयत का दंभ उनके व्यवहार से भी झलकता है।

कहने को तो रिश्तेदार की शादी में आए हुए होते हैं परंतु अहंकार उनको यहाँ भी नहीं छोड़ता। वे अपना अधिकांश समय करीबियों से मिलने के बजाय अपने–अपने कमरो में ही अपना मेल–मिलाप का अनमोल अवसर गुजार देते हैं। हमारी संस्कृति को दूषित करने का बीड़ा ऐसे ही अति संपन्न वर्ग ने अपने कंधों पर उठाए रखा है।

मेरा अपने मध्यमवर्गीय समाज बंधुओं से अनुरोध है आपका पैसा है, आपने कमाया है, आपके घर खुशी का अवसर है खुशियाँ मनाएँ, पर किसी दूसरे की देखा–देखी नहीं। कर्ज लेकर अपने और परिवार के मान–सम्मान को खत्म मत करिएगा। जितनी आप में क्षमता है उसी के अनुसार खर्चा करिएगा। ४–५ घंटे के रिसेप्शन में लोगों की जीवन भर की पूंजी लग जाती है। **दिखावे की इस सामाजिक व्याधि को अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित रहने दीजिए।** अपना दांपत्य जीवन सर उठा के, स्वाभिमान के साथ शुरू करिए और खुद को अपने परिवार और अपने समाज के लिए सार्थक बनाइए। ■

आर्य समाज, गरोठ, जिला मन्दसौर, म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित

संगीतमयी वैदिक श्री राम कथा

दिनांक : १३ से १७ दिसम्बर २०२३ तक
कथाकार : सुश्री अंजलि आर्या
स्थान : छत्री चौक,गरोठ
सम्पर्क : चेतन आर्य ९८२६५५७७६४

मुकाती परिवार, राऊ के सौजन्य से तथा आर्य समाज, राऊ, जिला इन्दौर, म.प्र. के संयोजन में आयोजित

संगीतमयी वैदिक श्री राम कथा

दिनांक : ८ से १४ जनवरी २०२४ तक
कथाकार : सुश्री अंजलि आर्या
स्थान : पाटीदार धर्मशाला, राऊ
सम्पर्क : अरुण आर्य ९९२६०३६२०३

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् (म.प्र.) का

वार्षिकोत्सव

दिनांक : १५ से १७ दिसम्बर २०२३ तक
सम्पर्क : मोहन श्रुतबन्धु ९३९९६५६४७७

कैसे होगा रामराज का सपना साकार? हम जा रहे किस ओर?

● **मोहनलाल दशौरा 'आर्य'**
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की जगह, वयम् कुटुम्बकम् भी नहीं। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** में केवल अहं सुखीन और **'सत्यमेव जयते'** के बजाय सदा असत्यमेव जयते ही दिखाई दे रहा है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो सारा भारत आर्यावर्त जो अब हिन्दोस्तान व इण्डिया के नाम से जाना जाता है। लगभग विपरीत दिशा में गमन कर रहा है। अर्थ–अर्थ–अर्थ के पीछे सब व्यर्थ हुआ जा रहा है। भौतिक चकाचौंध में सब अनर्थ हो रहा है। मस्तिष्क (दिमाग) के नीचे जैसे कुछ (दिल) है ही नहीं। इन्द्रियों का जाल सारे शरीर को जकड़े हुए है- जिगर-जमीन- अपनत्व व आत्मा का जैसे लोप हो गया है। संस्कार, संस्कृति, सभ्यता, सदाचार, सरलता, सेवा, सत्कार, सहनशीलता, सहानुभूति की साधना घटती जा रही है। मानवता का अवमूल्यन इतना अधिक हो चुका है कि शिक्षा के नाम पर पैकेज पीढ़ी में रोबोट्स तैयार हो रहे हैं। संस्कृति और सभ्यता के विकास (आधुनिकता) के नाम पर फैशनेबल अश्लील जीवनशैली बढ़ती जा रही है। लोग इन्द्र (ईश्वर) के बजाए इन्द्रियों की लालसा, वासना पूर्ति में लिप्त होते जा रहे हैं। हर श्रेणी के अपराधों का स्टैण्डर्ड बढ़ता जा रहा है। पद, पैसा और प्रतिष्ठा (झूठी) के लिए आदमी किसी भी हद तक जाने को उद्दत्त है। धर्म/सेवा/वतन/मातृभूमि/ मानव सेवा, सत्य, अहिंसा, करुणा/ संविधान रक्षा/ मानवाधिकार/ निष्ठा/भक्ति केवल शास्त्रों की लिपी रह गई है। औपचारिकता/ प्रदर्शन और विज्ञापन में अग्रणी बनकर रह गए हैं। कुछ अपवादों, जिनके बल पर राष्ट्र, संस्कृति व धर्म जीवित है, को छोड़कर नेता नायक देश, धर्म, शासन के तथाकथित ठेकेदार, संत, साधु, अधिकारी, कारिन्दे, कर्णधार जो सेवा का, भक्ति का चोला पहन कर जनता का, धन का, शोषण कर अवैध गतिविधियों में लिप्त होकर, राष्ट्र, धर्म व संस्कृति को खोखला करने में लगे हुए हैं। मानवता को पतन के गर्त में धकेल रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमारा व हमारे राष्ट्र का भविष्य क्या होगा। चिन्तन का विषय, पीड़ादायक ही है। विद्वान् कवियों ने भी अपना दर्द कई जगह उंडेला है।

तुलसी- कलिमल ग्रसे ग्रन्थ सब, लुप्त हुए सदग्रन्थ।
दम्भिन निज मति प्रकृत करि प्रकट किये बहुपन्थ।।

आज अनेकता में कितने मत, पन्थ, मजहब व देवी-देवता हो गए तथाकथित हिन्दुओं की कितनी शाखाएँ हो गईं। विरोधाभास युक्त। धर्म (कर्मकाण्ड, कथा, भागवत, तीर्थ, धर्मधाम व्यापार हो गए हैं। आगे-

द्विज स्तुति बेचक, भूय प्रजासन। नहि कोई मान निगम अनुशासन।
जाके नख और जटा विशाला। सोई प्रसिद्ध तापस कीलकाला।।

अपवाद छोड़कर-

रंगीन वस्त्र धारण कर लो दाढ़ी जटा, कंठी, माला।
गांजा भांग भभूति, अकर्मण्य बनकर समाज के सिरमौर रहो
आज उनका कितना भार समाज/देश/पर/बिना सेवा के।

साधनों के बजाए भविष्य का चित्रण भी कवि ने पहले ही कर दिया है-

धर्म भी होगा, कर्म भी होगा, लेकिन शर्म नहीं होगा।
ड्रग, शराब, तम्बाखू, गांजा बहुत बड़ा धन्धा होगा।।
बात-बात में बेटा अपने बाप को आँख दिखाएगा।
हँस चुगेगा दाना दुनका, कौवा मोती खाएगा।।
आगे- मन्दिर मस्जिद सूने होंगे, भरी रहेगी मधुशाला।
पिता के संग में भरी सभा में नाचेगी घर की बाला।।
जो होगा भोगी और लोभी, वो योगी कहलाएगा।
हंस चुगेगा दाना दुनका, कौवा मोती खाएगा।।

आज हम देख रहे हैं धर्म का उपदेश देने वाले अवैध कृत्य में पाए गए। जेलों में डांस कर रहे। शराब सुलभ/पानी दुर्लभ। भूमाफिया, शराब माफिया, खनन माफिया, बार जिस्म माफिया, हवाला, गबन, घोटाला करने वाले कई शातिर शक्तिशाली बनकर पुलिस प्रशासन के नाक में दम कर रहे हैं। कई जगह छापे पड़ रहे हैं। अकूत अवैध सम्पत्तियाँ पकड़ी जा रही है। भाषा और व्यवहार का पतन हो गया है। कहा भी है-

राम के भक्त रहीम के बन्दे, देख रहे इनके भी धन्धे।
कितने हैं मक्कार ये अन्धे नाच रहे हैं होकर नंगे।।
इन्हीं की काली करतूतों से हो गया मुल्क मशान।
कितना बदल गया इंसान कैसा बन गया नर हैवान।।

आज न केवल भारत वरन् विश्व में संकट है असुरक्षित अशांत है। अवैध धन्धों (आतंक) की गिरफ्त में है।

अंजामे गुलिस्ता क्या होगा? जब हर शाख पे उल्लू बैठा है।

गऊभक्त, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, वेद पथिक, महर्षि दयानन्द का दीवाना आर्यवीर शिवदत्त भारद्वाज अल्पायु में दिवंगत

धर्मप्रेमी आर्य जनता को बताते हुए बड़ा दुःख हो रहा है, फिर भी सूचित कर रहा हूँ कि मेवात क्षेत्र ही नहीं अपितु हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश का जाना–पहचाना आर्यवीर शिवदत्त भारद्वाज २२ वर्ष की अल्पायु में दिनांक ६.११.२०२३ को हृदयगति रुक जाने से अचानक दिवंगत हो गया। यह खबर सुनकर मेवात क्षेत्र में शोक छा गया तथा शिवदत्त की जन्म भूमि ग्राम बीसरू (मेवात) नूंह में लगभग एक हजार स्त्री–पुरुष जमा हो गए तथा उसके परिवार को सांत्वना प्रदान की। उसी दिन शाम को अन्तिम संस्कार श्री प्रेमचन्द्र भारद्वाज बीसरू (नूंह) हरियाणा ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया।

श्री शिवदत्त आर्य अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती आर्या आयु २० वर्ष, पुत्री दिव्या एक मास तथा माता मन्जुबाला ४० वर्ष व पिता श्री विजयकुमार ४२ वर्ष को रोता–बिलखता छोड़कर गये।

दिनांक १०.११.२०२३ को शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञोपरान्त श्रद्धांजलि सभा में वैदिक विद्वान् पं. नन्दलाल निर्भय बहीन (पलवल) हरियाणा ने अपने प्रवचन में ईश्वर को माताओं की माता, पिताओं का पिता, गुरुओं का गुरु और संसार का स्वामी बताया। श्री नन्दलाल निर्भय ने शिवदत्त के परिजनों को समझाया कि धर्म की प्रथम सीढ़ी धैर्य है। हमें धैर्य नहीं त्यागना चाहिए। हमें कर्म करने का अधिकार है। किन्तु फल ईश्वर देता है। हमें ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिये। प्रभु की लीला निराली है। श्री शमशेर गोस्वामी पुन्हाना, श्री कर्ण मुनि जुरेहडा (राज.), श्री वेदराम शर्मा बीसरू, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा बीसरू ने दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा व्यथित परिवार को साहस, धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की। शान्तिपाठ के उपरान्त श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

● **पं. बल्लूराम आर्य,** ग्राम बीसरू, जनपद नूंह (हरियाणा)

आर्य समाज- विहंगम दृष्टिपात

● **डॉ. सत्यप्रकाश आर्य**
मु.पो. कारोली, जिला रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६२३१६२७

आधुनिकता के नाम पर आज का युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति की ओर अग्रसर हो रहा है। जीवन प्रवाह में बहकर वह अतीत को भूल बैठा है। वैदिक वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद करने के लिए युवा शक्ति की आवश्यकता अनिवार्य है। वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित एकमात्र सामाजिक संस्था आर्य समाज है। यह संस्था सनातन धर्म में व्याप्त अविद्या व अन्धकार और ढोंग व पाखण्ड को समाप्त करने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७५ में बनाई थी। यह संस्था कोई नया मत, सम्प्रदाय, पंथ या धर्म नहीं है यह तो धर्म के नाम पर समाज में फैली कुरीतियों एवं बुराइयों को जड़ से समाप्त करने के लिए कार्य करने वाली संस्था है। प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य बनता है कि वह युवा वर्ग को अपना हमराही बनाने के लिए संकल्पबद्ध होकर कार्य करें।

जिस समय ऋषिवर का आर्यसमाज में आविर्भाव हुआ। उस समय बड़ी विकट परिस्थितियाँ थीं। देश परतन्त्र था, ईसाइयत व मुस्लिम मिशनरियाँ अपना जाल फैला रहे थे। अपनों ने धर्म के नाम पर पाखण्ड की दुकानें खोल रखी थीं। जिनमें भ्रमजाल का व्यापार होता था। स्वधर्म व स्वदेशी समाज में मठाधीशों ने वैदिक प्रचार को अवरुद्ध करने के लिए कांटे नहीं कीलों का जाल बिछा रखा था। देश की जनता अचेतन अवस्था की ओर जा रही थी। उस संकटमय काल में गुरु विरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द देश को सुषुप्त अवस्था से जागृत करने के लिए आगे आए। अपने कहे जाने वालों को समझना और विधर्मियों से लोहा लेना अत्यन्त दुष्कर कार्य था। विदेशी प्रशासन गिरजाघर और मस्जिद पर मेहरबान था।

ऋषिवर ने अखण्ड ब्रह्मचर्य बल व वैदिक विद्वता के बल पर देश को जागृत करने का शंखनाद किया। स्वामीजी ने स्वराज्य, स्वतन्त्रता, स्वाभिमान, स्वधर्म, स्वभाषा का उद्घोष कर नवचेतना का संचार किया। जागृति की एक धीमी नई लहर ने समय के साथ आँधी का रूप धारण कर लिया। **'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', 'सत्यमेव जयते', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः',** सब वेद पढ़े के उद्घोषों से पाखण्डियों की नींद हराम हो गई और विधर्मी तिलमिला उठे। जागृति की इस नई लहर से लाखों-लाख वैदिक विद्वान्, धर्म प्रचारक, साधु, संन्यासी, राजनेता, शिक्षाविद्, समाज सुधारक धर्म ध्वजवाहक और हजारों क्रान्तिवीर पैदा हो गए। इन आर्यवीरों ने देश की दशा और दिशा बदल दी। वैदिक उपदेशक पृथ्वी सिंह बेधड़क के काव्य शब्दों में **''काशी शहर में रूका पड़ग्या ऐ कौन सन्यासी आग्या।''**

आर्य समाज की भट्ठी में तपकर शिक्षा जगत् में अभिनव कार्य के लिए दो तपस्वी आगे आए। महात्मा हंसराज ने डी.ए.वी. शिक्षण संस्था की स्थापना कर देश में एक नई हलचल पैदा कर दी। इस शिक्षण संस्था ने राष्ट्रीय मूल्यों को नया अधिमान दिया और अनेक राष्ट्रभक्त, धर्मभक्त नेताओं को जन्म दिया। एक ओर स्वामी श्रद्धानन्द ने पुरानी गुरुकुल प्रणाली शिक्षा की पुनर्स्थापना की। अंग्रेजी शासन व्यवस्था की दृष्टि में यहाँ पर स्वदेशी बम्ब बनाने का काम होता है। जो अंग्रेजी शासन के लिए खतरा है। गुरुकुल कांगड़ी , हरिद्वार और इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रमुख केन्द्रों के रूप में जाने जाते हैं।

आर्य समाज के अनमोल खजाने से स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेक राजनेताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विदेशों में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को नई धार दी। साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय ने एक निर्भीक स्वतन्त्रता सेनानी होने का परिचय दिया पुलिस लाठियों से गम्भीर रूप से घायल अवस्था में लाहौर की सभा में कहा था **''मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेजी शासन के लिए कफन की कील सिद्ध होगी।''** स्वामी श्रद्धानन्द ने चाँदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजी संगीनों के आगे अपनी छाती को अड़ा दिया। हिन्दू-मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व कार्य स्वामी श्रद्धानन्द ने जामा मस्जिद दिल्ली के मिम्बर में बैठकर जनता को सम्बोधित कर किया।

डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने कांग्रेस के इतिहास नामक पुस्तक में उल्लेख किया है कि स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भाग लेने वाले आधे से अधिक लोग आर्य समाजी थे। किसी भी आर्य समाजी सेनानी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के संघर्ष में चाहे काले पानी की सजा मिले या फांसी की सजा। उन्होंने माफी नहीं माँगी। यह आर्यवीर नैतिक, आत्मिक बल के सहारे झुके नहीं, अड़े रहे, डटे रहे। उनकी महान् बलिदानी सोच के कारण आज हम स्वतन्त्र देश में सांस ले रहे हैं। नब्बे वर्ष के लम्बे संघर्ष में आर्य समाजियों ने नया इतिहास रचा।

परतन्त्र भारत में दक्षिण हैदराबाद एक रियासत होती थी। वहाँ का शासक मीर उस्मान अली और उसका सहयोगी कासिम रिजवी पहलवी ने हिन्दू जनता पर अमानुषिक अत्याचार करने आरम्भ कर दिए। हिन्दुओं से धार्मिक आधार पर भेदभाव किया जाने लगा। सभी धार्मिक अनुष्ठानों पर प्रतिबन्ध लगा दिए गए। जोर-जुल्म से हिन्दू जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। उस संकट की घड़ी में सन् १९४९ में आर्यसमाज स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के नेतृत्व में आगे आया। निजामशाही के विरुद्ध सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। सम्पूर्ण देश के आर्य समाजियों ने इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। अन्य हिन्दू संगठनों ने भी इस संघर्ष में अपना योगदान दिया। आर्यवीरों को जेल में अमानुषिक व्यवहार का डटकर मुकाबला किया। ज्वार की अध कच्ची-पक्की रोटी, कंकड़-पत्थर मिश्रित दाल और दिनभर पत्थर इधर से उधर और उधर से इधर ढोने का कार्य करवाया जाता था। अन्ततः निजाम को झुकना पड़ा और सभी माँगों को स्वीकार कर लिया गया और बन्दियों को तत्काल रिहा कर दिया गया। यह आर्यसमाज की क्रूर शासक पर अभूतपूर्व विजय थी।

आर्यसमाज की इन वीर गाथाओं से युवा वर्ग अनजान है। पाठ्य पुस्तकों में इनका समावेश न के बराबर है। वैदिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज कटिबद्ध है। परन्तु प्रचार तन्त्र पर अविद्या और अन्धकार का बोलबाला है। राज व्यवस्था में वैदिक विचारों को कोई स्थान नहीं मिल रहा। समाज की गति तेज है और वेद प्रचार की गति धीमी होती जा रही है। जीवनदायी उपदेशकों का नितान्त अभाव है। आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम, भीष्मजी महाराज घरौंडा, गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी वृतानन्द (बोहतरा), स्वामी रामेश्वरानन्द, स्वामी ओमानन्द झज्जर, स्वामी आत्मानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा नारायण स्वामी जैसे विद्वान् त्यागी व तपस्वियों की कमी महसूस की जा रही है। पं. चमूपति व महाशय कृष्णजी जैसे लेखक, पं. रामचन्द्र देहलवी, प्रकाशवीर शास्त्री जैसे शास्त्रार्थ महारथी व प्रखर वक्ताओं की आवश्यकता है। इस कमी को हमें युवाशक्ति से पूरा करना होगा। भविष्य की सारथी युवा शक्ति है। ऋषिवर के मिशन को नई गति देने के लिए सकारात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। ऋषिवर का सन्देश हर चूल्हे की चौखट तक पहुँचाने के लिए कारगर योजना पर नि:स्वार्थ भाव से कार्य करना समय की माँग है। भ्रम जाल व पाखण्ड जाल से ऊपर उठकर ही देश विश्वगुरु के परम पद को प्राप्त कर सकता है। शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में वैदिक शिक्षा का समावेश हो। **वेदों में ज्ञान भी है, विज्ञान भी है, संस्कार भी है, संस्कृति भी है। त्याग-तप और अध्यात्म का सहज सुन्दर समिश्रण है। जीव-ब्रह्म और प्रकृति का पूर्ण ज्ञान वेदों में समाहित है। जब घर में खीर है तो फिर पश्चिम की ओर क्यों निहारें। आओ वेदों की ओर लौट चलें।** ■

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

गतांक पृष्ठ १३ से आगे

● **ई. चन्द्रप्रकाश महाजन**
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

३. नामिकः- इसमें नाम (संज्ञा शब्दों) का व्याख्यान है, इसी से यह नामिक कहलाया।

४. कारकीयः- (१८७१ ई.) कारक प्रकरण की व्याख्या होने के कारण इसका नाम 'कारकीय' रखा गया है। भूमिका के अन्त में स्वामीजी का नाम मुद्रित नहीं है।

५. सामासिकः- (१८७१ ई.) भूमिका के बाद स्वामी जी का नाम मुद्रित नहीं है। समासों की चर्चा के कारण इसका नाम 'सामासिक' है।

६. स्त्रैणताद्धित - (१८७१ ई.) इसमें अष्टाध्यायी के स्त्रीप्रत्यय तथा तद्धित प्रत्ययों का व्याख्यान है। भूमिका में लिखा गया है **'संस्कृत में जैसा तद्धित प्रत्ययों से अधिक बोध होता है वैसा अन्य से नहीं हो सकता।'**

७. अव्ययार्थ - (१८७१ ई.) इसमें संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले अव्ययों का अर्थ तथा उनका वाक्य में किस प्रकार प्रयोग करना चाहिए, यह बताया गया है। भूमिका में अव्यय किसे कहते हैं। यह भी बताया गया है। तीनों लिंगों सातों विभक्तियों तथा तीनों वचनों में अपरिवर्तित रहने वाले अव्ययों से सम्बन्ध होने के कारण ही इसका नाम अव्ययार्थ है।

८. आख्यातिक - (१८७१ ई.) आकार की दृष्टि से वेदांगप्रकाश का यह भाग सबसे बड़ा है। इसमें पूर्वार्द्ध में धातु-प्रक्रिया तथा उत्तरार्द्ध में कृदन्त-प्रक्रिया लिखी है।

आख्यान नाम क्रिया का है। यद्यपि इसमें कृदन्त की भी व्याख्या है, किन्तु प्रमुखता आख्यान की होने के कारण नाम 'आख्यातिक' रखा गया है 'आख्यात' उसको कहते हैं कि जो प्रकृति प्रत्ययों के संयोग से भाव, कर्म, कर्ता, भूत, भविष्यत वर्तमान काल, एक, द्वि और बहु अर्थों का वाचक हो।

९. सौवरः- (१८७२ ई.) भूमिका के अन्त में स्वामीजी का नाम दिया हुआ है। स्वरों का सम्बन्ध मुख्यतः वेदों से है। इसका उद्देश्य स्वमीजी के शब्दों में 'ग्रन्थ बनाने का मुख्य प्रयोजन यही है कि जिससे सब मनुष्यों को उदात्तादि स्वरों की व्यवस्था का बोध यथार्थ हो जावे। इन्द्रशत्रु का अर्थ स्वर विपर्यय के कारण मेघ के स्थान पर शान्त करने वाला या काटने वाला हो जाता है।

१०. पारिभाषिक - (१८८२ ई.) भूमिका में स्वामी जी का नाम दिया है। यह पाणिनि मुनि कृत मूल ग्रन्थ है। ''यह ग्रन्थ यथार्थ व्याख्यान ओर भूमिका के सहित 'आख्यातिक' में छप चुका है, परन्तु उसमें धातु अर्थों के सहित व्याख्यान बीच-बीच में पड़े हैं।

१२. गणपाठः- (१८८२ ई.) ''गणपाठ अष्टाध्यायी का परिशिष्ट है। यह महर्षि पाणिनि की रचना है। इस पुस्तक का नाम गणपाठ इसलिए है कि एकत्र मिला के बहुत-बहुत शब्दों का समुदाय पठित है। भूमिका में स्वामी जी का नाम भी है।

१३. उणादिकोषः- (१८८४ ई.) यह पुस्तक पाणिनिमुनि द्वारा विरचित है। पुस्तक में कुछ पृष्ठों को छोड़कर संस्कृत भाषा का ही आश्रय लिया गया है। इसका कारण निर्दिष्ट करते हुए स्वामी जी लिखते हैं - ''संस्कृत में वृत्ति बनाने का यही प्रयोजन है कि जो लोग पठन–पाठन व्यवस्था के पहले पुस्तकों को पढ़ेंगे, उनके लिये संस्कृत भाषा कुछ कठिन नहीं होगी। और संस्कृत भी सरल ही बनाई है। कई शब्दों के अर्थ इति शब्द लगाकर भाषा में भी खोल दिये हैं। इसमें व्याकरण शास्त्र के महत्वपूर्ण अंग 'उणादि सूत्रों' की सरल सुबोध व्याख्या है। यह वेदांगप्रकाश का अन्तिम भाग है। भूमिका में स्वामी सुबोध व्याख्या है। यह वेदांगप्रकाश का अन्तिम भाग है। भूमिका में स्वामी जी का नाम मुद्रित है।

१४. निघण्टुः- (१८७१ ई.) यह वेदांग प्रकाश का अन्तिम भाग है। यह वैदिक कोष है तथा भूमिका में स्वामी जी का नाम प्रकाशित है। मूलरुप में यह यास्कमुनि द्वारा प्रणीत है। सर्वसाधारण के लाभ के लिए निघण्टु की अनेक हस्तलिखित प्रतियों का मिलान कर स्वामीजी ने शुद्ध संस्करण को प्रकाशित करवाया था। इसी का व्याख्यान ग्रन्थ निरुक्त नाम से जाना जाता है।

पं. युधिष्ठिरजी मीमांसक के अनुसार यदि स्वामी जी कुछ वर्ष और जीवित रहते तो वेदांगप्रकाश के अन्तर्गत वेद के अन्य अंगों की पुस्तकों का भी प्रकाशन करते।

ऋषि दयानन्द ने संस्कृत व्याकरण में प्रौढ़ता प्राप्त करने के लिए पाणिनि अष्टाध्यायी तथा उस पर लिखे गये पतञ्जलिकृत भाष्य की उपयोगिता को निर्विवाद माना। इसी उद्देश्य से उन्होंने अष्टाध्यायी पर संस्कृत-हिन्दी भाष्य का उपक्रम किया था। इस ग्रन्थ के लाभ के बारे में स्वामी जी लिखते हैं कि यह ग्रन्थ सर्वत्र उपलब्ध नहीं था, अब छपने से प्राप्त होने लगा है। इस से बड़ा उपकार यह होगा कि जो पुराणवालों ने अर्थ का अनर्थ किया है, सो उन अनार्ष ग्रन्थों से निवृत्त होकर सब के आत्मा में सत्य प्रकाश होगा। **(समाप्त)** ■

जातिवाद-साम्यवाद का शत्रु : चिन्तनीय विषय

● पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

आज के संस्कार

ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि की अद्भुत रचना की है और उसमें असंख्य प्राणियों की भी उत्पत्ति की है और उनके जीने की सामग्री भी प्राणी अनुसार पैदा की है और प्रत्येक प्राणी की आकृति भिन्न-भिन्न बनाई है। और भिन्न-भिन्न आकृतियों को जाति कहते हैं। आकृति भेद संसार में भिन्न-भिन्न प्राणियों में जाति भेद हैं। जैसे पशु-पक्षी, घोड़ा-गधा, बकरी, सांप अनेक जीवधारी प्राणी और उसमें मनुष्य भी एक जाति है। जाति उसको कहते हैं जो जन्म से मृत्यु तक एक ही आकार में रहती है।

आज भारत की शिक्षा पद्धति का आधार भौतिक है और आज नैतिक शिक्षा, संस्कारों का आधार संसार खोता जा रहा है। सामाजिक अव्यवस्था व साम्यवाद रहित संस्कारों का कारण है- मूठी मर्यादा, कथित मनुष्यों में अनेक उपजातियाँ पनपी हैं। जैसे हिन्दू-मुसलमान, ईसाई व अन्य विभिन्न जातियाँ। जैसे हिन्दुओं में वर्मा, शर्मा, गुप्ता, अग्रवाल, पंवार, बिष्ट, बहुगुणा, बेदी, रावत, मनूड़ी आदि-आदि। बच्चा पैदा होते ही उसको पिता का उपनाम जाति वाचक शब्द के संस्कार दिए जाते हैं और जो-जो माता-पिता जिस सम्प्रदायों, मतों, कथित धर्मों को मानते हैं वह बच्चे के मस्तिक में भर दिए जाते हैं। **वह बच्चा युवा होने पर उस जातिवाद के दायरे को अपनी मर्यादा समझ लेता है। उसके विरूद्ध एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता, चाहे वह भले ही सिद्धान्तहीन, वेद के प्रतिकूल व सृष्टिक्रम के विरुद्ध हो और इन्हीं संस्कारों के कारण दुनिया में मानवों पर भयंकर अत्याचार, हत्याएँ हुई और हो रही हैं।**

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी कहते हैं कि हे मनुष्य! तू यदि ईश्वरीय धर्म वैदिक धर्म को मान लेता तो आज यह विकृत स्थिति न होती और आज संसार ईर्ष्या-द्वेष के बारूद के ढेर पर न बैठा होता, चारों ओर समानता, भाईचारा, शान्ति होती।

आर्य समाज जैसी सुधारक, वैचारिक क्रान्ति संगठन भी जातिवाद के उपनाम से ग्रस्त है

यद्यपि आर्यसमाज छुआछूत, जातिवाद को नहीं मानता, किन्तु यह मान्यता अधूरी है क्योंकि आर्यसमाज के नेतृत्व से लेकर एक सामान्य सदस्य भी अपने नाम के पीछे जातिवाद उपनाम शब्द गौरव से लगा रहा है। यदि करोड़ों आर्यसमाजी अपने नाम के आगे आर्य लगाएँ तो एक आदर्श पहचान बन सकती है और मानव समाज में जातिवाद की बीमारी में औषधि का कार्य होता, क्योंकि आर्यसमाज ही संसार में एकमात्र ऐसा सर्वांगीण सुधारवादी, साम्यवादी, ईश्वरीय संविधान, वैदिक धर्म की मान्यताओं और सृष्टिक्रम व वैज्ञानिक सिद्धान्तों को मानने वाला वैचारिक, व्यावहारिक, क्रियात्मक विशाल संगठन है जो संसार में साम्यवाद ला सकता है। आर्यसमाज को जागना ही होगा।

प्राचीन वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?

प्राचीन वैदिक वर्ण आश्रम व्यवस्था का उद्देश्य यह था कि इस लोक और परलोक को सुखी व द्वेष रहित व वैदिक संस्कृति से जोड़ना था और इस लोक के बड़े-बड़े दु:खों को देखकर ही इस वर्ण व्यवस्था का चयन मानव के गुण, कर्म, स्वभाव, ज्ञान व रुचि को देखकर किया जाता था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र व्यवस्था में समन्वय से कर्म व्यवस्था थी और उसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था। यह व्यवस्था सार्वभौम मनुष्यों के कल्याण के लिए बनाई थी। इस वर्ण व्यवस्था का आधार ईश्वरीय धर्म वैदिक था। यह तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने ही अपनी सृष्टि रूप व्यवस्था को सुखमय व साम्यवादी बनाने के लिए वेदों में भी थी और इस लोक व मृत्यु के पश्चात् मिलने वाले परलोक को देखकर इसकी व्यवस्था बाँधी थी।

वर्तमान युग में वर्ण व्यवस्था के कार्य तो हो रहे हैं किन्तु वह जातिवाद, ऊँच-नीच में फँस गई है। वर्ण व्यवस्था का अर्थ था कि सबको वैदिक धर्मानुसार चलना। वर्णाश्रम का मूल अर्थ यह है कि सबको कार्य देना, कोई भी व्यक्ति निठल्ला न रहे और अपनी-अपनी जीविका में सब स्वतन्त्रतापूर्वक रत रहेंगे तो परस्पर एक-दूसरे के सब सहायक व आधीन हो जाएँगे और समस्त मानव समाज की आर्थिक- सामाजिक- आध्यात्मिक दशा सन्तोषजनक हो जाएगी और सभी को अपना कार्य क्षेत्र चुनने में गुणों के आधार पर पूर्ण स्वतन्त्रता रहेगी।

वर्तमान राजनीति जातिवाद को बढ़ावा दे रही है

आज की राजनीति ने नेतृत्व के साथ-साथ प्रजा को भी दूषित कर दिया है। आज का राजनीतिक नेतृत्व अपने असली स्वरूप आदर्श को भूल गया हैं। जनता ने उन्हें अपना आधार मानकर चयन किया है। उनका कर्तव्य है कि वह अपने आचरण से अर्थात् निस्वार्थ, पक्षपात रहित, जातिविहीन सोच, सर्वहितकारी कार्य, नशामुक्त समाज, स्वच्छ विचार, अन्धविश्वास रहित, सृष्टिक्रमानुसार विज्ञान व वेदानुसार आचरण की शिक्षा प्राप्त कर नेतृत्व करना चाहिए था किन्तु आज का विधायक स्वयं दिशाहीन होकर अनेक दुष्प्रवृत्तियों में रमा हुआ है, जो स्वयं भ्रष्ट हो, जातिवाद में ग्रस्त हो, अपने समर्थन के लिए जातिवाद को प्रोत्साहन देता हो, अन्धविश्वास से ग्रसित हो और कुशल राजनीति के गुणों से अनभिज्ञ हो वह नेता जनता का सर्वांगीण विकास कभी नहीं कर सकता है। आज की राजनीति की दिशा और दशा में आमूलचूल परिवर्तन की जरूरत है। कुशल राजनीति में सुधार कैसे होगा इस विषय पर हम एक लेख पत्रिकाओं में पूर्व में ही प्रेषित कर चुके हैं। मूल संकेत यहाँ भी व्यक्त करता हूँ। राष्ट्र में प्रत्येक जिले में राजनीति कॉलेज होने चाहिए। उनसें उक्त विचारों के पाठ्यक्रम की शिक्षा दी जाए और जो राजनीति कॉलेज से उत्तीर्ण हो उसी को चुनाव लड़ने का टिकट दिया जाए। अगर भारत के राजनीति के शास्त्री इस दिशा पर विचार करें तो कालान्तर में भारत की राजनीति में आमूलचूल परिवर्तन हो सकता है। आज के युग में कुशल सुधारवादी नेतृत्व की अति आवश्यकता है। आर्यसमाज नेतृत्व को योग्य शास्त्री एवं गुरुकुलों से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को विधायक का चुनाव लड़ाकर उज्ज्वल भविष्य की राजनीति में प्रवेश कराना अनिवार्य हो गया है।

साम्यवाद एक जटिल समस्या

यह निर्विवाद सत्य है कि मानव समाज जब तक वेदानुकूल व सृष्टिक्रम व ईश्वरीय व्यवस्था के अनुकूल नहीं चलेगा, तब तक सही रूप में साम्यवाद नहीं आ सकता है। संसार में जितनी भी परिस्थिति और समस्याएँ हैं वे सब

अपने ही कर्मों के कारण हैं। हर कोई आत्मा से चाहता है कि साम्यवाद की स्थापना होनी चाहिए। यह आत्मा की आवाज है। सबका अधिकार छीनकर शोषणवर्ती से ताकतवर बनकर साम्यवाद की दुहाई दी जाती है। यदि अयोग्य व्यक्ति के पास सम्पत्ति व सुख-सुविधा होगी तो उसका दुरुपयोग ही होगा। वेद कहता है कि अकेला खाना महापाप है। अत: सर्व प्रकार के सुख भोग का सबको समान अधिकार है।

जिस देश में शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति के लिए भरपूर अवसर मिले वह देश सच्चा साम्यवादी है। हर कोई कहता है कि साम्यवाद की स्थापना होनी चाहिए। सबको समान हक मिलना चाहिए। यह तभी हो सकता है। जब सबका बिना अधिकार सम्पत्ति व विचार व व्यवहार व शोषणवृत्ति का अधिकार छीनकर सबके योग्यता के आधार पर ही विभक्त करना ही साम्यवाद होगा। यदि अयोग्य के पास अत्यधिक सम्पत्ति, सुख-सुविधा होगी तो उसका दुरुपयोग ही होगा।

जिससे यह लोक और परलोक सुधरे तदानुसार कर्म, धर्म है वही वास्तव में सच्चा साम्यवाद है। वेद ऐसे साम्यवाद का आदेश देता है जिससे सबको लाभ मिले।

निवेदन

सम्पूर्ण मानव जगत् से आग्रह है कि यदि हम सब अपने नाम के उपरान्त जातिवाचक शब्द लगाना बन्द कर दें जो कालान्तर में समाज में बड़ा परिवर्तन आ सकता है। सर्वप्रथम आर्यसमाज संगठन और अन्य धार्मिक संगठनों को पहल करनी चाहिए, क्योंकि यह कार्य अति पुण्य वाला व ईश्वरीय कार्य है। **वर्ण व्यवस्था कर्म से है जन्म से नहीं। वर्ग भेद एवं ऊँच-नीच के विष-वृक्ष को उखाड़ फेंका जाए। मानव समाज को जोड़ने में सहयोग करें। ■**

महानायक निर्भीक संन्यासी सन्त सम्राट् स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर शत–शत नमन

समर्पित सिपाही : स्वामी श्रद्धानन्द

स सन्त शिरोमणि भारत माता के वरद पुत्र आपको सादर कोटिश: नमस्कार।
म मनुज तन में देवता सम मन–तन–धन से समर्पित किया भारत माँ का शृंगार।।
र् रग रग में महर्षि दयानन्द सरस्वती, सद्गुरु के आदर्श किये साकार।
पि पिता पुलिस इंस्पेक्टर व माता गृहिणी ने दिये परिष्कृत वैदिक संस्कार।।
त तप त्याग तपस्या राष्ट्रहित, अर्धांगिनी शिवदेवी ने कष्ट सहे अपार।
सि सिखा दिया नारी समाज को पति सेवा नास्तिक दुर्व्यसनी का सत्कार।।
पा पाया जवानी पर विलासिता उन सब कलुषता को त्याग सदाचारी आर्य संस्कार।
ही हीरा बना दिया आर्य संस्कृति ने अमीचन्द व लेखराम के मिले श्रेष्ठ विचार।।
स् सन् १९०९ में पटियाला आर्य समाज पर राजद्रोह, सन् १९१९ में रोलेट एक्ट का बहिष्कार।
वा वास्तविक समस्त संघर्षो के प्रति, मुंशीराम बने मुखिया, इस्लाम खिलाफ किया परिष्कार।।
मी मीत बनाया आर्य वीरों को, मातृभूमि प्रति शंखनाद राष्ट्र सुरक्षा की भरी हुंकार।
श्र श्रद्धा भर दी जन–जन में देश सेवा, ब्रिटिश सरकार को सबक सिखाया, मिला गाँधी दुत्कार।।
द् दशों दिशा में अमर बलिदान दिल्ली टाउन हॉल मैदान में, सीने पर गोली खाई देश प्यार।
धा धारण कराया भावी पीढ़ी को वैदिक धर्म, गुरुकुल शिक्षा, कुरीति उन्मूलन, विधवा विवाह में सार।।
नं नंद बाबा के श्रीकृष्ण सम, दशरथ नन्दन राम–सम, देश सेवा हित खूब सहे अत्याचार।
द दमन किया इन्द्रियों का, वेदों का प्रचार, पंचयज्ञ वैदिक संस्कार, मानो ऋषि दयानन्द का उपकार।।
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को याद करो प्रकल्प।
हर भारतीय के लिए गौरव है राष्ट्र की रक्षा में सन्त शहीद समाज सुधारकों का संकल्प।।

जिनके शीश वैदिक धर्म रक्षा में चढ़े हैं।
दुनिया में झण्डे उन्हीं के सदैव गड़े हैं।।
माता–पिता से बढ़कर सद्गुरु का पाया प्यार।
वही परिवार समाज राष्ट्र का 'सुन्दर' करता उद्धार।।

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

हम आर्य अब क्या करें?

आर्य समाजी वेद, धर्म अपनायें!
जन–जन को यज्ञ–कर्म सिखलायें!(१)
वेदशास्त्र स्वाध्याय अनिवार्य करें!
भवन में पठन–पाठन सुकार्य करें!(२)
छात्रों को यम–नियम योग सिखायें!
विद्यार्यसभा समिति गठन करायें!(३)
शारीरिक आध्यात्मिक शिक्षण हों!
धर्म विरुद्ध न कोई आयोजन हों!(४)
वैदिक मर्यादायें अब रेखांकित हों!
मनमाने सब कृत्य प्रतिबंधित हों!(५)
संपूर्ण समाज का आह्वान करिये!
जनता को बुलाइए यज्ञ से जोड़िये!(६)
जिनको प्रचार के लिए समय नहीं!
उनके लिए समिति में जगह नहीं!(७)
संस्था को समाज से जोड़ना होगा!
घर बैठे लोगों को मंदिर लाना होगा!(८)
संसार का उपकार हमें करना है!
तो वैसी ही योजना भी बनाना है!(९)
विश्व कल्याण शांति महायज्ञ करो!
दयानंद जी का मिशन आगे करो!(१०)
वेद बिना तो आर्यसमाज ही नहीं!
निरुद्देश्य संस्था सफल आज नहीं!(११)
युग के अनुकूल प्रचार का स्तर हो!
दकियानूसी बातों का न असर हो!(१२)
दु:ख पीड़ा युद्ध विश्व में है अशांति!
दयानंद–पथ है वैदिक स्वस्ति शांति!(१३)
सहस्रों मंत्र प्रार्थनायें वेदों में स्थित!
उनका प्रयोग विनियोग हो निश्चित!(१४)
तुम न करोगे तो फिर कौन करेगा!
भविष्य तब क्या हमें माफ करेगा!(१५)
जीवन के समय का उपयोग करो!
समाज सेवा, धर्म कर्म, योग करो!(१६)
संगठन संस्थान समाज के हैं पति!
महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती!(१७)
हम अनुयायी उनका नाम लेते हैं!
चित्र की आड़ ले स्वकाम करते हैं!(१८)
मंदिर है नाम हम करते उल्टे काम!
धर्म वैदिक दयानंद होते हैं बदनाम!(१९)
आरोग्य सुख शांति हेतु हवन करो!
एतदर्थ नई यज्ञसमिति चयन करो!(२०)

● **आचार्य ओमप्रकाश सामवेदी**
मन्त्री : आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड
चलभाष : ६४३७४८१०१

- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की त्याग-तपस्या और योगदान राष्ट्रीय स्तर पर अतुलनीय, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता किन्तु उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज वर्तमान में कुछ अपवाद छोड़कर रूढ़ियों और कुप्रबन्धन का शिकार हो गया है।
- आर्य समाज की निसन्देह उत्कृष्ट विरासत और सिद्धान्त किन्तु आर्य समाज जब स्थापित हुआ था तब से अब तक संसार और भौतिक विकास कहाँ से कहाँ पहुँच गया और आर्य समाज कहाँ खड़ा है? इसके चिन्तन की आर्यसमाज के कर्णधारों को महती आवश्यकता है।
- जो व्यक्ति, संस्था, समाज, देश समय के साथ अपने को व्यवस्थित (अपडेट) नहीं करते वे विलुप्त (आउट) हो जाते हैं।
- कर्मयोगी बनो, बिना कर्म किये कुछ नहीं मिलता। माँगने से ही कुछ मिल जाता तो इस देश का प्रत्येक व्यक्ति सुबह से शाम तक कुछ न कुछ माँग ही रहा है। **-केशुभाई गोटी, कर्मयोगी सन्त**

'कर्मयोगी परिवार' सूरत द्वारा निर्मित १८०वें सरस्वतीधाम का लोकार्पण सम्पन्न

चित्रावली रंगीन पृष्ठ ३९ पर देखें

● **सुखदेव शर्मा**
प्रकाशक : वैदिक संसार, इन्दौर एवं संचालक : महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५०६९४९१

लॉर्ड मैकाले द्वारा थोपी गई भोगवादी, प्रतिस्पर्धात्मक, पाशविक शिक्षा पद्धति के दुष्परिणाम वर्तमान काल में सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं। शैक्षणिक स्तर में वृद्धि होने के उपरान्त भी नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास किसी से छुपा नहीं है। शिक्षा-सम्पन्नता बढ़ने के उपरान्त भी वर्तमान में धार्मिक क्षेत्र में अन्धविश्वास-पाखण्ड दिन-दूना, रात-चौगुना फल-फूल रहा है तथा मानव जाति में परस्पर सहयोगात्मक भावना, स्नेह, सौहार्द, त्याग, तपस्या, संस्कार, दानवृत्ति आदि मानवीय गुण विलुप्त होकर परस्पर अविश्वास, ऊँच-नीच का भेदभाव, अस्पृश्यता, अनैतिकता, मानसिक सन्ताप, व्यसनवृत्ति, संकीर्णता, लोभवृत्ति, अपमिश्रण, परद्रव्य हरण, परिग्रहण, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, सांप्रदायिकता, पाश्विकता कुछ अपवाद छोड़कर घर-घर में फल-फूल रहे हैं। इस देश में चाहे किसी काल में शिक्षा-सम्पन्नता न्यून रही हो किन्तु दूध-घी की नदियाँ बहती थी, मेरे देखने में ग्रामीण क्षेत्रों में दूध विक्रय करना लज्जाजनक माना जाता था तथा वर्तमान में छाछ (मट्ठा) भी १५ रु. लीटर बेची जा रही है वह भी बासी और पानी मिली हुई। पशुओं को पेट भरने के लिए पर्याप्त हरे-भरे मैदान (गोचर भूमियाँ) गाँव-गाँव में तथा जंगल होते थे। निर्धनों की सहायता के नाम पर भ्रष्टाचार की पर्याय बन चुकी कोई शासकीय योजनाएँ नहीं होती थी। निर्धन व्यक्तियों का ध्यान भी सम्पन्न व्यक्ति रखते थे, कोई भूखा नहीं सोता था जबकि वर्तमान में देश में वृद्धाश्रमों की बाढ़ आ गई है और उन वृद्धाश्रमों में अधिकांश शिक्षित-सम्पन्न परिवारों के वृद्ध मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वृद्धाश्रमों में भी निर्धन व्यक्तियों के लिए स्थान नहीं है। **जिस लॉर्ड मैकाले को सम्पूर्ण देश के भ्रमण पर कहीं भी कोई भिक्षावृत्ति करता हुआ दिखाई नहीं दिया। उस देश का प्रत्येक व्यक्ति वर्तमान कालखण्ड में माँगीलाल बन गया है। हर कोई, कहीं न कहीं, किसी न किसी से, कुछ न कुछ माँग रहा है। 'और तो और अत्यन्त हास्यास्पद स्थिति है कि लोग पत्थरों से ही माँग रहे हैं।'** यह सब उस मानव जाति के साथ हो रहा है जिसे परमपिता परमेश्वर ने सर्वश्रेष्ठ मननशील प्राणी मनुष्य बनाया और उस भू-भाग पर हो रहा है जो कभी विश्वगुरु था। इस सम्पूर्ण स्थिति-परिस्थिति का एकमेव कारण मानव निर्माण परक शिक्षा का अभाव और वह सम्भव है मात्र और मात्र गुरुकुल शिक्षा पद्धति से। जहाँ राजा-प्रजा सभी के बालक समान रूप से बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करते थे। जहाँ उनका शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक अर्थात् सर्वांगीण विकास होता था। कोई जातिवाद नहीं था तो आरक्षण के भूत का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।अत्यन्त विडम्बना है कि देश की स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष व्यतीत हो जाने के उपरान्त भी वर्तमान के हमारे कर्णधारों का इस ओर कोई ध्यान नहीं है, प्रयास तो दूर की बात है। जबकि विधर्मियों से हमारा संघर्ष सत्ता के लिए नहीं अपितु संस्कृति और संस्कारों के लिए था, जिनका उद्गम शिक्षा से होता है।

मानव जाति की व्याधि तथा देश की परतन्त्रता का मूल कारण देव दयानन्द ने गहनता से अध्ययन कर जाना और मानव जाति को आह्वान किया **'वेदों की ओर लौटो'**। महर्षि देव दयानन्द के अनन्य भक्त स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने अपने गुरु के सन्देश वेदों की ओर लौटो को सार्थक करने हेतु गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना पराधीनता काल में की। जिसे आगे बढ़ाया गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से अध्ययन कर निकले हजारों-हजार वैदिक धर्मनिष्ठ ऋषि दयानन्द के भक्तों ने। बिना किसी शासकीय सहायता के जनसहयोग से हजारों गुरुकुल स्थापित किए गए। इन गुरुकुलों से निकले विद्यार्थियों का सनातन धर्म-संस्कृति की रक्षा और देश की स्वतन्त्रता में प्रमुख योगदान रहा।

देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति शासकीय उपेक्षा यथावत् रही और यथावत् है। यहाँ तक कि देश की स्वतन्त्रता के पूर्व जो जनसहयोग प्राप्त होता था वह भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रभाव में दानवृत्ति समाप्त होकर भोगवाद चरम पर है। ऐसे में गुरुकुल संचालित करना कोई सरल-सामान्य कार्य नहीं है। इसके उपरान्त भी देव दयानन्द तथा आर्य समाज के

अनन्य भक्त हजारों-लाखों रूपयों की शासकीय नौकरियों और निजी तथा पारिवारिक सुख-सुविधाओं को तिलांजलि देकर त्यागी-तपस्वी जीवन का वरण कर समक्ष आने वाली चुनौतियों से डटकर सामना कर गुरुकुलों को संचालित कर रहे हैं। वर्तमान कालखण्ड में जब दो-तीन बच्चों के परिवार को चलाना व्यक्ति के लिए दूभर हो रहा है, ऐसे समय में २००-१००-५० बच्चों के गुरुकुल को संचालित कर बच्चों के भोजन, वस्त्र, पुस्तक, चिकित्सा आदि की व्यवस्था करना और वह भी कोई एक-दो दिन के लिए नहीं अपितु लगभग बालक ८ वर्ष गुरुकुल में निवास करता है, इतने दीर्घकाल तक इतनी अधिक संख्या में बच्चों का लालन-पालन और शिक्षा देना साधारण कार्य नहीं है। जैसे-तैसे गुरुकुल की आवश्यकताओं की पूर्ति जनसहयोग से गुरुकुल संचालक करते हैं। इसमें समुचित आवास की व्यवस्था करना तो दूर,सोचना भी दिवास्वप्न है। ईश्वर कृपा और ईश्वरीय प्रेरणा से गुरुकुलों की आवास समस्या को दूर करने आगे आया गुजरात प्रान्त के हीरा नगरी के नाम से सुविख्यात सूरत नगर के उद्योगपतियों का यथानाम तथागुण वाचक **'कर्मयोगी परिवार'**।

'कर्मयोगी परिवार' के सदस्य श्री केशुभाई वि. पानसुरिया, श्रीनागजीभाई जी. माणीया, श्री हितेशभाई आर. हिरपरा, श्री जयरामभाई एम. भोजाणी, श्री पुरुषोत्तमभाई बी. बोरडा, श्री रोहितभाई वि. सावलिया, श्री भूपतभाई एल. पालडिया, श्री लक्ष्मणभाई एम. मोरडीया, श्री कानजीभाई के. कात्रोडीया, श्री भरतभाई एस. सावलिया, श्री विट्ठलभाई एल. बुहा, श्री विट्ठलभाई जी. घोरी, श्री लवजीभाई के. नाकराणी, श्री चतुरभाई एन. वाडदोरीया, श्री महेशभाई एच. हिराणी, श्री त्रिभुवनभाई एन. गेडीया, श्री ठाकरशीभाई जी. देवाणी, श्री जयरामभाई जी. अणद्यण, श्री परेशभाई के. डोडिया, श्री मनुभाई एम. वीरडीया, श्री धनजीभाई बी. वानाणी, श्री धीरुभाई एम. गोटी, श्री विनुभाई एल. सोरठिया, श्री अशोकभाई एम. अणद्यण, श्री वालजीभाई जी. गोरसीया, श्री मोहनभाई एच. माणीया, स्मृति शेष जादवभाई एच. शेटा, श्री दिव्येशभाई बी. वालधा, श्री जगदीशभाई के. मांडवीया, श्री किशोरभाई वी, ठेसीया, श्री बुधाभाई बी. गलाणी, श्री भूपतभाई एम. खुट, श्री शुभमभाई जे. परमार, श्री भावेशभाई के. सावलिया हैं। जिन्हें परमपिता परमेश्वर ने तन-मन-धन के साथ मानवीय मूल्यों से परिपूरित विशाल हृदय भी दिया है। जो ये सज्जन महानुभाव सम्पूर्ण भारत में शोषित, वंचित, पीड़ित वर्ग बहुल क्षेत्रों में संचालित गुरुकुलों, विद्यार्थी आश्रमों तथा विद्यालयों के लिए विशाल, सुसज्जित सर्वसुविधायुक्त सरस्वतीधाम (छात्रालयों) का निर्माण कर रहे हैं। २०७ सरस्वती धाम का स्थल चयन होकर अनेकों का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है तथा कुछ का कार्य चल रहा है। ३०९ सरस्वती धाम निर्माण का लक्ष्य अभी निर्धारित है। इस लक्ष्य तक पहुंचने पर लक्ष्य और विस्तारित होने की पूर्ण सम्भावना है क्योंकि इसके पूर्व भी यह कर्मयोगी परिवार अपने विशाल लक्ष्यों को पूर्ण कर बिना विश्राम किये आगे बढ़ चुका है। ३०९ भवन के मुख्य दाता **'श्री मातुश्री काशीबा हरिभाई गोटी चैरिटेबल ट्रस्ट, सूरत'** है।

मुझे वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल केहलारी, जिला-खण्डवा, मध्यप्रदेश स्थित २८X१०० वर्गफूट के दोहरे तल के लगभग १०० विद्यार्थियों के आवास हेतु उपयुक्त नवनिर्मित **'श्रीमती मंजुलाबेन अनुभाई तेजाणी छात्रालय'** १८० वें सरस्वतीधाम लोकार्पण समारोह दिनांक २५ अक्टूबर २०२३ को कर्मयोगी परिवार के ममस्पर्शी कार्यों के प्रत्यक्षदर्शी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस १८०वें सरस्वतीधाम भवन के सहयोगी दाताश्री श्री अनुभाई देवराज भाई तेजाणी, प्रमुख : श्री संस्कार भारती विद्यालय, सूरत, गुजरात है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भवन का शिलान्यास नवम्बर २०२२ में किया गया था। मात्र ११ महीने में विशाल भवन कर्मयोगी परिवार द्वारा स्वयं की देखरेख में भवन की सुदृढ़ता आदि का पूर्ण ध्यान रखते हुए, विद्युत उपकरण, पंखे, रंग-रोगन समस्त आवश्यक सुविधाओं के साथ भवन का लोकार्पण कर देना अत्यन्त प्रशंसनीय और सराहनीय कार्य है क्योंकि हम अपने निवास पर रहकर भी अपने निजी कार्य को इतनी शीघ्रता और उत्कृष्टता के साथ सम्पादित नहीं कर सकते जबकि कर्मयोगी परिवार ने लगभग ६०० किलोमीटर दूर से निरन्तर आवागमन कर इस परोपकारी कार्य को पूर्ण किया है। जिसके लिए कर्मयोगी परिवार का प्रत्येक सदस्य प्रशंसा का पात्र है। कर्मयोगी परिवार की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। परमात्मा न्यायकारी है, निश्चित रूप से कर्मयोगी परिवार के सभी सदस्यों को इन परोपकारी कार्यों के लिए परमपिता परमेश्वर सुख-शान्ति समृद्धि, आरोग्यता व दीर्घायु जीवन प्रदान करेगा।

लोकार्पण समारोह मालवा क्षेत्र के ओजस्वी-क्रान्तिकारी भजनोपदेशक, सैकड़ों ग्रामों में आर्यवीर दल शाखाओं के स्थापक, हजारों युवाओं के प्रेरणास्त्रोत, मध्यप्रदेश आर्यवीर दल के अधिष्ठाता पण्डित काशीराम जी अनल की अध्यक्षता में तथा श्रीमान् सुधीर जी देशपाण्डे, विभाग सह सम्पर्क प्रमुख : विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी इन्दौर सम्भाग की शुभचिन्तक रूप उपस्थिति में श्री केशुभाई गोटी अध्यक्ष मातुश्री काशीबा हरिभाई गोटी चैरिटेबल ट्रस्ट सूरत, श्री अनुभाई देवराजभाई तेजाणी, श्रीमती मंजुलाबेन अनुभाई तेजाणी, श्री जसमतभाई नानूभाई वाडिया, श्रीमती रेखाबेन जसमतभाई वाडिया, श्री वालजीभाई छगनभाई नावडिया, श्रीमती विलासबेन वालजीभाई नावडिया, श्री जगदीशभाई केशवभाई मांडविया के करकमलों द्वारा सम्पन्न किया गया। कर्मयोगी परिवार की ओर से श्री दिलीप भाई खेर,श्री चतुरसेन एन. वाडदोरीया, श्री धनजीभाई बी. वानाणी, श्री भावेशभाई के. सावलिया (फोटोग्राफर), श्री गोपाल जी की गरिमामयी उपस्थिति तथा गुरुकुल परिवार की ओर से प्रमुख सहयोगी स्वामी कल्पानन्द जी उज्जैन, स्वामी चन्द्रानन्द जी,आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी, आचार्य दयासागर जी थांदला, आचार्य विश्वामित्र जी इन्दौर, आचार्य भीमसेन जी मण्डला, आचार्य मोहनजी श्रुतबन्धु नर्मदापुरम, ग्राम-झोकर, जिला शाजापुर से श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रियां, श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार अधिवक्ता, ग्राम-बेरछा, जिला-शाजापुर से श्री आनन्दीलाल जी नाहर, सत्यपाल जी शास्त्री, श्री गोकुल जी आर्य मोहन बड़ोदिया, श्री रमेशचन्द्र जी आर्य टिगरिया, विदिशा से आर्यवीरदल प्रशिक्षक श्री राजकुमार जी, श्री सुरेन्द्र कुमार जी, श्री सन्दीप जी खेलना, श्री रामकिशोर जी कासदे भोपाल, श्री विक्रम जी आर्य ललरिया, श्री भानुभाई पटेल खण्डवा, लातूर महाराष्ट्र से श्री अशोक जी आर्य, श्रीमती सविता जी भालकीकर, श्री राकेश जी सोनी नासिक, श्री चैतन्य जी रड़े जलगांव, ग्राम-केहलारी सरपंच श्रीमती राजकुमारी जी चौहान, गुरुकुल संस्थापक आचार्य सर्वेश सिद्धान्ताचार्य जी, श्रीमती जमुनादेवी जी, श्री शेखर जी शास्त्री, श्री गौरव जी शास्त्री, श्री रोहित जी आर्य, श्री सोहन जी आर्य, श्री सुमन आर्य तथा सम्पूर्ण भारत से पधारे असंख्य आर्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति में हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। लोकार्पण समारोह का संचालन श्री हरेशभाई माणीया द्वारा किया गया।

इस अवसर पर दिनांक-१९ से २५ अक्टूबर तक आर्य वीर दल चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन आर्यवीर दल प्रशिक्षक श्री विजयकुमार जी आर्य, सीहोर तथा व्यायाम प्रशिक्षक श्री शैलजी, दिल्ली के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण शिविर काल में आर्य जगत् के सुविख्यात भजनोपदेशक श्री प्रतापसिंह जी, बरेली तथा श्री सुखदेव जी, करनाल के सुमधुर भजनों का लाभ उपस्थितजनों ने प्राप्त किया। वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा द्वारा वैदिक साहित्य विक्रय सेवा प्रदान की गई। ■

सनातन धर्म की रक्षार्थ स्थापित सिक्ख पंथ को ऐसा क्या है जो पृथक् राष्ट्र से मिल जाएगा?

● आचार्य सोमेन्द्र सिंह
रिसर्च स्कॉलर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ए–१९, न्यू जनकपुरी, अजंता कॉलोनी,
गढ़ रोड, मेरठ, पो. मेडिकल, जि. (उ.प्र.)
चलभाष : ९४१०८१६७२४

भारत की आन्तरिक समस्या में खालिस्तान की माँग ने सरकार को एक बार फिर से परेशान कर दिया है। जिससे भारतीय जन-मानस की स्मृति में ८० के दशक का उग्रवाद उभर आया है। उस समय की भयावह स्थिति ने देश को बहुत नुकसान पहुँचाया और देश ने बहुत कुछ खोया। खालिस्तान एक बार फिर से भारत के सबसे ज्यादा समृद्धशाली व वीरों की भूमि पंजाब को उग्रवाद की आग में धकेल रहा है। कुछ शरारती तत्व देश विरोधी ताकतों के साथ मिलकर भारत एवं अन्य देशों में खालिस्तान की माँग को लेकर धरने-प्रदर्शन व तोड़-फोड़कर रहे हैं। भारतीय दूतावासियों व पूजा स्थलों को भी निशाना बनाया जा रहा है, जो कि बहुत ही निन्दनीय एवं जघन्य अपराध है। सरकार को हर सम्भव कठोरता के साथ उनका दमन करना चाहिए। खालिस्तान की समस्या कोई नई समस्या नहीं है यह ब्रिटिश भारत से लेकर आज तक बनी हुई है। इतिहास के पन्नों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि सन् ३१ दिसम्बर १९२९ को लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन में पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. जवाहरलाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज्य की माँग की सभी ने इस प्रस्ताव को पास कर दिया। उसी समय तत्कालीन नेता तारासिंह ने खालिस्तान की माँग रखी। उसके बाद यह माँग आन्दोलन का रूप लेने लगी। सबसे पहले खालिस्तान की लिखित माँग १९४० में प्रकाशित **'खालिस्तान'** नामक पुस्तक में की गई थी। खालिस्तान का मतलब **'खालसे की सरजमीन'** है। इसके समर्थकों व सिख अलगाववादियों ने अलग सिख राष्ट्र की माँग करनी शुरू कर दी। सिख अलगाववादियों ने जो खालिस्तान रूपी राष्ट्र की मृगमरीचिका की कल्पना की उसमें भारत के पंजाब व राजस्थान का कुछ हिस्सा व पाकिस्तान के पंजाब का कुछ क्षेत्र शामिल किया है। इन तीनों को मिलाकर सिख अलगाववादी खालिस्तान नामक राष्ट्र बनाने का सपना देख रहे हैं। खालिस्तान का राष्ट्रवाक्य **'अकाल सहाए'** अर्थात् **'ईश्वर की कृपा से'** तथा राष्ट्रगान **'देह शिवा बर मोहि इहै'** अर्थात् **'हे सर्वशक्तिमान मुझे यह वरदान दो'** है। खालिस्तान के समर्थक इसका उद्देश्य बताते हैं कि जैसे मुस्लिमों के लिए अलग देश पाकिस्तान बना है। उसी प्रकार सिखों के लिए भी अलग खालिस्तान होना चाहिए।

इसी प्रकार की भावनात्मक भावनाओं को भड़का कर कुछ सिख अलगाववादियों ने इस आन्दोलन को चलाया है। तारासिंह द्वारा भड़कायी इस चिंगारी ने ८० के दशक आते-आते विकराल रूप धारण कर लिया। खालिस्तान उग्रवाद १९८४ में अपने चरम पर था। पंजाब में खालिस्तान के समर्थकों ने ताण्डव मचा रखा था। उस समय खालिस्तानी नेता भिंडरावाले ने जनता को भड़काया और आन्दोलन को उग्र रूप दे दिया। उसने इस आन्दोलन को धार्मिक रूप देने का प्रयास किया। उसने सिखों के प्रमुख तीर्थ स्थल स्वर्ण मन्दिर पर कब्जा कर लिया। स्वर्ण मन्दिर से अलगाववादियों को बाहर निकालने के लिए १ जून १९८४ से १० जून १९८४ तक सेना द्वारा ऑपरेशन ब्लूस्टार चलाया गया। इसमें भिंडरावाले सहित अनेक अलगाववादी मार गिराए गए। उसके बाद भी खालिस्तान की माँग करने वालों के खिलाफ ऑपरेशन बुडरोज-जून-सितम्बर १९८४, ऑपरेशन शुद्धिकरण-१९८४ तथा ऑपरेशन ब्लैक थंडर-I, ३० अप्रैल १९८६ एवं ऑपरेशन ब्लैक थंडर-II, ९ मई १९८८ को चलाया गया। भारत की सरकार ने पंजाब में अलगाववाद की आग को बुझाने का प्रयास तो किया परन्तु कुछ स्वार्थी तत्वों ने उस अलगाववाद की आग को जलाए रखा। पंजाब की इस आग को बुझाने में भारत को बहुत कुछ खोना पड़ा है, जिसकी भरपाई करना असम्भव है। ऑपरेशन ब्लूस्टार के बदले में सिख कट्टरपंथियों ने ३१ अक्टूबर १९८४ की सुबह श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या कर दी। २३ जून १९८५ को एयर इंडिया के विमान को बम से उड़ा दिया गया, जिसमें ३२९ लोग मारे गए। १० अगस्त १९८६ को १३वें पूर्व थल सेनाध्यक्ष जनरल ए.एस. वैद्य की हत्या कर दी गई, इसके साथ ही ३१ अगस्त १९९५ को तत्कालीन सीएम बेअंत सिंह की भी हत्या कर दी गई। खालिस्तान के उग्रवादियों ने भारत एवं पंजाब को बहुत कष्ट दिए हैं जिन्हें अब समाप्त करने का समय आ गया है। खुद को वारिस पंजाब के संगठन का प्रमुख बताने वाले अमृतपाल ने एक बार फिर से खालिस्तान उग्रवाद को बढ़ावा दिया है। उसका स्पष्ट कहना है कि ''मैं खुद को भारतीय नहीं मानता, मेरे पास जो पासपोर्ट है ये मुझे भारतीय नहीं बनाता, ये यात्रा करने के लिए बस एक कागज भर है।'' इस प्रकार अलगाववाद की खुलेआम बात करने वालों को सरेआम शूली पर चढ़ा देना चाहिए। देश की एकता और अखण्डता के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। आज विश्व के कई देशों में खालिस्तान समर्थकों ने भारतीय दूतावास व हिन्दू पूजा स्थलों को निशाना बनाया है। कई स्थानों पर तो भारतीय तिरंगे का भी अपमान किया गया है। सरकार को सख्ती के साथ इन कुछ मुट्ठीभर खालिस्तानियों से निपटना चाहिए। साथ ही सरकार को कनाड़ा, लंदन, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका में अभिव्यक्ति के नाम पर हो रहे खालिस्तान के प्रदर्शनों पर रोक लगाने के लिए दबाव बनाना चाहिए। आज भारत विश्व की बढ़ती अर्थव्यवस्था है। इस प्रकार के आन्दोलनों से भारत की छवि खराब होती है जो भी संगठन व देश इस उग्रवाद को बढ़ावा एवं आर्थिक मदद दे रहे हैं, उनके खिलाफ भी कार्यवाही सरकार को करनी चाहिए। पंजाब सीमावर्ती राज्य होने के कारण बहुत ही संवेदनशील है। इसलिए राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार को मिलकर सटीक, ठोस एवं कारगर रणनीति बनाकर कठोर कार्यवाही करनी चाहिए। सख्त कार्यवाही एवं विदेशों के साथ कूटनीतिक वार्ता ही इस समस्या का समाधान है। सेवा एवं देशभक्त की पर्यायवाची सिख कौम को खालिस्तान के उग्रवादियों के बहकावे में आने की जरूरत नहीं है। भारत में खालिस्तान बनाने का सपना देखने वालों को यह समझ लेना चाहिए कि यह सपना ही उनकी मौत का निमन्त्रण है। पंजाब भारत का अभिन्न अंग था है और हमेशा रहेगा।

जय हिन्द जय भारत ■

आज का मनुष्य

● राधेश्याम गोयल
न्यू कॉलोनी, कोदरिया (महू)
चलभाष : ९६१७५९७९१०

आज के मनुष्य का भौतिक युग में भौतिकता का जीवन पिछले पचास वर्षों की अपेक्षा सभी तरह से सम्पन्न है, वह विलासिता के सभी साधनों से युक्त बंगले कार तथा उच्च वर्ग की सोसायटी तो मेंटेन कर रहा है, परन्तु परिवार से समाज से कटकर व्यस्त तथा भागमभाग की जिन्दगी जी रहा है, जिससे उसका सुकून, आत्मशान्ति उससे छिनते जा रहे हैं।

अत्यधिक महत्वाकांक्षा और अति स्वार्थ के कारण सब कुछ होते हुए भी वह निर्धन और असहाय सा अपने को महसूस करता है। कारण नेक एवं सत्कार्यों एवं सु-संस्कारों की कमी से आत्मिक सुख–शान्ति और उस परम पिता परमेश्वर से भी बहुत दूर होकर दिन-रात के टेंशन में रहकर कई तरह की बीमारियों से ग्रसित हो अल्पायु में ही संसार से बिदा हो रहा है। आज के समय में मनुष्य का कमाया धन दवाइयों, अस्पतालों, उच्च वर्ग की शिक्षण संस्थाओं, कोर्ट-कचहरी तथा हाई-फाई सोसायटी में जाया हो जाता है, क्योंकि वह सत्यता को छोड़ आडम्बर और दिखावे में अधिक विश्वास रखता है। आज मनुष्य वैदिक संस्कारों अपनी संस्कृति से दूर होकर मैकाले की शिक्षा पद्धति को अपनाकर अच्छे पैकेज तथा पद प्रतिष्ठा तो प्राप्त कर लेता है, परन्तु स्वार्थवश संस्कारहीनता के कारण भ्रष्ट आचरण के द्वारा परिवार सहित दु:खी होकर प्रायश्चित के कुचक्र से भी बच नहीं सकता है, इसका भी कारण वेदों से दूर होना है।

आज का मनुष्य एकल परिवार में रहकर अपने को सुखी एवं सम्पन्न समझता हो परन्तु ये उसका कोरा भ्रम है इससे मनुष्य परिवार से टूटकर समाज से भी दूर होकर एकाकी जीवन जीता है, जिसके दूरगामी परिणाम अच्छे नहीं होकर बच्चों पर बुरा प्रभाव डालते हैं, बच्चे अपनी संस्कृति तथा मर्यादाओं और अपने सनातन धर्म से विलग हो अंकुशहीन होकर आज के माहौल में ढलकर लिव इन रिलेशन, लव मैरिज करके जीवन दुश्वार कर लेते हैं और ड्रग्स एवं अन्य दुर्व्यसनों के शिकार होकर आत्महत्या का घृणित कार्य करके परिवार में माता-पिता को एकल परिवार का दंश दे जाते हैं। आज समाजों में अन्तर्जातीय विवाह बहुतायत से हो रहे हैं, जो सामाजिक मजबूरी या बच्चों के दूरगामी विचारों की कमी से होते हैं, जो बहुत कम अन्त तक चलते हैं, कुछ लव मैरिज के थोड़े दिनों बाद ही तो कुछ एक बच्चों के बाद स्वार्थ या एक-दूसरे से अत्यधिक अपेक्षा के कारण तथा सामाजिक मान-मर्यादा की कमी भी ऐसे परिवारों में खुली विचारधारा के कारण बिछोह का रूप धर कर विघटन हो जाता है, जो बच्चों के भविष्य को जीवन पर्यन्त सहना पड़ता है।

आज मनुष्य परिवार नियोजन अपनाकर एक या दो बच्चों में सन्तुष्ट हो जाता है वह यह नहीं समझता कि इससे आगे चलकर रिश्ते जो काका, मामा, बुआ, मौसी, बहन-भाई के होते थे वो सभी खत्म हो जाएँगे और वही बच्चे जब पढ़-लिखकर बाहर जॉब करने चले जाएँगे तो एकाकी जीवन, चौथेपन, बुढ़ापा, कष्टों में गुजारना पड़ता है और कई बार तो पड़ौसी ही उनका सभी कार्य करते हैं, बच्चे तो आ भी नहीं पाते हैं जो उनका स्वप्न था वो उनके लिए अभिशाप बनकर घातक सिद्ध हो जाता है। माना कि परिवार नियोजन जनसंख्या नियंत्रण का एक अच्छा और नियोजित विकल्प है, परन्तु एक परिस्थिति के बाद यह एक दु:ख का कारण भी बन जाता है। जिससे सुसंस्कृत और अच्छे लोगों की जनरेशन में कमी के कारण समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में बाधा उत्पन्न हो सकती है, इसलिए परिवार नियोजन हो तो समाज और राष्ट्र के सभी वर्गों के लिए नियमपूर्वक अनिवार्य होकर पक्षपात रहित होना चाहिए। अत: आज मनुष्य को सनातन वैदिक धर्म को जीवन में अपनाकर उसके सिद्धान्तों पर चलकर जीवन को सुखमय बनाना चाहिए। ■

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम् इति! शुभम!

शूद्र भी आर्य (हिन्दू) ही हैं

● आचार्य रामगोपाल सैनी
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७१३

आर्य जाति में चार वर्ण माने जाते हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। कालान्तर में आर्य जाति का नाम पड़ गया- हिन्दू धर्म। कुछ लोग यह भ्रान्ति फैला रहे हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तो आर्य हैं तथा शेष सभी जातियाँ अनार्य हैं। जो जातियाँ शूद्र वर्ग में आती हैं वे भी आर्य तो हैं ही, क्योंकि आर्यों के केवल तीन वर्ग ही नहीं हैं, चार वर्ण हैं। चौथा वर्ग- शूद्र वर्ग भी आर्य है। आर्यों के चार वर्णों में शूद्र वर्ग की भी गणना है। महात्मा ज्योतिबा फूले ने अपने ग्रन्थों में **'शूद्र एवं अतिशूद्र'** शब्दों का प्रयोग स्थान-स्थान पर किया है। उन्होंने इन शब्दों का प्रयोग कर शूद्रों का आर्य धर्म का चौथा वर्ग होना स्वीकार किया है। इस प्रकार शूद्रों को उन्होंने आर्य स्वीकार किया है।

फूले ने जहाँ भी विरोध किया है वहाँ लिखा है- इन आर्य ब्राह्मणों ने ऐसा किया। उन्होंने आर्य क्षत्रियों, आर्य वैश्यों एवं आर्य शूद्रों का विरोध नहीं किया। डॉ. अम्बेडकर ने भी अपनी पुस्तक **'शूद्र कौन थे?'** में स्वीकार किया है कि आज जो शूद्र हैं वे एक जमाने में क्षत्रिय थे। ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के मध्य चले लम्बे संघर्ष में क्षत्रिय पराजित हो गए और वे अधिकार विहीन होकर शूद्रों में गिने जाने लगे। महात्मा बुद्ध ने भी अपनी शिक्षाओं का नाम **'चार आर्य सत्य'** रखकर यह सिद्ध किया है कि उन्हें आर्य शब्द बहुत प्रिय था। इससे उन्होंने स्वयं को आर्य माना है। ■

प्रजातन्त्र या मूर्ख अथवा धूर्त तन्त्र?

● **स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती**
८/५४, तेजेन्द्र नगर भाग–७,
चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात
चलभाष : ८१५५०५५२६०

१. आज अपने देश में प्रजातन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित है। जिसका संवैधानिक अर्थ यह है कि प्रजा के द्वारा, प्रजा के लिए, प्रजा पर शासन करना। वैसे तो इस प्रणाली का प्रारम्भ तो सन् १९२६ में ही हो गया था, मगर विधिवत् प्रारम्भ तो इसका सन् १९४७ में ही सम्भव हो सका था, जो देश के ऊपर जबरन थोपी गई थी। जिस प्रकार इसका नाम जितना सुन्दर है, उतनी ही इससे उत्पन्न एवं प्रणीत घृणित बुराइयाँ हैं। जिनका परिणाम आज देश की वर्तमान दुर्दशा है। जिसका कोई भविष्य नहीं कि कल क्या होगा? इस दुर्दशा का यदि कोई जवाबदार है, तो केवल और केवल प्रजातन्त्र शासन प्रणाली ही है।

२. साहित्यिक भाषा में कहते हैं कि साहित्य ही समाज का दर्पण होता है अर्थात् जिस काल में जो साहित्य लिखा गया था या लिखा जा रहा है अथवा आने वाले समय में लिखा जाएगा। वह साहित्य उस समय के हालातों का प्रतिबिम्ब होगा। जो तत्कालीन लेखकों द्वारा लिखा गया है, लिखा जा रहा है अथवा लिखा जाएगा। तो हमारे देश का जो वर्तमान संविधान है, वह आजादी के पश्चात् ही लिखा गया था, जिसे २६ जनवरी१९५० से प्रभावी माना गया था।

३. तत्कालीन संविधान निर्माताओं के सामने तत्कालीन परिस्थितियाँ ही उनके सामने होंगी, जैसे कि देश को हजारों साल की गुलामी के पश्चात् देश की प्रजा को खुली हवा में साँस लेने का अवसर प्राप्त हो रहा था। देश में भयंकर गरीबी रही होगी। भयंकर अज्ञानता का पंजा जन-जन के सिर पर छाया रहा होगा। न धर्म के नाम पर अनेकानेक सम्प्रदाय और न ही मत–मतान्तर ही रहे होंगे और न ही धर्म के नाम पर इतने लूट-खसोट करने वाले गुरु-घण्टाल ही होंगे। उस समय की प्रजा आज के समान धूर्त और पाखण्डी नहीं रही होगी। क्योंकि आक्रमणकारियों ने देश की प्रजा को कुछ करने, सुनने, समझने योग्य छोड़ा ही नहीं होगा। ऐसी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही तत्कालीन संविधान सभा ने वर्तमान संविधान की रचना की होगी।

४. वर्तमान में परिस्थितियाँ लगभग विपरीत हो गई हैं। न तो हम पहले जैसे आक्रमणकारियों के गुलाम रहे, न हम आज उतने गरीब रहे और न ही आज हम उतने अशिक्षित और अज्ञानी ही हैं। **हाँ कुछ अपवाद छोड़कर धूर्त, पाखण्डी, नालायक, स्वार्थी और निकम्मे अवश्य हो गए हैं।** आज के वर्तमान में उस समय की अपेक्षा व्यक्ति बदले, परिवार बदले, समाज बदले, देश बदला, विश्व भी बदल गया। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि साहित्य ही समाज का दर्पण है, यही बात यहाँ पर बराबर सिद्ध हो जाती है कि जब सब कुछ बदल गया तो अपने देश के संविधान में संशोधन क्यों नहीं होना चाहिए? अथवा बदला जाना क्यों नहीं चाहिए?

५. प्रजातन्त्र का उस समय जो अर्थ लगाया गया था कि देश की प्रजा ही स्वयं अपना शासक अपने ही बीच में से योग्य व्यक्तियों को यानी प्रतिनिधियों को चुनकर शासक नियुक्त कर के ग्राम पंचायतों, नगर पालिकाओं में, विधानसभाओं में तथा संसद में भेजे। ऐसे प्रतिनिधियों को पाँच वर्ष तक शासन करने दें। पुनः पाँच वर्ष के पश्चात् उपर्युक्त प्रक्रिया अपनाई जाए जो अच्छे प्रतिनिधि सिद्ध हुए हों उन्हें पुनः चुन लिया जाए और निकम्मे लोगों को नकार दिया जाए। इस प्रकार अच्छे लोग पुनः साथ में रहेंगे और इन पाँच सालों में प्रजा को अच्छे–बुरे की पहचान भी हो जाएगी तथा इस बीच में प्रजा को यह भी अधिकार, जो गुप्त है, रहेगा कि किसी भी अयोग्य व्यक्ति को आन्दोलन करके सत्ता से पृथक् कर सकती है।

(शेष भाग आगामी अंक में)

श्रद्धानन्द आर्य समाज, चिचोली का ११५वाँ वेद प्रचार महोत्सव सम्पन्न

दिनांक २५ से २९ अक्टूबर २०२३ तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्विजन्मशताब्दी वर्ष उपलक्ष्य तथा वार्षिकोत्सव स्वरूप श्रद्धानन्द आर्य समाज, चिचोली, जिला–बैतूल, मध्यप्रदेश का ११५वाँ वेद प्रचार महोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशीका सुश्री अंजलि आर्या के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न किया जाकर सुश्री अंजलि आर्या के भजन–उपदेश व आर्य जगत् के युवा संन्यासी दर्शनाचार्य स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती के आध्यात्मिक गूढ़ उपदेशों का लाभ प्रात:कालीन यज्ञ पश्चात् तथा रात्रिकालीन सत्र में उपस्थितों ने प्राप्त किया। इस अवसर पर विशेष रूप से कानपुर के जयकरण जी शास्त्री ने भी अपने उपदेशामृत का पान करवाया। इस अवसर पर आर्य समाज के पूर्व प्रधान तथा अन्य पदाधिकारियों, सहयोगियों, व अतिथियों का भावभीना अभिनन्दन वर्तमान प्रधान श्री अशोक जी आर्य, मन्त्री संजय जी जायसवाल तथा सहयोगी वर्तमान पदाधिकारियों के द्वारा किया गया। गुरुकुल जमानी के आचार्य सत्यप्रिय जी ने भी गुरुकुल के १२ ब्रह्मचारियों के साथ उपस्थित होकर आयोजन की गरिमा में अभिवृद्धि की। सेन्धवा, जिला–बड़वानी से श्री अन्तरसिंह जी आर्य व सुन्द्रेल, जिला–धार से श्री विश्वनाथ जी पटेल तथा बैतूल से श्री सन्तोष जी मदरेले, आर्य समाज बैतूल बाजार के प्रधान श्री रविकुमार जी वर्मा सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। स्थानीय आर्य सज्जनों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर आयोजन में भाग लिया। समापन दिवस पर भोजन प्रसादी की व्यवस्था की गई। आयुर्वेदिक औषधि सेवा श्री ओमप्रकाश आर्य गोहरगंज द्वारा तथा वैदिक साहित्य सेवा वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा द्वारा प्रदान की गई। संचालन संस्था मन्त्री संजय जायसवाल ने किया आभार प्रदर्शन संस्था प्रधान अशोक जी आर्य ने किया हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द आयोजन सम्पन्न हुआ।

(चित्रावली रंगीन पृष्ठ २२ पर देखें)

जवानी को याद करेंगे

एक दिन हम बूढ़े हो जाएँगे, हाथ–पैर और अंग मुड़ जाएँगे।
दवाइयों पर धन बर्बाद करेंगे, दु:ख में हाय–हाय करेंगे।।
जवानी को याद करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।

चलना–फिरना भी तब कम होगा, गिर पड़ने का सदा डर होगा।
छड़ी ले हाथ चला करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।१।।

मुँह में तब कोई दाँत नहीं होगा, मनचाहा खाना भी तब मुश्किल होगा।
दलिया खिचड़ी संग निर्वाह करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।२।।

आँखों से भी दिखना कम होगा, एक ठौर ही तब टिकना होगा।
सहारे के लिए तरसा करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।३।।

कानों से भी सुनना तब कम होगा, गुमसुम बन के पड़ा रहना होगा।
हँस–हँसकर बतियाने को याद करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।४।।

घर में बनते पकवानों की खुशबू आएगी, नहीं देंगे खाने को मन में रह जाएगी।
क्या बना है बच्चों से पूछा करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।५।।

लाचारी–बेकदरी में जीना होगा, सब कुछ तज के जग से जाना होगा।
पछतावे में ही ईश्वर को याद करेंगे, जवानी को याद करेंगे...।।६।।

बुढ़ापे में भी खुश रह सकते हैं, ईश्वर की व्यवस्था समझ,इसे सह सकते हैं।
और गये पर हम जीवित हैं, ईश्वर का गुणगान करेंगे।।

जवानी को याद करेंगे...।।७।।

● **देशराज आर्य**
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

सनातन में हिन्दू आईएनडीआईए का दलदल

● **ले. नरसिंह सोलंकी**
प्रधान आर्य समाज, सूरसागर, जोधपुर (राज.)
चलभाष : ९४१३२८८९७९

भारत में मुस्लिम आक्रमणकारी आए तब भारतीयों को हिन्दू शब्द दिया और भारतीयों को हिन्दुस्तानी और हमने अच्छे शब्द मानकर अपना लिया, जिसका आज तक हम खामियाजा भुगत रहे हैं। मुस्लिमों ने भारत में ७०० वर्ष राज किया जिसमें उन्होंने यहाँ के लोग जो मुसलमान नहीं बनना चाहते थे, उनका कत्लेआम किया, जो बच गए वो गुलाम बन कर रह गए, स्त्रियों का देहशोषण करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी।

भारत में मन्दिरों को नष्ट करने की मुहिम चलाई गई। कई मन्दिर तोड़कर मस्जिदें बनाई गई जो आज भी हमारी नजरों के सामने खटक रही है। भारत में इतने विशाल मन्दिर थे जिनको तोड़ना असम्भव था। उनमें मूर्तियों के नाम तोड़कर अपना मंसूबा पूरा किया, लेकिन वो भी सनातन धर्म को कितनी ही कोशिशों के बावजूद मिटा नहीं सके। नालन्दा विश्वविद्यालय की लाखों पुस्तकें जला डाली, जो कई वर्षों तक जलती रही। वहाँ दुनियाभर के विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे।

हमारे कई आर्य समाजी विद्वान् लोग सउदी अरब व मुस्लिम देशों में गए वहाँ वेदों का प्रचार किया। वहाँ उन्हें मालूम हुआ कि हिन्दू शब्द का अर्थ गुलाम अथवा मूर्ख है, जैसा कि फारसी शब्दकोष में स्पष्ट लिखा हुआ मिला था। हिन्दू, हिन्दुस्तानी अथवा हिन्दी शब्द कोई प्राचीन शब्द नहीं है। हमारे पुराण व वैदिक ग्रन्थ- चारों वेद, रामायण, महाभारत, गीता, १८ पुराणों आदि किसी भी ग्रन्थ में हिन्दू-हिन्दुस्तानी शब्द अंकित नहीं है। कई प्रबुद्ध लोग आज भी अपने नाम के आगे आर्य लिखते हैं। हमारा प्राचीन भारत आर्यवर्त कहलाता था। बाद में राजा भरत के गंगावतरण के बाद भारत नाम पड़ा। हिन्दी भाषा देवनागरी कहलाती थी। हम सनातनी थे व सनातनी ही रहेंगे। सनातन को मिटाना चाहते हैं वे खुद सनातनी हैं, यह भूल न करें तो ही अच्छा है। अन्त में **''गर्व से कहो हम आर्य हैं।''**

भारत में मुस्लिमों के शासन के बाद अंग्रेजों ने १९० वर्षों तक शासन किया व भारतीयों को खूब लूटा व यहाँ की संस्कृति को मिटाने की भरसक कोशिश की थी, लॉर्ड मैकाले ने तो यहाँ की पढ़ाई ही बदल दी और काले अंग्रेज पैदा किए।

मुसलमान शासकों ने आर्य को हिन्दू और भारतवर्ष को हिन्दुस्तान गुलामी का नाम दिया तो अंग्रेजों ने यहाँ के आर्यों को इंडियन और भारतवर्ष का इंडिया नाम रखा जिसका ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी के पृष्ठ सं. ७८९ पर लिखा है– इंडियन, जिसका मतलब ये बताया गया है- 'ओल्ड फैशन्ड एण्ड क्रिमिनल पीपुल्स' अर्थात् पिछड़े और घिसे-पिटे विचारों वाले अपराधी लोग।

अत: इण्डिया का अर्थ हुआ असभ्य और अपराधी लोगों का देश। भारत माता तथा भारतीयों का अपमान करने के लिए गोरों ने यह नाम दिया था। अत: आप सभी मित्रों से निवेदन है कि इण्डिया नाम का और इस नाम का समर्थन करने वाले इन्सानों का बहिष्कार करें, क्योंकि ऐसी व्यवस्था हो जिसमें हिन्दी में भारत और अंग्रेजी में (बीएचएआरएटी) कहा जाए। कोई अगर अपने दल या संस्था का नाम इण्डिया रखता है तो यह नाम नासमझी मानी जाएगी। क्योंकि कौन अपने आपको पिछड़ा हुआ अथवा अपराधी ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी के अनुसार मानना चाहेगा? अत: यह स्वाध्याय की कमी का नतीजा ही माना जाएगा। ■

इस्लाम मुक्त भारत-ISLAM FREE INDIA (IFI)

गतांक पृष्ठ ३६ से आगे

● राधाकिशन रावत
१००६, जीवाभाई टॉवर,बोकड़देव, अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष : ९४२८५९४०५७

१३. कुछ अच्छे प्रयास : वर्तमान केन्द्र सरकार ने एक साहसिक कदम उठा लिया है। जैसे कि कश्मीर में धारा ३७० को समाप्त करना, आतंकी संगठन पीएफआई पर प्रतिबन्ध (सितम्बर २०२२)। लेकिन ये कदम काफी नहीं है। सरकार के लिए दूसरे अनेक बन्धन, रुकावटें (जैसे कि लोकसभा, राज्यसभा में बहुमत, संविधान, कोर्ट इत्यादि) भी हैं।

१४. आग फैलने से पहले कुआँ, बाढ़ से पहले बाँध बनाना: इस आगामी निश्चित गम्भीर संकट के लिए हम सभी को व्यक्तिगत सामूहिक विभिन्न स्तरों पर (तात्कालिक, मध्यम व दीर्घ कालीन अवधि) विभिन्न प्रकारों से (हिंसक, अहिंसक) युक्तिपूर्वक तैयारी करनी होगी। भिन्न-भिन्न स्थानिक परिस्थितियों, सामाजिक, राजनैतिक बलाबल अनुसार अपनी रणनीति अपनानी होगी जो निम्न बिन्दुओं पर केन्द्रीत की जा सकती है।

१. उपर्युक्त विचारधारा का जोर-शोर से प्रचार-प्रसार करना।
२. असामाजिक तत्वों का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बहिष्कार करना।
३. सुरक्षा एवं आक्रमण हेतु शस्त्र संग्रह, विशेष कर छोटे स्वसंचालित हथियार बम्ब विस्फोटक शस्त्र ट्रेनिंग लेना।
४. शक्ति प्रदर्शन एवं गुरिल्ला पद्धति (कमजोर दुश्मन पर हमला, आवश्यकतानुसार पीछे हटे किन्तु भविष्य में हमला, डर पैदा करना।)
५. शस्त्र खरीदने, पीड़ित सहायता, कानूनी दांव–पेंच हेतु आर्थिक सहयोग एकत्र करना।
६. टारगेट निश्चित करना, भड़काऊ कट्टर गतिविधियों में लिप्त नेता, दबंग, कठमुल्लों का सफाया, अन–अधिकृत मजिस्दों, मजारों, मदरसों का कानून सम्मत निस्तारण।
७. सरकार पर दबाव :
   (ए) धर्म आधारित दी जाने वाली सुविधाएँ बन्द करें।
   (बी) जनसंख्या नियन्त्रण कानून बनाना।
   (सी) अल्पसंख्यक, सैक्युलर शब्द संविधान से हटाना।
   (डी) एक देश एक कानून 'कॉमन सिविल कोड' बनाना।
   (ई) सीएए, पीआरसी का शीघ्र पालन करना।
   (एफ) राष्ट्रगान, जयहिन्द, भारत माता की जय बोलना अनिवार्य करना।
   (जी) भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करना।
८. शुद्धि आन्दोलन (घर वापसी) को गति देने का आयोजन करना।
९. विद्वानों तथा चिन्तकों से इस सम्बन्ध में उनके सुझाव माँगना।
१०. अपनी रणनीति को गुप्त रखना, केवल अपने विश्वासपात्रों से ही चर्चा करना।
११. **'शठं शाठ्यम् समाचरेत्'**– जैसे को तैसा–साम, दाम, दण्ड, भेद नीति अपनाना।

(१५) युवाओं–वृद्धों में अपील– (विशेष निवेदन) : अधिकांश संघर्षों, युद्धों, लड़ाइयों में युवाओं को आह्वान किया जाता है कि वे नेतृत्व कर जोर–शोर उत्साह से कार्य करें, वे ही कर्णधार हैं, भविष्य उन्हीं से सुरक्षित हैं आदि आदि। बहुत हद तक ठीक भी है। शारीरिक क्षमता उनमें बहुत होती हैं।

किन्तु साथ–साथ वृद्धों से मेरा विशेष अनुरोध है (यह पत्र मैंने बहुत सोच–विचार कर संजीदगी से लिखा है) कि बुजुर्ग लोग अपना इस युद्ध में सर्वस्व झोक दें, उन्हें कुछ खोने का है ही नहीं। अब तक हमने अपने संसार के सभी भोग–भोग लिए होंगे। अभी हम लोग ६०/७०/८० की वय में पहुँच चुके हैं और ५–१०–१५ वर्ष और जी लेंगे। विचार करें इस आगामी काल में हम कौन से पहाड़ तोड़ लेंगे? कौन से तीर मार लेंगे। हममें से अधिकांश ने अपना जीवन पेट–पूजा या परिवार पालन या स्वार्थ पूर्ति में ही बिताया होगा। अब हमारे लिए सुनहरा अवसर है कि हम संकुचित दायरे से ऊपर उठ कर अपने धर्म, देश, समाज का ऋण चुकावें।

ऐसे शुभ कामों में अपना समय,शक्ति लगाएँ। अपने अनुभवों का लाभ वर्तमान पीढ़ी को विरासत में दें। ऐसा करने में हमारा मन प्रसन्न होगा। शारीरिक स्वास्थ्य सुधरेगा, जोश–उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। हमें गर्व होगा कि हमारे बच्चों के लिए हमने बलिदान दिया। याद रखें, अन्यथा हमारी संतानें अपनी भयंकर दुर्दशा के लिए हमें अवश्य दोष देंगी, हमारी निष्क्रियता, भीरूपन, अदूरदर्शिता आदि के लिए। अत: अपनी बची–खुची को हम सफल एवं सार्थक बनाएँ। साथ–साथ मृत्यु का भय छोड़ दें वह तो अवश्यम्भावी है तो क्यों न शहीद का स्थान पाएँ :

'इक रोज तो मरना ही होगा, फिर क्यों न वतन पे मर जायें,
इतिहास के पन्ने याद करें एक काम तो ऐसा कर जायें।'

(१६) याद रहे पुनः याद रहे : यह हमारे लिए अन्तिम युद्ध है। अपने अस्तित्व को बचाने का। धर्म, देश, राष्ट्र, संस्कृति, सभ्यता, नारी सम्मान, गौ, गुरुकुल, आश्रम व्यवस्था आदि बचाने का, उच्च परम्पराओं को जीवित रखने का। अत: सर्वोच्च बलिदान के लिए तैयार रहें।

याद रहे हमारा उद्देश्य महान्, पवित्र, शास्त्रानुकूल, धर्मानुकूल, मानव मूल्यों पर आधारित है। हमें दुष्टों, दानवों, राक्षसों, अधर्मियों का गुलाम नहीं बनना है।

याद रहे : हम सब धरतीपुत्र हैं, श्रेष्ठों की सन्तान हैं, भारत के मूल निवासी हैं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम तक) हम सब आर्य हैं (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) कोई भेदभाव नहीं। अत: निजी स्वार्थों से ऊपर उठें। **एकता परमोधर्म:**

याद रहे : हमें अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है। मिथ्या भ्रम में नहीं रहे कि भगवान आवेंगे। हमें बचाएँगे (सोमनाथ के १७ हमले याद रखें) ईश्वर हमारे कर्मों का फल अवश्य देगा।

याद रहे : हम सब महान् आत्माएँ हैं, शक्तिवान् हैं, सामर्थ्यवान् हैं। अज्ञान, अविद्या, मिथ्याज्ञान ने हमें भीरू, डरपोक, कायर, निठल्ला बना दिया है। अपना सच्चा स्वरूप याद कर अन्यायी,अत्याचारी,दुराचारी,अधार्मिकों को पराजित करना है।

याद रहे : अपने–अपने समयानुसार इस महान् यज्ञ में अपने तन–मन–धन की आहुति देनी है। प्रचार–प्रसार, अस्त्र–शस्त्र, प्रशिक्षण, संगठन, योजनाएँ बनाएँ। दुश्मन को कम नहीं आंके।

याद रहे : सरकार के भरोसे नहीं रहे, कायदा कानून, प्रशासन लचर है, भ्रष्ट है। स्वयं को सम्बल बनाएँ। आत्मरक्षा करते हुए शत्रु का सफाया करें। मौका नहीं चूकें। पर अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ाएँ।

याद रखें : 'अभी नहीं तो कभी नहीं'

याद रहे : विदेशी और अधर्मियों के फिर से गुलाम नहीं बनेंगे। राष्ट्र बचायेंगे, धर्म बचायेंगे। **'आजाद बन के रहेंगे।'**

याद रहे : (१) अपना लक्ष्य– राष्ट्र बचाओ, धर्म बचाओ
(२) अपना नारा— हिन्दू एकता परमोधर्म
(३) अपना विरोध— विधर्मी विदेशी गुलामी से
(४) भगवा झण्डा— लहराता रहे

'क्या हुआ गर मिट गए अपने वतन के वास्ते
बुलबुल कुर्बान होती है अपने चमन के वास्ते।' (समाप्त) ■

(पृष्ठ ६ का शेष भाग)

डिप्टी कमिश्नर, सिटी मजिस्ट्रेट, कोतवाल आदि अधिकारियों की कतार लगी हुई थी। स्थिति भयंकर थी। स्वामी जी जनता को शान्त रहने का उपदेश दे रहे थे। जब सभा समाप्त हुई, तब आकाश में सन्ध्या का अन्धेरा छा चुका था। सभा स्थान से आगे-आगे स्वामीजी चले और उनके पीछे नारे लगाती हुई जनता चली। लगभग बीस-पच्चीस हजार की भीड़ होगी। भीड़ घण्टाघर की ओर जा रही थी। उनके पीछे-पीछे कई मशीनगनें और बहुत से घुड़सवार सिपाही, मानो पहरा देते जा रहे थे। जन समुदाय घण्टाघर तक पहुँच गया। कम्पनी बाग की ओर से कुछ गोरखा सिपाही खड़े थे। स्वामी जी ने लोगों को खड़े रहने का आदेश दिया। वे सिपाहियों के सामने जाकर खड़े हो गए। उन्होंने सिपाहियों से पूछा- **''गोली क्यों चलाई?''** इस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर अपनी बन्दूकों की संगीनें स्वामीजी की ओर बढ़ाते हुए कहा, **''हट जाओ, नहीं तो हम छेद देंगे।''** स्वामीजी आगे बढ़कर बोले- **''मार दो।''** और वहीं खड़े रहे। एक अंग्रेज अफसर आया। सिपाहियों ने बन्दूकें नीची कर लीं। स्वामीजी ने उससे पूछा- **''गोली क्यों चलाई गई?''** अफसर ने कहा- **''भूल से चल गई थी।''** उसने सिपाहियों से रास्ता छोड़ने का आदेश दिया। सिपाही पीछे हट गए। जुलूस आगे बढ़ गया।'' स्वामी श्रद्धानन्द का यह शौर्य, पराक्रम सदैव अमर रहेगा।

४ अप्रैल को दोपहर बाद जामा मस्जिद में मुसलमानों का जलसा हो रहा था। मौलाना अब्दुल्ला ने आवाज देकर कहा- **''स्वामी श्रद्धानन्द की तकरीर भी होनी चाहिए।''** स्वामीजी लाए गए। उन्होंने ऋग्वेद के एक मन्त्र से व्याख्यान दिया। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः के साथ समाप्त किया। किसी मस्जिद में स्वामीजी का यह पहला और अन्तिम भाषण था। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे।

स्वामी श्रद्धानन्द का सारा जीवन राष्ट्र सेवा में बीता। अपने लिए नहीं राष्ट्र के लिए जीए। धन-सम्पदा सब आर्य समाज व गुरुकुल के लिए अर्पित कर दिये। छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाति का खुलकर विरोध किया। विधवा विवाह का समर्थन किया। देश की स्वतन्त्रता में योगदान दिया। अन्ततः मतान्ध की गोली से शहीद हो गए। एक अनुव्रती पुत्र ने अपने पिता की स्मृति में जो कुछ लिखा है, वह आज की बिखरती हुई पीढ़ी के लिए एक महान् सन्देश है। अपने पिता का संस्मरण लिखकर इन्द्र विद्याचवसपति की लेखनी धन्य हो गई। उन्होंने पिता के आदर्शों को जीवन में अपना लिया। एक आज्ञाकारी पुत्र बनकर पिता का अनुव्रती बने रहे। आज की स्वार्थपरक राजनीति उनके आदर्शों से मेल नहीं खाती। इस संस्कारविहीन होते समाज के लिए गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की महती आवश्यकता है। जाति की गहरी होती जड़ों को उखाड़ फेंकने के लिए अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन करना होगा। यह युग की माँग है। जब तक देश में जाति-पाति का रोग रहेगा, तब तक मनुष्य उस कँटीली झाड़ी में उलझकर काँटों से बिंधता रहेगा। अपना सर्वस्व त्याग करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द सदैव आर्यों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। आइये, हम भी उनके जीवन से कुछ सीख लें। ■

माँ का आँचल

माँ के आँचल की विशालता
सागर से भी बहुत बड़ी।
आसमान सा साया देता
जब वह मेरे संग खड़ी।
माँ ने कभी जींस न पहनी
केवल आँचल ही ओढ़ा।
गरिमामयी छवि माँ को दी
न सिद्धांत कभी तोड़ा।
बच्चों का पसीना आँसू
आँचल से ही पोंछा था।
करी सफाई मुँह-कान की
नया तरीका खोजा था।
गोद में सोता बच्चा माँ की
आँचल चादर बन जाता।
नहीं जरूरत थी गद्दे की
मीठी नींद वहीं पाता।
हाथ पोंछती थी माँ इससे
इसे तौलिया रूप दिया।
खाना खाया मुँह को पोंछा
आनन्द था भरपूर लिया।
राह दिखाता माँ का आँचल
सकल सृष्टि मुट्ठी में थी।
जिस बच्चे ने इसको पाया
चिंता तो चुटकी में थी।
छाता व एप्रेन बन जाता
माँ का आँचल ऐसा था।
जामुन फूल गिरे झोली में
मैं बूझूं यह कैसा था।
घर में रखे सामान की
धूल पोंछती आँचल से।
खोई चीज़ गाँठ में मिलती
नहीं बूझती काजल से।
गाँठ लगाती वह आँचल में
चलता बैंक वह होता।
कुछ पैसा भी मिल जाता था
गहना कभी नहीं खोता।
जब शर्माता किसी बात पर
मुँह ढँककर वहीं छिप जाता।
जब कोई भी उसे बुलाता
मासूम सा बन जाता।
कोई अनजान घर आता
माँ के आँचल में छिपता।
इतना मासूम चेहरे से
सोचता वह नहीं दिखता।
इतनी तरक्की के बाद भी
ढूँढ़ा इसका विकल्प नहीं।
कैसे इसका स्थान भरेगा
जब दिल में संकल्प नहीं।
हे भगवन्! मैं हाथ जोड़कर
आज तुम्हीं से बूझ रही।
आँचल की महिमा को जानें
कोई राह न सूझ रही।
हम इसको कुछ नाम न देंगे
केवल जादुई अहसास।
संस्कारों की मूल धरोहर
मेरी माँ का आँचल खास।

● **पुष्पा शर्मा**
मोदी नगर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९०४५४४३१४१

वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, वर्ष–२०२३–२४
स्वाध्याय आधारित–नैतिक शिक्षा

■ सम्माननीय समस्त सनातन धर्मनिष्ठजन।

■ आर्य समाज द्वारा संचालित विद्यालयों के समस्त सम्माननीय पदाधिकारीगण।

■ ऐसे समस्त सम्माननीय महानुभाव जिनके स्वयं द्वारा संचालित निजी विद्यालय हो।

■ ऐसे समस्त सम्माननीय बन्धुगण जो किसी शासकीय अथवा अशासकीय विद्यालय में सेवारत हो अथवा अपने सम्पर्क के किसी शासकीय–अशासकीय विद्यालय में **'वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता'** करवा सकने में समर्थ हो।

आप सभी महानुभावों से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक आग्रह है कि आर्य समाज रावतभाटा, वाया–कोटा, राजस्थान के द्वारा प्रतिवर्ष वेद प्रचार स्वाध्याय आधारित कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा से समृद्ध कर उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करने के साथ उन्हें सनातन धर्म–संस्कृति का ज्ञान प्रदान कर उनमें धार्मिक, सदाचारी, मातृ–पितृ भक्त आज्ञाकारी गुणों का विकास करने निमित्त **'वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता'** का आयोजन निम्नांकित आधार पर किया जाता है।

● प्रतियोगिता में कक्षा छठी से १२वीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं।

● प्रतियोगिता पंजीयन शुल्क रु. ३० प्रति विद्यार्थी निर्धारित है। जिसमें एक पुस्तक विद्यार्थी को नि:शुल्क हमेशा के लिए प्रदान की जाएगी। उस पुस्तक में प्रस्तुत तथ्यों पर आधारित प्रश्नपत्र भी पुस्तक के साथ दिया जावेगा। प्रश्नपत्र को स्वयं के घर पर पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा हल कर निर्धारित दिनांक को स्थानीय प्रतियोगिता प्रभारी को जमा करना होगा। प्रतियोगिता प्रभारी संकलित प्रश्नपत्रों को आर्य समाज रावतभाटा को भेजेंगे। आर्य समाज रावतभाटा की वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता समिति द्वारा प्रश्नपत्रों का निरीक्षण कर पुरस्कार निर्णय घोषित किये जावेंगें।

● विद्यार्थी से प्राप्त पंजीयन राशि रु. ३० में से स्थानीय प्रतियोगिता प्रभारी को रु. ५ प्रति विद्यार्थी आवश्यक व्यय हेतु रखकर शेष राशि रु. २५ प्रति विद्यार्थी आर्य समाज रावतभाटा को भेजेंगे।

● पुरस्कार विद्यालय स्तर पर कक्षानुसार प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

● प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया जावेगा।

अत: आप सभी से निवेदन है कि विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में सहायक वैदिक शिक्षा के इस सोपान के सहायक बनकर इस अभियान को अपना सहयोग–सम्बल प्रदान कर आधिकाधिक विद्यार्थियों को लाभान्वित कर **'कृणवन्तो विश्वमार्यम्'** की दिशा में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करें। यही विनय है।

सम्पर्क सूत्र एवं निवेदक
ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री : आर्य समाज रावतभाटा एवं सम्पादक : वैदिक संसार
चलभाष : ९४६२५१३७९७

राजनीति

अब राजनेता लुभाने वायदे ऐसे करते हैं।
जैसे स्वयं का ही खर्च कर एहसान करते हैं।
सत्ता में रहकर केवल अपनी पद प्रतिष्ठा और घर भरते हैं।
कई दागी सांसद विधायक अन्य पद पर बैठे हैं।।
अब जनता विचारे हमारे अपने, वोट का महत्व क्या है?
पाँच वर्ष तक पीड़ा सहना, ऐसे दागी भ्रष्ट से दूर रहना है।
देश में प्रजा सुखी हो, समुचित सुख–सुविधा जो जुटाता है।
जो सदाचारी देश प्रेम, कर्मठ, सर्वहितैषी एवं त्यागी है।।
दायित्व समझे जरा न अहंकारी न लोभी है।
ऐसे परोपकारी जनप्रतिनिधि राजनेता जरूरी है।
जो व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र का नवनिर्माणी है।
स्वच्छ प्रशासन सभ्य समाज, स्वस्थ सबल उदारी है।।
नेताओं की हठधर्मी पद का दुरुपयोग, शासन को बपौती समझता है।
देशद्रोही तुष्टीकरण कट्टरता, आतंक बेरोजगारी महँगाई भारी है।
अन्तर्राष्ट्रीय छवि बना सके सबका भला सबका विकास जरूरी है।
मंदिर मस्जिद गिरजाघर गुरुद्वारा, सुरक्षित रहे समान कानून जरूरी है।।
माता बहनें रहें सुरक्षित अच्छी वैदिक शिक्षा भावी पीढ़ी हित जरूरी है।
वर्तमान में भय प्रभाव जबरन गुंडागिरी दबाव से वोट पाते हैं।
ऐसे से रहें सावधान जीने का हक सबको नि:स्वार्थ मत जरूरी है।
देशभक्ति, हर क्षेत्र का विकास,
महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश पर चलना है।।

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

शोक–संवेदना

शोषित–पीड़ित, वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा, उत्थान व उन्नयन हेतु प्राण–प्रण से समर्पित सेवाभावी कर्मयोगी परिवार, सूरत, गुजरात राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है।

इस सुप्रतिष्ठित कर्मयोगी परिवार के ईश्वर भक्त, आध्यात्मिक, सेवाभाव, परोपकार आदि गुणों से परिपूरित कर्मयोगी सदस्य सरलता, सहृदयता की प्रतिमूर्ति श्रीमान जादवभाई जी., सूरत के आकस्मिक् निधन का समाचार पाकर स्तब्ध हूँ।

वैदिक संसार परिवार इन्दौर की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ तथा शोक संतप्त परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति परमपिता परमेश्वर प्रदान करें तदर्थ कामना प्रार्थना करता हूँ। **ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति**

● **सुखदेव शर्मा**
प्रकाशक : वैदिक संसार (मासिक पत्रिका)

नन्दिता शास्त्री को संस्कृतश्री सम्मान

२ नवम्बर को अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन नई दिल्ली द्वारा आयोजित पुरस्कार व सम्मान समारोह में पाणिनि कन्या महाविद्यालय की आचार्या नन्दिता शास्त्री को संस्कृत के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु डॉ. श्रीमती शीला दीक्षित संस्कृतश्री पुरस्कार (१ लाख रु. का चेक) प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अध्यक्ष अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन नई दिल्ली व महासचिव श्री रमाकान्त गोस्वामी द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनिताल के कुलपति प्रो. दीवानसिंह रावत, केन्द्रीय संस्कृत वि.वि. के कुलपति प्रो. श्रीनिवास बरखेड़ी व वरिष्ठ अधिवक्ता श्री के.के. मनन आदि अनेक विशिष्टजनों का सान्निध्य मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि व सारस्वत अतिथि के रूप में उल्लेखनीय रहा।

कर्मयोगी मुनिश्वरानन्द जी को श्रद्धांजलि

पूज्य स्वामी विवेकानंद जी सरस्वती कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ, उत्तर प्रदेश की प्रेरणा और आशीर्वाद से पश्चिम ओडिशा में शिक्षा, सेवा और संस्कृति के उत्थान के लिए नूंआपाली, जिला- बरगड़ ओडिशा में गुरुकुल नवप्रभात आश्रम के संस्थापक त्यागी, तपस्वी तथा कर्मयोगी स्वनामधन्य पूज्य स्वामी मुनिश्वरानंद जी के प्रति दिनांक २२ अक्टूबर २०२३ को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर प्रभात आश्रम के पूज्य स्वामी जी महाराज ने अंतर्जाल के माध्यम से स्वामी मुनिश्वरानंद जी को एक सच्चा कर्मयोगी बताया। दक्षिण अफ्रीका से गुरुकुल के संरक्षक दयानंद शर्मा जी ने स्वामी जी के निधन को एक अपूरणीय क्षति बताया। अमेरिका से श्रीमती सीता दीदी ने स्वामी जी के प्रति गहरी शोक संवेदना जताकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उक्त प्रसंग में आयोजित किए गए शांति यज्ञ में अनेक साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, गुरुकुल के आचार्य, स्नातक, आर्य नर-नारी तथा नवप्रभात गुरुकुल के ब्रह्मचारी, स्वर्ज्योति कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियाँ एवं विद्यायतन के छात्र-छात्राएँ व अध्यापिकाएँ एवं समस्त अंचलवासी उपस्थित थे। स्वामी सोमवेशजी, बाबा गिरजाजी, स्वामी नारदानन्दजी, सुरेश मुनिजी, सचेतस मुनिजी, डॉ. सोमदेव जी शतान्शु, आचार्य दिलीप कुमार जी, विमल आर्यजी, कवींद्र आर्यजी, रामचंद्र नायकजी, वांछानिधि नायकजी, अनेक स्नातक, आचार्य गण तथा अंचलवासी आश्रम के अनेक श्रद्धालुओं ने पश्चिम उड़ीसा के लिए दिए गए उनके अनमोल योगदान को स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। संपूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन आचार्य बृहस्पति जी ने एवं अध्यक्ष भगवानदेव जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। दिवंगत आत्मा को शत-शत नमन करते हुए शांति पाठ के साथ शोक सभा संपन्न हुई।

ग्राम-खारियावास में शरद पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के उपलक्ष्य पर वैदिक गायत्री आरोग्य हवन सम्पन्न

ग्राम-खारियावास, जिला-चुरू राजस्थान स्थित काजला भवन में २८ अक्टूबर २०२३ को शरद पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर वैदिक गायत्री आरोग्य हवन का आयोजन किया गया जिसमें हवलदार रामस्वरूप काजला के सानिध्य में श्रीमती सरबती देवी-रामस्वरूप, उम्मेद जाखड़-राजबाला देवी, सुखवीर-कैलाश देवी, ओमप्रकाश- भतेरीदेवी, नरेन्द्र कुमार सि टी आई-विनोददेवी, पुलिस कांस्टेबल प्रदीपकुमार-संजूदेवी ने सपत्नीक तथा सूबेदार करणसिंह श्योराण, निम्बोदेवी जाखड़, चिड़ियादेवी, मनफूल, जयपाल डूडी, सीतादेवी, सावित्रीदेवी, सरोजदेवी सिलाईच, संदीप, अर्चनादेवी, दिव्यांशी चौधरी, सुमित काजला, नेवी एस एस आर सौरभ काजला, नित्या आदि ने पण्डित मनमोहन शर्मा के आचार्यत्व में वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ आहुतियाँ प्रदान कर सबके आरोग्य व योगक्षेम की मंगलकामनाएँ की। जिला योगप्रचारक एवं स्वदेशी प्रवक्ता योगाचार्य नरेन्द्र भारतीय ने वैदिक वन्दना प्रस्तुत करते हुए महर्षि वाल्मीकि जी के जीवनवृत पर शरद पूर्णिमा की भारतीय वैज्ञानिक प्रामाणिक एवं प्रासंगिकता की महता पर प्रकाश डाला। आयोजक परिवार की ओर से पं मनमोहन शर्मा का पतंजलि अंगवस्त्र ओढ़ाकर व हिन्दवी सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। सभी उपस्थितजनों ने एक दूसरे पर पुष्पवर्षा कर शुभाशीष मंगलकामनाएँ प्रेषित की व प्रसाद ग्रहण किया। अबकी बार शरद पूर्णिमा को रात्रि में चन्द्रग्रहण के कारण आरोग्यवर्धक खीर प्रसाद वितरण दिन में ही वितरित किया गया। जिसका दमा अस्थमा रोग में विशेष आयुर्वेदिक औषधीय महत्व है। योगाचार्य नरेन्द्र भारतीय ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

'कर्मयोगी परिवार', सूरत द्वारा निर्मित १८० वें सरस्वतीधाम : श्रीमती मंजुला बेन अनुभाई तेजाणी छात्रालय के लोकार्पण समारोह की चित्रावली

विस्तृत विवरण पृष्ठ २९ पर

भवन लोकार्पण से पूर्व यज्ञ में आहुति प्रदान करते कर्मयोगी श्री अनुभाई तेजाणी व श्री जसमतभाई वाड़िया सपत्नीक

दीप प्रज्ज्वलन के द्वारा लोकार्पण समारोह का प्रारम्भ करते कर्मयोगी परिवार के सदस्य व गुरुकुल के आचार्य सर्वेशजी

मंचस्थ कर्मयोगी परिवार के सदस्य तथा उपस्थित आर्य जगत् के विद्वत्गण महानुभाव एवं आचार्य सर्वेशजी अपना उद्बोधन देते हुए

कर्मयोगी परिवार प्रमुख श्री केशुभाई गोटी साक्षात्कार में कर्मयोगी परिवार के परोपकारी संकल्पनाओं का विवरण देते हुए

भवन के प्रमुख दाता श्री अनुभाई तेजाणी, जसमतभाई वाड़िया एवं कर्मयोगी परिवार के सदस्य गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ

समारोह अध्यक्ष काशीरामजी अनल का सम्मान करते हुए आचार्य सर्वेशजी

भवन के प्रमुख दाता श्री अनुभाई तेजाणी का भावभीना अभिनन्दन

कर्मयोगी परिवार के समयदानी कर्मयोगियों का भावभीना अभिनन्दन

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

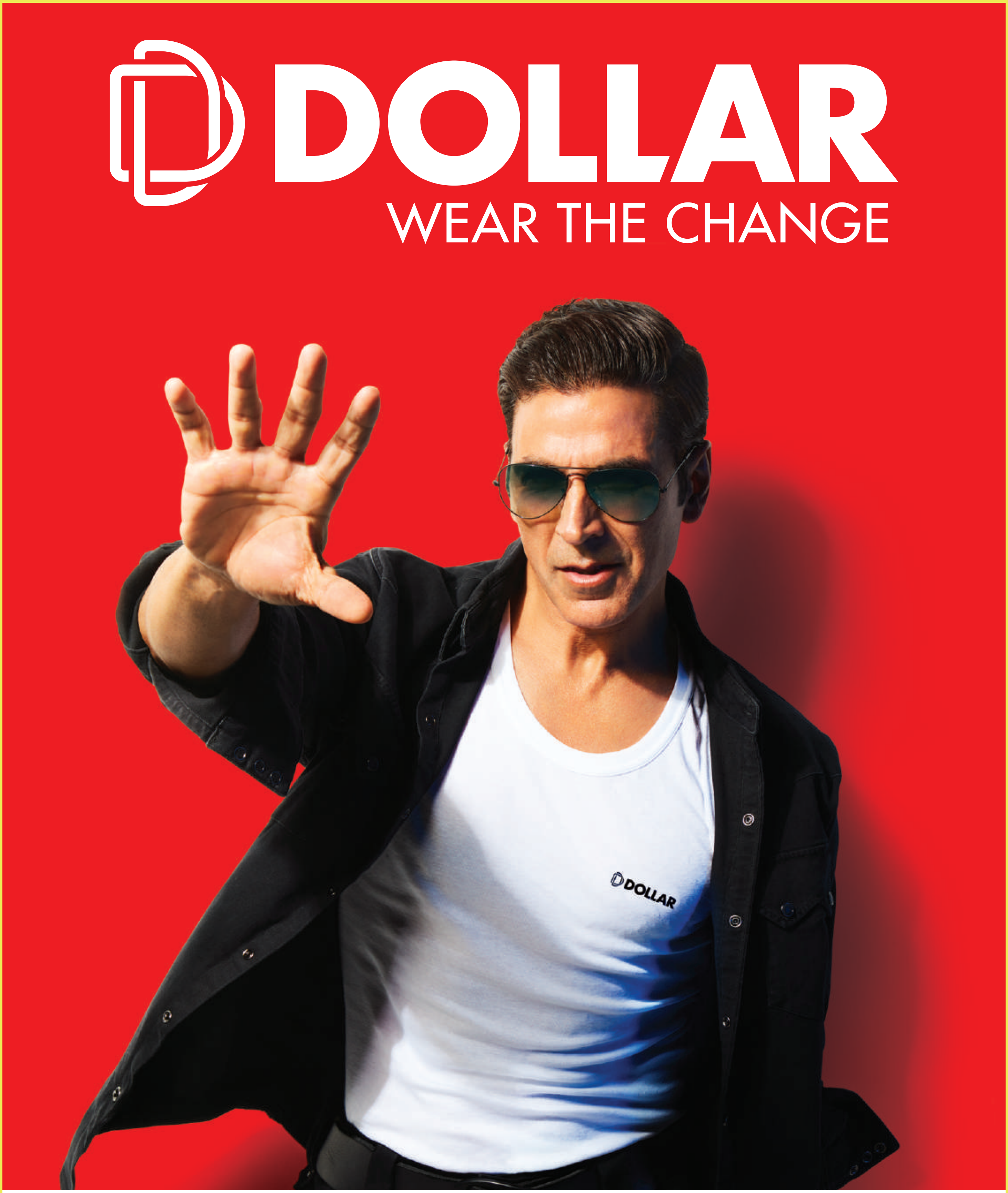

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित